SANSKRIT VAYEKRAN

नव कश्मीर

संस्कृत व्याकरण

मिडल श्रेणियों के लिए

सम्पादक तथा प्रकाशक :

डाइरेक्टोरेट आफ एजुकेशन

प्रबन्धकः —

स्टेशनरी एण्ड प्रिंटिंग डिपार्टमेन्ट

जम्मू एण्ड कश्मीर गवर्नमेन्ट

1965

आठवीं बार

मूल्य :

इस पुस्तक की कुञ्जी बनाना निषिद्ध है।

सम्पादक तथा प्रकाशक :
डाइरेक्टोरेट आफ एजुकेशन

प्रबन्धक :
स्टेशनरी ऐण्ड प्रिंटिंग डिपार्टमेण्ट
जम्मू ऐण्ड कश्मीर गवर्नमेण्ट

मुद्रक :
महेश्वरी दत्त भट्ट
कान्ति प्रेस, जम्मू।

सूची

द्वितीय अध्याय (अजन्त शब्द रूपावली)

तृतीय अध्याय (व्यञ्जनान्त शब्द रूपावली)

चतुर्थ अध्याय

द्वितीय अध्याय

प्रथम खण्ड

प्रथम अध्याय

उपक्रम

प्यास लगने पर हम कहते हैं—'पानी लाओ। इसी तरह अपने से दूर ठहरे हुए सम्बन्धियों को घर की कुशल-क्षेम भेजने के लिए हम पत्र लिखते हैं। दोनों तरह से हम अपने मन के भाव या विचार दूसरों पर प्रकट करते हैं।

भाषा :—अपने मन के भावों या विचारों को दूसरों पर प्रकट करने का एक उत्तम साधन भाषा या बोली है। देश-भेद से भाषाएं सैंकड़ों तरह की हैं।

जैसे—डोगरी, कश्मीरी, हिन्दी, पञ्जाबी और बंगला आदि।

हमारे भारत की भाषा प्राचीन काल में संस्कृत थी। हमारे पूर्वजों को लोक-कल्याण के लिए जो जो बातें मालूम हुईं, वे उन्हों ने अपनी भाषा (संस्कृत) में लिखीं और हमारे लिए रख छोड़ीं।

हिन्दुओं की संस्कृति, सभ्यता और धर्म के मूल-स्रोत वेद हैं। वे भी संस्कृत भाषा में हैं और उन को जाने बिना कोई भी हिन्दू हिन्दू नहीं कहला सकता।

इस लिये हमें संस्कृत भाषा लिखने पढ़ने और बोलने का अवश्य अभ्यास करना चाहिए।

व्याकरण :—किसी भी भाषा का ठीक ठीक लिखना या बोलना उस भाषा के व्याकरण से सीखा जाता है।

अत: "व्याकरण" उस शास्त्र का नाम है जिस से किसी भाषा की शुद्धि-अशुद्धि के नियमों का ज्ञान होता हो। संस्कृत व्याकरण में भी इसी प्रकार संस्कृत भाषा की शुद्धि-अशुद्धि के नियम बताये गये हैं।

'अहं फलं खादामि' (मैं फल खाता हूँ) यह एक वाक्य है, जो कि 'अहं' 'फलं' और 'खादामि'—इन तीनों शब्दों से बना है। इन में से प्रत्येक शब्द अर्थ रखता है. परन्तु बोला हुआ कोई अकेला एक शब्द किसी भी पूर्ण अर्थ को प्रकट नहीं करता।

इस लिए शब्दों के ऐसे समूह को, जिस से कि कोई पूर्ण अर्थ प्रकट हो, ताकि अन्य किसी शब्द की अपेक्षा बाकी न रहे, वाक्य कहते हैं। भाषा का शरीर वाक्यों से तैयार होता है और वे वाक्य शब्दों के जोड़ से बनते हैं।

और शब्द कैसे बनते हैं ?

शब्द अक्षरों से बनते हैं और अक्षर वर्णों से। छोटी से छोटी आवाज़ को वर्ण कहते हैं।

इस लिये इस व्याकरण का आरम्भ वर्णों के वर्णन से ही ता है।

वर्ण-विचार

वर्ण दो प्रकार के होते हैं—(१) स्वर (या अच्) (२) ञ्जन (या हल्)

(१) स्वर

जो वर्ण किसी दूसरे वर्ण की सहायता के विना ही उच्चारण ये जा सकें, या जो वर्ण व्यञ्जनों के उच्चारण करने में यक हों, उन्हें स्वर कहते हैं। संस्कृत वर्ण-माला में १२ स्वर हैं. हैं:—

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ए, ऐ, ओ औ।

इन में से भी, अ, इ, उ और ऋ, ये चार हो मूल स्वर हैं। हस्व (अर्थात् छोटे) स्वर भी कहते हैं। इन को दुगने कर देने दूसरे स्वरों के साथ जोड़ देने से बाकी आठ स्वर बन हैं, जो दीर्घ (अर्थात् लम्बे) स्वर कहलाते हैं। दीर्घ-स्वर —

अ	+	अ	=	आ
इ	+	इ	=	ई
उ	+	उ	=	ऊ
ऋ	+	ऋ	=	ॠ
अ	+	इ	=	ए

अ	+	उ	=	ओ
अ	+	ए	=	ऐ
अ	+	ओ	=	औ

अब आप ने समझ लिया कि क्योंकर इन चार मूल स्
या दूसरे स्वरों को एक दूसरे के साथ जोड़ देने से बाकी
दीर्घ स्वर बन जाते हैं। स्वर जब व्यञ्जनों के साथ मिल
हैं तो स्वरों की लिपि का असली रूप बदल कर कुछ और
हो जाता है, जिसे मात्रा कहा जाता है। परन्तु इन में से
की मात्रा तो अलग नहीं लिखी जाती। बाकी की मा
ये हैं :—

आ	...	=	...	ा
इ	...	=	...	ि
ई	...	=	...	ी
उ	...	=	...	ु
ऊ	...	=	...	ू
ऋ	...	=	...	ृ
ॠ	...	=	...	ॄ
ए	...	=	...	े
ऐ	...	=	...	ै
ओ	...	=	...	ो
औ	...	=	...	ौ
अं	...	=	...	ं
अः	...	=	...	ः

(२) व्यञ्जन

जो वर्ण विना स्वरों की सहायता से बोलने में नहीं आ सकते, व्यञ्जन (या हल्) कहलाते हैं।

वास्तव में प्रत्येक व्यञ्जन का मूल आकार (्) ऐसे चिह्न युक्त होता है और उस आकार में उस का उच्चारण नहीं किया सकता। उच्चारण के लिये उसे किसी न किसी स्वर की हायता अपेक्षित है।

जैसे कि स्वर के वर्णन में बताया गया है कि स्वरों को ओं के आकार में व्यञ्जनों के साथ जोड़ने से व्यञ्जन च्चारण के योग्य हो जाते हैं और उस वक्त उन का (्) यह ह्न नष्ट हो जाता है। तब वे व्यञ्जन स्वरान्त (या अजन्त) हलाते हैं।

व्यञ्जनों की कुल संख्या — २५+४+४+३=३६ है, जिन ार विभाग हैं *।

---

* अध्यापक छटी और सातवीं में—केवल उच्चारण की द्धता का अभ्यास कराएं, पारिभाषिक शब्दों की शिक्षा पर आठवीं ही ज़ोर दें।

(१) वर्ग (या स्पर्श)*
(२) अन्तस्थ (या यण्)
(३) ऊष्म
(४) संयुक्त व्यञ्जन

(१) वर्ग पांच हैं और प्रत्येक वर्ग में ५, ५, वर्ण हैं। वर्ग के पहले वर्ण को वर्ग के साथ बोलने से वह उस नाम बन जाता है—जैसे :—

कवर्ग—क् ख् ग् घ् ङ्
चवर्ग—च् छ् ज् झ् ञ्
टवर्ग—ट् ठ् ड् ढ् ण्
तवर्ग—त् थ् द् ध् न्
पवर्ग—प् फ् ब् भ् म्

(२) अन्तस्थ या यण। इस विभाग में केवल चार वर्ण
य् र् ल् व्

(३) ऊष्म में भी केवल चार वर्ण होते हैं। श् ष् स् ह्

---

*यहां पर 'वर्ग' और स्पर्श' का अर्थ विद्यार्थियों को देना उपयोगी होगा।

वर्ग का अर्थ है—समूह। ५, ५ अक्षरों के ये समूह हैं, लिये उन्हें वर्ग कहा जाता है।

स्पर्श का अर्थ छूना है। इन के उच्चारण में मुख के कि दो भागों को छूना पड़ता है।

संयुक्त व्यञ्जन—

क्ष त्र ज्ञ

ये तीनों दो दो व्यञ्जनों के मेल से बनते हैं—

क्+ष=क्ष

त्+र=त्र

ज्+ञ=ज्ञ

स्मरणीय—यद्यपि संयुक्त अक्षर अनगिनत हैं परन्तु यहां वे हो तीन लिखे गये हैं, जिन के रूप में दो वर्णों का मिलान करने से बिल्कुल ही नई शक्ल आ जाती है।

इन वर्णों के अतिरिक्त संस्कृत वर्णमाला में तीन वर्ण और भी हैं. जो वर्णों में परिगणित नहीं होते क्योंकि वे स्वतन्त्र रूप से अर्थात् अकेले कभी पढ़ने लिखने में नहीं आते। वे ये हैं :—

(१) अनुस्वार—जिस का चिह्न बिन्दु '˙' है। यह स्वरों या मात्राओं के ऊप लिखा जाता है। जैसे 'रामं ब न्दे' इसमें 'म' के ऊपर।

(२) अनुनासिक—जिस का चिह्न चन्द्रबिन्दु '̐' है। यह भी अक्षरों के ऊपर ही रहता है। जैसे—कस्मिँश्चित् में 'स्मि' के ऊपर।

(३) विसर्ग—जिस का चिह्न दो बिन्दु (:) है। यह अक्षरों के अन्त में आता है। जैसे—'बालः' में 'ल' के आगे। स्वर या मात्रा युक्त व्यञ्जन को अक्षर कहते हैं। एक अक्षर में एक ही स्वर या मात्रा होती है पर व्यञ्जन एक से अधिक

ही होते हैं। जैसे—कृष्णं बन्दे जगद्गुरुम् । इस वाक्य में तीन पद हैं। पहले पद में दो अक्षर हैं कृ (क+ऋ) और ष्णं (ष्+ण+अनुस्वार) । इसी तरह अन्य दो पदों में क्रम से दो और चार अक्षर हैं। परन्तु कृष्ण के दो अक्षरों में क्रमशः दो और तीन वर्ण हैं। इसी तरह 'व' में दो, 'न्दे' में तीन, 'ज' में दो, 'ग' में दो, 'द्गु' में तीन और 'रुम्' में तीन वर्ण हैं।

वर्णस्थान

'म' बोलते समय दोनों (होंठ) आपस में मिलाने पड़ते हैं, उन्हें बिना मिलाये 'म' बोला ही नहीं जा सकता। इसी तरह 'च' बोलने के समय जीभ दांतों के पीछे एक स्थान से जिस का नाम तालु है, टकराती है, तब 'च' बोला जा सकता है, उसके विना नहीं। इस प्रकार हर एक वर्ण के बोलने की खास खास जगह है। उन्हीं जगहों को वर्णों का स्थान कहते हैं। वह स्थान कुल 9 हैं। नीचे जिस जिस वर्ण का जो जो स्थान है, दिखलाया जाता है :—

अ, आ, क्, ख्, ग्, घ्, ङ्, ह्, और विसर्ग इनका कण्ठ स्थान है, अतः इन्हें कण्ठ्य' कहते हैं।

इ, ई, च्, छ्, ज्, झ्, ञ्, य्, श् इन का तालु स्थान है, इन्हें 'तालव्य' कहते हैं।

उ, ऊ, प्, फ्, ब्, भ्, म् इन का ओष्ठ स्थान है, इन्हें

'ओष्ठ्य' कहते हैं।

ऋ, ॠ ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, र्, ष् इन का मूर्धा (दांत से पीछे का भाग) स्थान है, अतः ये 'मूर्धन्य' कहलाते हैं।

त्, थ्, द्, ध्, न्, ल्, स् इन का दांत स्थान है। इन्हें 'दन्त्य' कहा जाता है। बर्गों के अन्तिम वर्ण ङ् ञ्, ण्, न्, म् के बोलने में नासिका की भी सहायता लेनी पड़ती है, अतः इनका अपने अपने वर्ग के स्थान के साथ २ नासिका भी स्थान है और इन्हें नासिक्य भो कहा जाता है।

इसी तरह अनुस्वार ' ं ' का भी नासिका स्थान है।

ए ऐ, सन्धि वर्ण हैं। क्योंकि अ+इ से 'ए' बनता है। इसी तरह अ+ए से ऐ' बनता है। इनमें 'अ' कण्ठ स्थान वाला है और 'इ' तालु स्थान वाला है और दोनों के जोड़ से 'ए' बनता है। इसी प्रकार 'अ' 'ए' के जोड़ने से 'ऐ' बनता है, अतः इन दोनों ए और ऐ का स्थान भी मिला जुला कण्ठतालु है और इन्हें 'कण्ठतालव्य' कहते हैं। ओ, औ भी सन्धि वर्ण हैं। अ+उ से 'ओ' बनता है तथा 'अ+ओ' से 'औ'। इन में अ' कण्ठ्य तथा 'उ' ओष्ठ्य है, अतः ओ औ का भी मिला जुला ही स्थान कण्ठ ओष्ठ है और इन्हें कण्ठोष्ठ्य कहते हैं। अन्तस्थ 'व' का दन्तोष्ठ स्थान है और उसे 'दन्तोष्ठ्य' कहा जाता है। इन सब के स्थानों के सुगमता पूर्वक ज्ञान के लिये आगे एक कोष्ठक दिया जाता है।

वर्ण-स्थान-बोधक चक्र	
वर्ण	स्थान
अ आ क् ख् ग् घ् ङ् ह विसर्ग	कण्ठ
इ ई च् छ् ज् झ् ञ् य् श्	तालु
ऋ ॠ ट् ठ् ड् ढ् ण् र् ष्	मूर्धा
त् थ् द् ध् न् ल् स्	दन्त
उ ऊ प् फ् ब् भ् म्	ओष्ठ
ए ऐ	कण्ठतालु
ओ औ	कण्ठोष्ठ
व्	दन्तोष्ठ
ङ् ञ् ण् न् म् अनुस्वार	नासिका

अभ्यास

१. संस्कृत वर्णमाला में कुल कितने वर्ण हैं ? और कौन कौन से हैं ?
२. स्वर किसे कहते हैं ? उस के कौन कौन से भेद हैं ?
३. मूल स्वर और उन की मात्राएं बताइए ?
४. व्यञ्जन में 'अ' मिलाने से क्या परिवर्तन होता है ?
५. ऊष्म, टवर्ग और संयुक्त वर्ण अक्षरों को पृथक २ लिखिए।
६. संस्कृत पढ़ना क्यों आवश्यक है ?
७. इन शब्दों के वर्णों को अलग अलग लिखिए :—

क्षत्रिय, ब्राह्मण, बालक, साधु, सूर्य, स्वास्थ्य, भक्ति, परमात्मा, धर्म, महेश्वर, भूमि।

द्वितीय अध्याय

सन्धि

दो वस्तुओं के परस्पर मिलने को सन्धि कहते हैं यद्यपि इस से लोक में प्रायः अन्तर नहीं आता, परन्तु सँस्कृत भ.षा में इस प्रकार दो वर्णों को जोड़ने से विलक्षण अन्तर आ जाता है। जैसेः—'देशोद्धारक' शब्द में 'देश' और 'उद्धारक' इन दो शब्दों को आपस में मिलाने से 'देश' के 'श' का 'अ और 'उद्धारक' का 'उ'—दोनों का एक विलक्षण परिवर्तन 'ओ हो गया है। अतः संस्कृत व्याकरण में दो वर्णों के परस्पर जुड़ने से दोनों में या किसी एक में जो विशेष परिवर्तन हो जाता है, उसे **सन्धि** कहते हैं। संस्कृत भाषा में सन्धि का बहुत ही महत्त्व है

भेद

सन्धि प्रधानतः **तीन** प्रकार की होती है—(1) स्वर सन्धि (२) व्यञ्जन सन्धि (३) विसर्ग सन्धि।

(१) स्वर सन्धि

दो समान या असमान स्वरों के मिलने से होने वाले

रिवर्तन को **स्वरसन्धि** कहते हैं।

इसके मुख्य मुख्य **पांच** भेद ❀ हैं।

(१) यण्-सन्धि (२) गुण-सन्धि (३) वृद्धि-सन्धि
४) दीर्घसन्धि (५) अयादि सन्धि।

(१) **यणसन्धि**—य् र् ल् व्—यह वर्ण संस्कृत व्याकरण में यण् कहलाते हैं। असमान स्वर परे होने पर इ ई को य्, उ ऊ को व्, ऋ ॠ को र् हो जाता है। इसे **यण्-सन्धि** कहते हैं।

जैसे—यदि+अपि=यद्यपि, (इ+अ=य)।
मधु+आनय=मध्वानय, (उ+आ=वा)।
पितृ+आज्ञा=पित्राज्ञा, (ऋ+आ=रा)।
इसी प्रकार, इति+आदि=इत्यादि, अति+आचार: =अत्याचारः। गांधी+आश्रम:=गांध्याश्रम:, सु+आगत =स्वागत, मातृ+अधीना=मात्रधीन, इत्यादि।

२) **गुण-सन्धि**--अ या आ से परे—इ या ई आने पर दोनों को ए, हो जाता है। उ, ऊ परे होने पर ओ हो जाता है। ऋ परे होने पर अर् हो जाता है। इसे **गुण-सन्धि** कहते हैं।

❀ पारिभाषिक शब्दों पर ज़ोर दिये बिना ही अध्यापक इन न्धियों के रूप सिखा सकते हैं।

जैसे-- राज+इन्द्रः = राजेन्द्रः (अ+इ=ए) । महा+ईश्वरः=महेश्वरः (आ+ई=ए) । सूर्य+उदयः=सूर्योदयः, (अ+उ=ओ) । महा+उदयः=महोदयः (आ+उ=ओ) । देव+ऋषिः=देवर्षिः, (अ+ऋ=अर्) । इसी प्रकार, देव+इन्द्रः=देवेन्द्रः, नर+ईशः=नरेशः, देश+उद्धारः=देशोद्धारः, महा+उदधि=महोदधिः राज+ऋषि=राजर्षिः, महा+ऋषिः=महर्षिः— इत्यादि भी गुणसन्धि के उदाहरण हैं।

(३) *वृद्धि-सन्धि—अ वा आ से परे ए अथवा ऐ आने पर दोनों के स्थान में ऐ हो जाता है और इसी प्रकार अ व आ से परे ओ अथवा औ आने पर दोनों को मिला कर औ हो जाता है। इसे **बृद्धि सन्धि** कहते हैं। जैसे :—

इह+एव=इहैव । सदा+एव=सदैव । जन+ऐक्यम्=जनैक्यम् । महा+ऐश्वर्यम्=महैश्वर्यम् । गुड+ओदनः=गुडौदनः । महा+ओषधिः=महौषधिः । परम+औदासीन्यम्=परमौदासीन्यम् । यथा+औचित्यम्=यथौचित्यम् ।

---

*कहीं कहीं अ से परे ऋ आने पर दोनों को आर् हो जाता है. इसे भी वृद्धि-सन्धि कहते हैं, जैसे :—प्र+ऋच्छति=प्रार्च्छति । परन्तु इसका प्रयोग बहुत कम आता है।

(४) **दीर्घसन्धि**—दो समान या असमान एक जाति *के स्वर एक साथ आने पर दोनों को मिलाकर उसी जाति का दीर्घ स्वर हो जाता है, इसे **दीर्घ सन्धि** कहते हैं। (चाहे वे दोनों या दोनों में से एक, पहले से ही दीर्घ क्यों न हो) जैसे:— अ+अ=आ, स्व+अर्थ:=स्वार्थः। अ+आ=आ, परम+आत्मा=परमात्मा आ+अ=आ, विद्या+अर्थी=विद्यार्थी। आ+आ=आ, महा+आत्मा =महात्मा। इ+इ=ई, कवि+इन्द्र:=कवीन्द्र:। इ+ई=ई, कवि+ईश्वर:=कवीश्वर:। ई+इ=ई, मही+इन्द्र:=महीन्द्र:। ई+ई=ई, श्री+ईश:=श्रीशः। उ+उ=ऊ, सु+उक्ति=सूक्तिः। उ+ऊ=ऊ, आशु+उर्ध्वम्=आशूर्ध्वम्। ऊ+उ=ऊ, वधू+उपकार: वधुपकारा:। ऊ+ऊ=ऊ, भू+ऊषरा=भूषरा।

स्मरणीय—इसी तरह ऋ से ऋ परे होने पर दोनों को दीर्घ हो सकता है, जैसे:—होतृ+ऋकार=होतॄकार, ऋ+ऋ=ॠ। परन्तु इस के उदाहरण प्रयोग में कम ही आते हैं।

---

*ह्रस्व अ और दीर्घ आ एक ही जाति के माने जाते हैं। इसी तरह, इ और ई, उ और ऊ, ऋ और ॠ एक ही जाति के होते हैं।

(५) **अयादि-सन्धि**—कोई भी स्वर परे आने पर ए को अय्, ऐ को आय्, ओ को अव् और औ को आव् हो जाता है. इसे **अयादि-सन्धि** कहा जाता है। जैसे:—

हरे+इह=हरयिह। विष्णो+इह=विष्णविह। नै+अकः =नायकः। गुरौ+उत्सुकः=गुरावुत्सुकः।

स्मरणीय—(१) द्विवचन के ई, ऊ, ए के स्थान में और अमी अथवा अमू के ई, ऊ के स्थान में कभी कोई सन्धि नहीं होती जैसे :— मुनी एतौ। गुरू इमौ। बाले इमे। अमी अत्र। अमू अत्र।

(२) यदि पहले पद के अन्त में 'अ' अथवा 'ओ' हो और इसके परे ह्रस्व 'अ' हो तो अयादि सन्धि नहीं होती, अपितु परे का ह्रस्व अ ही उड़ जाता है और उस की पहचान के लिये ए, ओ के बाद (ऽ) ऐसा चिह्न लगाया जाता है। जैसे :—

हरे+अव=हरेऽव को+अत्र=कोऽत्र।

(३) स्वर-सन्धियों में और भी कुछ सन्धियां होती हैं जो अप्रसिद्ध और अनावश्यक होने के कारण नहीं लिखी गई।

अभ्यास

सन्धिच्छेद कीजिए :—

प्रतीक्षा। महाशयः। महीशः। नरेन्द्रः। चन्द्रोदयः।

वध्वागमनम्। जनौघः। श्रियायाकांक्षा। दयानन्दः। दध्यत्र। परमेश्वरः।

सन्धि कीजिए :—

दिल्ली+ईश्वरः। लता+इव। सती+आगता। वन+औषधिः। गो+आनयनम्। मधु+आनय। नर+ईश।

व्यञ्जन सन्धि

दो व्यञ्जनों के संयोग से दो व्यञ्जनों में या एक व्यञ्जन में कुछ विकार हो जाता है। कभी कभी स्वर परे होने पर भी व्यञ्जन में कुछ विकार हो जाता है। कहीं कहीं किसी भी व्यञ्जन को विकार न होकर स्वर और व्यञ्जन के बीच में एक नया ही व्यञ्जन आ जाता है। इस प्रकार व्यञ्जन के विकार को **व्यञ्जन सन्धि** कहते हैं। व्यञ्जनों का ही दूसरा नाम हल् है, इस लिये व्यञ्जन-सन्धि को **हल् सन्धि** भी कहते हैं।

इस के कई भेद हैं, परन्तु मुख्य मुख्य यहां बतलाये जाते हैं।

(१) क्, च्, ट्, त्, प् को स्वर, अन्तस्थ, अथवा किसी भी वर्ग का तीसरा, चौथा अक्षर परे आने पर अपने अपने वर्ग का तीसरा अक्षर हो जाता है, जैसे:—

(क) स्वर परे होने पर :— प्राक्+उक्तम्=प्रागुक्तम्। अच्+अन्तः=अजन्तः। विराट्+अयम्=विरडयम्,

तत्+इच्छति=तदिच्छति। ककुप्+ईश.=ककुबीशः।

(ख) अंतस्थ या ह परे होने पर :—

सुवाक्+याति=सुवाग्याति। अच्+रहितः=अज्रहितः। सम्राट्+लक्षितः=सम्राड्लक्षितः। जगत्+विजयी=जगद् विजयी। अप्+लाभः+अब्लाभः।

(ग) तीसरा या चौथा अक्षर परे होने पर :—

दिक्+गजः=दिग्गजः। तत्+भाति=तद्भाति।

2) क् च् ट् त् प् के परे ह के आने पर ह को पहले वर्ण के वर्ग का चौथा अक्षर हो जाता है और पहले अक्षर को अपने वर्ग का तीसरा अक्षर हो जाता है। जैसे :—

प्राक्+हसति=प्राग्घसति। तत्+हितम्=तद्धितम् इत्यादि।

(3) पद के अन्त में आये 'म्' को व्यञ्जन परे होने पर अनुस्वार होता है। जैसे—देशम्=रक्षति=देशं रक्षति।

(4) (क) अनुस्वार से परे किसी भी वर्ग का पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा अक्षर होने पर अनुस्वार को आगे आने वाले वर्ण के वर्ग का पांचवां अक्षर हो जाता है।

जैसे—व्यायामं+कुरु=व्यायाङ्कुरु। देश+भज=देशम्भज।

स्मरणीय—एक ही पद के भीतर अनुस्वार अशुद्ध होता है। जैसे—गंगा, कंठ, पंडित, कांति। इन के स्थान में गङ्गा, कण्ठ पण्डित, कान्ति, इसी प्रकार शुद्ध होता है।

(5) त् अथवा न् से ल परे होने पर त् या न् को भी ल् जाता है। जैसे—तत्+लाभः=तल्लाभः। परन्तु में न् को अनुनासिक ल् (लँ) होता है। जैसे महान्+ल =महालँ लोभः।

(6) म या न के परे होने पर पहले के व्यञ्जन को अपने का पांचवां अक्षर विकल्प से होता है।

जैसे—उत्+मत्तः=उन्मत्तः । प्राक्+नमति=प्र नमति।

(7) स् से श अथवा चवर्ग परे हो तो 'स्' को 'श्' हो जा है। जैसे—रामस्+शेते=रामश्शेते । हरिस्+चक =हरिश्चकार। इसी प्रकार तवर्ग से परे श या च होने पर तवर्ग को चवर्ग हो जाता है। जैसे—तत् शक्नोति=तच्शक्नोति । तत्+चित्रम्=तच्चित्रम्
स्मरणीय—इन दोनों प्रकार की सन्धियों का एक ही ना **श्चुत्व संधि है।**

(8) **छत्व संधि**—तवर्ग से परे श को छ् हो जाता है औ इस से पूर्व तवर्ग को साथ ही चवर्ग हो जाता है। जैसे: अस्मत्+शत्रुः=अस्मच्छत्रुः। तत्+श्रुत्वा=तच्छ्रुत्वा।

(9) (क) स् से ष् अथवा टवर्ग परे होने पर स् को ष् होत है। जैसे ग्रामस्+षष्ठः=ग्रामष्षष्ठः। देवस्+टीक =देवष्टीकते।

(ख) तवर्ग से परे टवर्ग आने पर तवर्ग को भी (संख्या क्रम से

टवर्ग हो जाता है। जैसे—तत्+टीका=तट्टीका। उद्+डीयते=उड्डीयते।

(10) ह्रस्व स्वर से अथवा पदान्त में दीर्घ स्वर से परे छ आने पर छ से पूर्व च् आ जाता है। जैसे—वृक्ष+छाया=वृक्षच्छाया। लता+छाया=लताच्छाया।

स्मरणीय—ह्रस्व स्वर से परे छ आने पर अवश्य और दीर्घ स्वर से परे छ आने पर अपनी इच्छा से छ से पूर्व च् जोड़ा जायेगा।

(11) ह्रस्व स्वर से परे न् हो और उस से परे कोई भी स्वर हो तो न् को द्वित्व हो जाता है। जैसे—पठन्+आसते=पठन्नासते।

(12) पद के अन्त के न् को च्, छ्, ट्, ठ्, त्, थ् परे होने पर अनुस्वार अथवा अनुनासिक हो जाता है और क्रम से च्, छ् से पूर्व नया श् और ट्, ठ् से पूर्व नया ष् तथा त् थ् से पूर्व नया स् आ जाता है। जैसे—तान्+चतुरान्=तांश्चतुरान् अथवा ताँश्चतुरान्। सुचरितान्+छात्रान्=सुचरितांश्छात्रान् अथवा सुचरिताँश्छात्रान्। महान्+टङ्कारः=महांष्टङ्कारः अथवा महाँष्टङ्कारः।

(13) व्यञ्जन र् से र् परे होने पर पहले र् का लोप होता है और उससे पूर्व स्वर को दीर्घ होता है। जैसे निर्+रसम्=नीरसम्। अन्तर्+राष्ट्रम्=अन्ताराष्ट्रम्। विधुर्+राजते=विधूराजते।

स्मरणीय–ह्रस्व अ से परे प्रायः अव्ययों के र् का लोप होता है।

णत्व विधान

(13) (क)—र् ष् अथवा ऋ ॠ से परे एक ही पद में यदि आ जाये और बोच में किसो भी अक्षर का व्यवधा (अन्तर) न हो तो न् को ण–ण् हो जाता है। जैसे-चतुर् +नाम=चतुर्णाम्। कृष्+नः=कृष्णः। ऋ+न =ऋणम्।

(ख) र् ष् ऋ ॠ इन के आगे और न के बीच यदि को स्वरवर्ण कवर्गीय वर्ण, पवर्गीय वर्ण, अनुस्वार अथ य् व् ह् इन में से कोई वर्ण बैठा भी हो या मिल कर इन से दो तीन वर्ण बैठे भी हों तब भी न् को ण हो जात है। जैसे—रामेण। वर्ष्मणा। ब्रह्मण्यम्। कार्पण्यम् रुग्णः। वृष्णः।

स्मरणीय—(क) पद के अन्त के न को ण् नहीं होता जैसे—रामान्, नरान् नृृन्, पितॄन्।

(ख) र् ष् या ऋ ॠ पहले पद में हो और न दूसरे पद में हो तो भी न् को ण् नहीं होगा। जैसे राम+नाम =रामनाम। पुरुष+नायक:=पुरुषनायक:।

(ग) चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, ल, श, स इन में से किसी वर्ण का व्यवधान (अन्तर) होने पर न् को ण् नहीं होगा। जैसे—कर्त्तनम, अर्चना, रसेन।

षत्व विधान

(14) आकार से अतिरिक्त कोई स्वर, य्, र, ल्, व्, ह्,

और कवर्ग से परे प्रत्यय के स् को ष् हो जाता है।
जैसे—हरि+सु=हरिषु। रामे+सु=रामेषु। चतुर+सु =चतुर्षु।

अभ्यास

१) **सन्धिच्छेद कीजिए :—**

तदस्मि, मनागिदम्, प्राग्भारः, जगदीशः, परिव्राडयम्, विद्वद्दया, सम्पद्धर्षः, मातरम्बन्दे, फलम्भक्षयति, तन्मयम्, अवाङ्मुखः, सञ्चरति; विद्युच्छक्तिः; विपच्चक्रम्; विपच्छाया; देवष्षोडशः; धनुष्टङ्कारः, उड्डीनः, राजच्छत्रम्, जगन्नाथः, कस्मिश्चित्, विद्वच्छासकः, बलवांष्ठङ्कः, गच्छंस्तीर्णः, अरीराजा, तदपि, तदापि, तदिव, तदेव, तदैव।

२) **सन्धि कीजिए :--**

वाक्+इयम्, तत्+इदम्, सम्यक्+उक्तम, पतत्+इदम्, सम्राट्+अग्रे, विद्वत्+दर्शनम्, नृत्यत्+हस्तो, रामम्+सेवते, देवं+भजते, तत्+मात्रम्, प्राक्+मुखः, देवस्+शक्तः, पुनस्+चिरम्, विपत्+शोधनम्, सम्पत्+चारः, भवत्+शरणम् तमस्+टंकणम्, तस्य+छेकः, गच्छत्+अस्ति, तान्+चकार, पतिर्+राजा, विद्वान्+तस्मै, शास्त्रा+नि, देवे+सु, वि+समम्।

विसर्ग सन्धि

किसी वर्ण के पीछे आने वाले दो बिन्दुओं को विसर्ग कहते हैं। इन बिन्दुओं के स्थान में किसी स्वर या व्यञ्जन के

संयोग से जो विकार होता है, वह **विसर्ग सन्धि** कहलाता है। के मुख्य **चार** भेद हैं :—

(१) ओत्व सन्धि (२) लोप सन्धि (३) ऊष्म सन्धि (४) रेफ सन्धि।

(१) ओत्व सन्धि के दो प्रकार हैं।

(क) विसर्ग के आगे पीछे ह्रस्व 'अ' आने पर विसर्ग 'ओ' हो जाता है और आगे पीछे के दोनों 'अ' उड़ जाते जैसे—जवाहरलालः+अवदत्=जवाहरलालोऽवदत्। सः+अत्र सोऽत्र। पटेलः+अयम्=पटेलोऽयम्॥

स्मरणीय—इस सन्धि में लुप्त हुए परले 'अ' की स्मृति लिये (ऽ) ऐसा चिह्न उसके स्थान में लगा देने का क्रम है, अत्यन्त आवश्यक नहीं।

(ख) पूर्व ह्रस्व 'अ' हो और आगे किसी भी वर्ग के तीस चौथे, पांचवें अक्षर अथवा य्, र्, ल्, व् ह् आएं तो बीच के विस को 'ओ' हो जाता है। जैसे—राजेन्द्रः+भाषते=राजेन्द्रो भाषते मालवीयः+ययौ=मालवीयो ययौ। सीतारामः+हसति=सीताराम हसति।

स्मरणीय—सदा ह्रस्व 'अ' से परे के विसर्ग को ही 'ओ होता है।

(२) लोप सन्धि—

(क) ह्रस्व अ से परे भिन्न स्वर आने पर और दीर्घ आ से परे कोई भी स्वर या वर्गों के तीसरे, चौथे, पांचवें वर्ण तथा य्, र्, ल् व्, ह् आने पर बीच के विसर्ग का लोप

जाता है, जैसे—शंकरदेवः+आयाति=शंकरदेव आयाति।
न्द्रः+इह=रवीन्द्र इह। नराः+आयान्ति=नरा आयान्ति।
ः+गच्छन्ति=जना गच्छन्ति। पण्डिताः+यान्ति=पण्डिता
त।

स्मरणीय—यह लोप स् के विसर्ग का होता है। र् के
ं को कोई भी वर्ण परे आने पर प्रायः फिर र् ही हो
है। जैसे :—

प्रातः+आयाति+प्रातरायाति। पुनः+गच्छति=पुनर्गच्छति।
(ख) सः और एषः के विसर्ग का भी व्यञ्जन परे आने
दा लोप हो जाता है। जैसे—सः+रमते=स रमते। एषः+
त=एष गच्छति।

(३) ऊष्म सन्धि :—

विसर्ग को च, छ, श परे आने पर श् हो जाता है।
विसर्ग को ट, ठ, ष, परे आने पर ष् हो जाता है।
विसर्ग को त, थ, स परे आने पर स् हो जाता है।
इसको ऊष्म सन्धि कहते हैं। जैसे :—

चतुरः=लोकश्चतुरः। पण्डितः+टीकते=पण्डितष्टीकते।
तरति=मृगस्तरति। रोगः+शत्रुः=रोगश्शत्रु। अनित्यः+
=अनित्यस्संसारः।

स्मरणीय—श, ष, स परे आने पर विसर्ग को श् ष् स्
से होता है।

(४) रेफ सन्धि—

'अ', 'आ' से भिन्न किसी भी स्वर से परे विसर्ग र
हो जाता है। यदि परे वर्गों के तीसरे, चौथे, पांचवें व
अथवा य, र, ल, व और ह हों।

जैसे—कविः+आयाति=कविरायाति, शम्भुः+गच्छति
शम्भुर्गच्छति।

स्मरणीय—क; ख; प; फ; परे होने पर सदा विसर्ग
रहते हैं। उन्हें कोई विकार नहीं होता।

अभ्यास

(१) सन्धिच्छेद कीजिए :—

रामोऽत्र; देवोऽयम्; धर्मो विजयते; पुनश्च; सुन्दरोजन; र
आशङ्क्रते; जवाहर आद्रियते; राजपुत्रा इमे, बाला गच्छन्ति
देशभक्ता विजयन्ते; स वदति; एष राजा; इतस्त
प्रायश्चित्तम्; हरिश्शङ्करोतु; देवस्सर्वतः; देवस्तीर्णः। हरि
यति। प्रभुराज्ञापयति। मनोरथः; मनोहरः; मनोविनो
यशोदा।

(२) सन्धि कीजिए—

जनः+असौ, देशभक्तः+अयम् राघवेन्द्रः+युध्य
सुभाषः+व्यजयत; बालाः+आगच्छन्ति; कन्यकाः+इमा
देवाः+उपरि; पण्डिताः+विदन्ति; सः+हसति; एषः
देवः; प्रभोः+शरणम्: प्रणामाः+सन्तु; रामः+तनोति
प्रभुः+वदति। तैः+अपि; निः+रसः; दुः+कर; दुः
गमः; निः+मलः, निः+चलः, दुः+तरः, निः+बल

भानु:+जीवयति, शत्रु:+चलति ।

(३) **शुद्ध कीजिए :**—रामो करोति, शङ्करो पठति, पितरो आगच्छन्ति, गृहारिमे' मनुष्यार्गच्छन्ति, सो पठति, एषो नमति ।

द्वितीय खण्ड

प्रथम अध्याय

शब्द परिचय

जो सुनने में आये, उसे ध्वनि कहते हैं। बोलने की भाषा ऐसी बहुत सी ध्वनियों के मेल से ही बनती है। बोलने में जिन २ मूल-ध्वनियों का उच्चारण होता है, लिखने में उन २ का परिचय कराने के लिये कुछ चिह्न या संकेत नियत हैं, जिन्हें वर्ण या अक्षर कहते हैं। ऐसी ही एक या अनेक ध्वनियों के अथवा वर्णों के मेल से जो रूप बन जाता है वह "शब्द" कहलाता है। जैसे—'राम' शब्द र्, आ, म्, अ इन चार मूल-ध्वनियों या वर्णों के मेल से बना है।

ये शब्द दो प्रकार के होते हैं :—

(१) सार्थक शब्द। (२) निरर्थक शब्द।

(१) कश्मीर, जम्मू, दिल्ली, जवाहर आदि का कुछ अर्थ है, अतः ये **सार्थक** शब्द हैं।

(२) बिल्ली की म्याऊं म्याऊं या कौवे के कांव कांव का कुछ अर्थ नहीं है, अतः ऐसे शब्द **निरर्थक** शब्द हैं।

व्याकरण का विषय सार्थक शब्द ही होते हैं, अतः इस व्याकरण में भी 'सार्थक शब्द' का ही वर्णन किया जायेगा।

संस्कृत भाषा के मुख्य शब्द **तीन** ही प्रकार के हैं :—

(१) सुबन्त। (२) तिङन्त। (३) अव्यय।

तिङन्त और अव्यय का वर्णन आगे किया जायेगा। अभी सुबन्त शब्दों के रूप बताए जाते हैं।

सुबन्त प्रकरण

सुबन्त शब्द **तीन** प्रकार के होते हैं। **संज्ञा, सर्वनाम** और **विशेषण।**

जवाहर लाल, गोपाल स्वामी, इन्द्रप्रस्थ, कश्मीर, ये किसी के नाम हैं। ऐसे शब्द जो किसी का नाम हों, संज्ञा शब्द होते हैं, अर्थात् जिस शब्द से किसी वस्तु, व्यक्ति या जगह का बोध हो, उसे **संज्ञा** कहते हैं।

हम, तुम, वह आदि के वाचक अस्मद्, युष्मद्, तद् आदि शब्दों को **सर्वनाम** कहते हैं। इनका वर्णन आगे आएगा। गुण, कर्म आदि के बाचक रक्तः, पीतः, मधुरः, मूर्खः, चञ्चलः, आदि शब्द **विशेषण** कहलाते हैं। इनका भी सविस्तार वर्णन आगे किया जाएगा।

विशेषण शब्दों के साथ कुछ और ध्वनि या ध्वनियां जोड़ने पर और उन शब्दों में कुछ विकार आने पर एक नए प्रकार के संज्ञा शब्द बन जाते हैं। इनको **भाव वाचक संज्ञा** शब्द कहते हैं। जैसे स्वतन्त्रस्य भावः=स्वातन्त्र्यम्। मधुरस्य भावः=माधुर्यम्, सरलस्य भावः=सरलता। मूर्खस्य भावः= मूर्खत्वम्। लघोः भावः=लघिमा। इत्यादि।

अभ्यास

(१) शब्द किसे कहते हैं ?

(२) शब्द कितने तरह के होते हैं ?

(३) संस्कृत में शब्द के मुख्य भेद कितने हैं ?

(४) भाववाचक संज्ञा किसे कहते हैं ?

लिंग

कृष्णः (गीता का उपदेशक, अर्जुन का मित्र), कृष्णा (द्रौपदी, पाण्डवों की भार्या), कृष्णं वस्त्रम् (काला कपड़ा) इन तीन स्थानों में एक ही कृष्ण शब्द के तीन भिन्न रूप हो गये हैं। पहले रूप में यह शब्द एक पुरुष को जतलाता है, दूसरे रूप में एक स्त्री को और तीसरे रूप में एक ऐसी चीज़ को जो न तो पुरुष है न स्त्री। पुरुष स्त्री या उन दोनों से विलक्षण किसी चीज को कहने के कारण ही एक कृष्ण शब्द के तीन अलग २ रूप हो गये हैं।

जब कोई शब्द पुरुष को जतलाए तब उस के उस रूप को **पुँल्लिङ्ग** कहते हैं, जब किसी स्त्री को जतलाए तब उसे **स्त्रीलिङ्ग** कहते हैं और जब दोनों से अलग किसी चीज को जतलाए तो उसे **नपुँसक लिङ्ग** कहते हैं।

संस्कृत भाषा का हर एक शब्द (अव्यय और तिङन्तों के बिना) किसी न किसी लिङ्ग में अवश्य रहता है और उस २ लिङ्ग के अनुसार उस के रूपों में बहुत परिवर्तन हो जाता है। परन्तु संस्कृत भाषा के बहुत से शब्दों में लिङ्ग की पहिचान के लिए ऊपर लिखे लक्षण पूरे नहीं उतरते। इस भाषा में एक शब्द स्त्रीवाचक होने पर भी **पुँल्लिङ्ग** अथवा **नपुंसकलिङ्ग** हो जाता है।

जैसे—'दार' शब्द स्त्री वाचक होने पर भी पुँल्लिङ्ग और 'कलत्र' शब्द नपुंसकलिङ्ग माना जाता है।

अतः संस्कृत भाषा में लिङ्ग का निश्चय करने के लिए कोई निश्चित नियम नहीं है। प्रयोग के अनुसार ही शब्द के लिङ्ग का निश्चय कर लेना पड़ता है। क्योंकि शब्द अपने प्रयोग सम्बन्धी स्वभाव से ही विशेष लिङ्ग का होता है।

विभक्ति

'वृक्षौ फलतः' (दो वृक्ष फलते हैं) इस वाक्य में 'वृक्ष' नाम और 'फल' धातु है। 'वृक्ष' नाम से परे 'औ' और 'फल' धातु से परे 'तः' आ गया है। ये दोनों विभक्तियां हैं। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय इन सब को प्रातिपदिक कहते हैं। इन प्रातिपदिकों के परे और धातु से परे जो औ, तः आदि शब्दांश आ जाते हैं, उन्हीं का नाम **विभक्ति** है।

विभक्तियां **सुप्** और **तिङ्** नाम से **दो** तरह की होती

हैं । संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण, इन तीनों तरह के प्राति· पदिकों से परे जो विभक्तियां आती हैं, उन्हें 'सुप्' विभक्तिया कहते हैं और धातु से परे जो विभक्तियां आती हैं, वे तिङ् विभक्तियां कहलाती हैं। तिङ् विभक्तियों का आगे वर्णन किया जायेगा। 'सुप्' विभक्तियां **आठ** प्रकार की हैं। जैसे:—

१ प्रथमा २ द्वितीया ३ तृतीया ४ चतुर्थी
५ पञ्चमी ६ षष्ठी ७ सप्तमी ८ सम्बोधन

वचन='नर' (एक मनुष्य) 'नरौ' (दो मनुष्य) 'नराः' (बहुत से मनुष्य)—यहां एक ही 'नर' शब्द अलग २ रूपों में हो कर एक दो या बहुत मनुष्यों को जतलाता है। इस तरह जिस रूप में शब्द एक, दो या बहुत को जतलावे उसे **वचन** कहते हैं। एक को जतलाने वाला **एक वचन,** दो को जतलाने वाला **द्विवचन** और बहुतों को जतलाने वाला **बहुवचन** होता है।

१. संस्कृत भाषा में भी शब्द बिना विभक्ति के बोला या लिखा नहीं जाता। इसलिए अव्ययों के बाद भी विभक्ति अवश्य लानी पड़ती है, परन्तु बाद में उस का लोप या लुक् हो जाता है । अतः अव्यय भी वस्तुतः सुबन्तों ही के भीतर गिने जा सकते हैं। इस तरह वस्तुतः संस्कृत शब्द **दो** ही प्रकार के हैं। (१) **सुबन्त** और (२) **तिङन्त** । और भी कई शब्दों के बाद विभक्ति का लोप हो जाता

है। जैसे—राजा, दधि, मधु, बाला।

२. सम्बोधन को प्रथमा विभक्ति की ही एक किस्म होने पर भी सुविधा के विचार से अलग गिना गया है।

प्रथमा द्वितीया आदि सभी विभक्तियों में ये तीनों वचन होते हैं। इस प्रकार सभी विभक्तियों के तीन भेद हो जाते हैं ❀।

विभक्तियों के मूल रूप अर्थ

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	अर्थ
प्रथमा	स्	औ	अस्	० ० ०
द्वितीया	अम्	औ	अस	को
तृतीया	आ	भ्याम्	भिस्	से, द्वारा
चतुर्थी	ए	भ्याम्	भ्यस्	को, के लिए, वास्ते
पञ्चमी	अस्	भ्याम्	भ्यस्	से
षष्ठी	अस्	ओस्	आम्	का, के, की
सप्तमी	इ	ओस्	सु	में, पर
सम्बोधन	स्	औ	अस्	हे, रे (ये शब्द के पूर्व लगते हैं)

❀ अध्यापकों से निवेदन है कि उदाहरणों द्वारा ही विभक्तियों का बोध कराएं, केवल विभक्तियों का शिक्षण न करें।

स्मर्तव्य—ये विभक्तियों के मूल (स्थूल) हैं। लिङ्ग के अनुसार या शब्द के अनुसार इन में परिवर्तन भी हो जाता है। जो समय समय पर बताया जाएगा।

कारक

'देव ! रामः धर्माय हस्तेन विप्राय यज्ञे गृहात् स्वां गां ददाति' (हे देव ! राम धर्म के लिए हाथ से ब्राह्मण को यज्ञ में घर से अपनी गौ दे रहा है)

ऊपर के वाक्य में "ददाति" क्रिया है, जिस का अर्थ "देता है" है और बाकी सभी शब्दों का इसी से सम्बन्ध है। जैसे कौन देता है ? रामः—(कर्त्ता)। किस से देता है ? हाथ से (करण)। किस को देता है ? ब्राह्मण को (सम्प्रदान)। किस के लिए देता है ? धर्म के लिए (सम्प्रदान) किस में देता है ? यज्ञ में (अधिकरण)। कहां से देता है ? घर से (अपादान)। क्या देता है ? गौ (कर्म)।

इस प्रकार जिन शब्दों का अपने अर्थ द्वारा क्रिया के साथ सम्बन्ध हो, अथवा जो शब्द क्रिया को जिज्ञासा या प्रश्न को पूरा करें, उन्हें 'कारक' कहते हैं। इन का विभक्तियों के साथ गहरा सम्बन्ध है, अतः विभक्तियों के साथ साथ इन का जानना ज़रूरी है।

कारक छः होते हैं ! १ कर्ता, २ कर्म, ३ करण, ४ सम्प्रदान, ५ अपादान, ६ अधिकरण।

१ कर्ता—जो किसी काम को करे। ऊपर के वाक्य में राम दे रहा है, अतः वह कर्ता है। **कर्ता में प्रायः प्रथमा विभक्ति आती है।**

कर्म—काम के द्वारा जिसे किया जाये अर्थात् जिस पर क्रिया का असर हो, या जिस पर क्रिया का फल पड़े। गौ दी गई, उस पर 'देना' क्रिया का असर पड़ा, अतः वह (गौ) कर्म कारक है। **कर्म कारक में प्रायः द्वितीया विभक्ति आती है।**

३ **करण**—जिसके द्वारा क्रिया की जाए अर्थात् जो क्रिया का साधन हो। हाथ से गौ दी गई, अतः हाथ करण कारक है। **करण कारक में तृतीया विभक्ति आती है।**

४ **सम्प्रदान**—जिसको कोई चीज़ दी जाये। ब्राह्मण को गौ दी गई, अतः 'ब्राह्मण' सम्प्रदान कारक है। जिसके लिये काम किया जाए उसे भी सम्प्रदान कहते हैं। जैसे 'धर्माय' सम्प्रदान कारक है। **सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति आती है।**

५ **अपादान**—जिससे कोई भी चीज़ अलग हो। घर से गौ अलग हुई, अतः घर 'अपादान' कारक है। **इस में पंचमी विभक्ति आती है।**

६ **अधिकरण**—जिस में (जहां) क्रिया की जाए। यज्ञ में गौ दी गई, अतः यज्ञ 'अधिकरण' कारक है। **इस में सप्तमी विभक्ति आती है।**

इस प्रकार ६ विभक्तियां ऊपर लिखे अनुसार ६ कारकों में होती हैं। षष्ठी विभक्ति दो चीज़ों का आपस में सम्बन्ध बताती है।

जैसे स्वस्य (रामस्य) गौः। अपनी (राम की) गौ, इस में रा गौ का सम्बन्ध मालूम होता है। षष्ठी का क्रिया के साथ नहीं होता, अतः षष्ठी कारक विभक्ति नहीं, इसे सम्बन्ध वि कहते हैं।

इसी प्रकार सम्बोधन विभक्ति केवल किसी को बुल काम में आती है। इसका भी क्रिया के साथ सम्बन्ध नहीं अतः यह भी कारक विभक्ति नहीं है।

स्पष्टता के लिए कारक में कौन सी विभक्ति आती है उसका क्या अर्थ होता है यह बात चित्र द्वारा समझाई जाती है

कारक	विभक्ति	अर्थ
१. कर्ता	प्रथमा	ने
२. कर्म	द्वितीया	को
३. करण	तृतीया	द्वारा
४. सम्प्रदान	चतुर्थी	के लिये (को)
५. अपादान	पञ्चमी	से
६. सम्बन्ध	षष्ठी	का, के, की
७. अधिकरण	सप्तमी	में, पर
८. सम्बोधन	प्रथमा	रे, अरे, ओ

ध—विभक्ति के अर्थों में तृतीया और पञ्चमी दोनों का 'से' अर्थ बताया जाता है। इन में सन्देह उत्पन्न होता है किस 'से' में तृतीया और किस 'से' में पञ्चमी करें, अतः स्मरण रखना चाहिए कि जिसके ज़रिये कोई काम होता हो उस 'से' में तृतीया विभक्ति आती है. जैसे—हाथ से देता है; तो हाथ में तृतीया (हस्तेन ददाति)। जहां एक चीज़ का दूसरी चीज़ से अलग होना पाया जाये, उस 'से' में पञ्चमी आती है। जैसे—वृक्ष से पत्ता गिरता है; तो वृक्ष के साथ पञ्चमी आयेगी (वृक्षात्पत्रं पतति)। इसी प्रकार द्वितीया के 'को' का और चतुर्थी के 'को' का भी अन्तर स्मरण रखना चाहिए। जैसे—जिस में क्रिया का फल पैदा हो; उस 'को' वाले शब्द में द्वितीया। 'काष्ठे छिनत्ति' (लकड़ी को चीरता है)। जिस को कोई वस्तु दी जाए उस 'को' में चतुर्थी (विप्राय ददाति) ब्राह्मण को देता है।

द्वितीय खण्ड

द्वितीय अध्याय

अजन्त शब्द रूपावली

नर, बाला, मणि, नदी, भानु, वधू, पितृ, गौ, नौ, ! प्रकार जिन के अन्त में स्वर आते हैं ऐसे शब्द कई प्रक के हैं। उनमें भी कोई शब्द पुँल्लिङ्ग में, कोई स्त्रीलिङ्ग और कोई नपुंसक लिङ्ग में होते हैं। इन सभी प्रकार के श के प्रथमा, द्वितीया आदि विभक्तियों; या कर्त्ता, कर्म आदि कार में अलग २ प्रकार के रूप बन जाते हैं इसी तरह जिन के अन्त व्यञ्जन आते हैं, ये शब्द भी बहुत तरह के हैं। जैसे – राजन्, किम् भवत्, युष्मद्, अस्मद्। इन के भी रूप कारकों याने विभक्ति के अनुसार भिन्न २ प्रकार के हो जाते हैं। संस्कृत भाषा सीख के लिए उन सभी शब्दों के रूप जानने आवश्यक है जो अब बतलाये जायेंगे। उन सभी शब्दों में पहले ह्रस अकारान्त नर शब्द के रूप, उसकी विभक्तियों और उनके अ दिए जाते हैं।

अकारान्त पुँल्लिग 'नर' शब्द के रूप

कारक विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
कर्ता प्रथमा	नरः (एक ननुष्य)	नरौ (दो मनुष्य)	नराः (बहुत मनुष्य)
कर्म द्वितीया	नरम् (एक मनुष्य को)	नरौ (दो मनुष्यों को)	नरान् (बहुत मनुष्यों को)
करण तृतीया	नरेण (एक मनुष्य द्वारा)	नराभ्याम् (दो मनुष्यों द्वारा)	नरैः (बहुत मनुष्यों द्वारा)
सम्प्रदान चतुर्थी	नराय (एक मनुष्य के लिए)	नराभ्याम् (दो मनुष्यों के लिए)	नरेभ्यः (बहुत मनुष्यों के लिए)
अपादान पञ्चमी	नरात्-नराद् (एक मनुष्य से)	नराभ्याम् (दो मनुष्यों से)	नरेभ्यः (बहुत मनुष्यों से)
सम्बन्ध षष्ठी	नरस्य (एक मनुष्य का)	नरयोः (दो मनुष्यों का)	नराणाम् (बहुत मनुष्यों का)
अधिकरण सप्तमी	नरे (एक मनुष्य में)	नरयोः (दो मनुष्यों में)	नरेषु (बहुत मनुष्यों में)
सम्बोधन प्रथमा	हे नर ! (हे मनुष्य)	हे नरौ !! (हे दो मनुष्यो)	हे नराः !!! (हे बहुत मनुष्यो)

इसी तरह अकारान्त-पुँल्लिग सभी शब्दों के रूप चलेंगे ।

अकारान्त पुंल्लिङ्ग कुछ शब्द और उनका अर्थ

देश: = देश	गज: = हाथी	वृक्ष: = बृक्ष
नृप: = राजा	अश्व: = घोड़ा	मृग: = हिरण
नग: = पर्वत	सिंह: = शेर	छात्र: = विद्यार्थी
वर्ण: = रंग	मेघ: = बादल	शुक: = तोता
राजमार्ग: = सड़क	प्रासाद: = महल	बाल: = लड़का
नायक: = नेता	सेवक: = नौकर	विज्ञ = पण्डित
पिशुन: = सूचक, कुगलखोर	आचार्य: = गुरु	विहग: = पक्षी
ज्वर: = बुखार	कर: = हाथ	पाद: = पांव

ह्रस्व अकारान्त नपुंसकल्लिङ्ग शब्द

नपुंसकलिङ्ग शब्दों के रूप जानने से पहिले उनके विषय में कुछ साधारण नियम समझ लेने आवश्यक हैं, अतः वे नियम पहले दिये जाते हैं।

१. नपुंसक लिङ्ग में अकारान्त शब्दों के परे प्रथमा, विभक्ति के एक वचन में भी 'अम्' आता है. 'स' नहीं।

२. दूसरे (इकारान्त, उकारान्त आदि) शब्दों के प्रथमा, द्वितीया विभक्ति के एक वचन में कोई प्रत्यय नहीं रहता।

३. अकारान्त शब्दों के परे प्रथमा के द्विवचन में औ के स्थान में ई आता है।

४. दूसरे (इकारान्त, ईकारान्त, आदि) शब्दों में प्रथमा

विभक्ति के द्विवचन में 'न' आता है।

५. प्रथमा विभक्ति के बहुवचन में 'अस्' के बजाय 'नि' आता है और 'नि' से पहले स्वर को दीर्घ हो जाता है।

६. नपुंसक लिङ्ग में दीर्घ स्वरान्त कोई भी शब्द नहीं आता या रहता।

७. जो प्रथमा विभक्ति में रूप होंगे वे ही द्वितीया विभक्ति में भी होंगे। (प्रथमा, द्वितीया विभक्ति के रूपों में कोई भेद नहीं होता)।

८. अकारान्त शब्दों के तृतीया विभक्ति से लेकर रूप अकारान्त पुँल्लिग शब्दों के समान ही होंगे।

स्मर्तव्य—ये नियम स्वरान्त नपुंसक लिङ्ग शब्दों के लिये ही कहे गये हैं। व्यञ्जनान्त नपुंसक लिङ्ग शब्दों में ये सब लागू नहीं होंगे। उदाहरण के तौर पर एक नपुंसक लिङ्ग शब्द के रूप नीचे दिये जाते हैं—

अकारान्त नपुंसकलिग 'पुस्तक' शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पुस्तकम्	पुस्तके	पुस्तकानि
द्वितीया	पुस्तकम्	पुस्तके	पुस्तकानि
तृतीया	पुस्तकेन	पुस्तकाभ्याम्	पुस्तकैः
चतुर्थी	पुस्तकाय	पुस्तकाभ्याम्	पुस्तकेभ्यः
पञ्चमी	पुस्तकात्-द्	पुस्तकाभ्याम्	पुस्तकेभ्यः

षष्ठी	पुस्तकस्य	पुस्तकयोः	पुस्तकाना
सप्तमी	पुस्तके	पुस्तकयोः	पुस्तकेषु
सम्बोधन	[हे]पुस्तक !	[हे]पुस्तके !!	[हे]पुस्तकानि!

इसी तरह नीचे लिखे अकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्दों के रूप भी होते हैं।

रत्नम् = रत्न	विषम् = ज़हर	पठनम् = पढ़ना
धनम् = धन	आलस्यम् = आलस्य	मुखम् = मुंह
ज्ञानम् = ज्ञान	गृहम् = घर	हृदयम् = दिल
फलम् = फल	हितम् = लाभदायक	पापम् = पाप
पुण्यम् = पुण्य	जीवनम् = जीना	दानम् = दान
मूल्यम् = कीमत	अन्नम = खाना [भोजन]	जलम् = पानी

❀अभ्यास

(१) इन शब्दों की विभक्तियां, बचन और अर्थ बताइये — गजस्य, आचार्येभ्यः, विहगान्, पादौ, विज्ञैः, करयोः, सेवकानाम्, राजमार्गे, नायकम्, वर्णात्, सूचकेन, नगेषु, देशाय, मुखम्, हृदयानि, फलानि, ज्ञानम्, धनम्, आलस्येन।

(२) आगे दिये शब्दों के सब बिभक्तियों में उच्चारण

❀अध्यापकों से निवेदन है कि 'उच्चारण'—रूपावली रटवाने का प्रयत्न न करके अनुवाद के क्रम-गत अभ्यासों से ही शब्दों के उच्चारण समझायें।

जिए—प्रासाद, नृप, मृग, वृक्ष, विष, पाप, जल, मूल्य, मार्ग, र्ग, अन्न, जीवन।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

कृष्ण की पुस्तक, छात्र के साथ, बालक के लिये, धन की च्छा, बल के लिये, मोहन के घर में, शिव के मन्दिर में, छात्रों के गृह में, बालकों के साथ।

इकारान्त पुँल्लिग 'मुनि' शब्द के रूप

भक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
थमा	मुनिः (एक साधु)	मुनी (दो साधु)	मुनयः (बहुत साधु)
तीया	मुनिम् (एक साधु को)	मुनी (दो साधुओं को)	मुनीन् (बहुत साधुओं को)
तीया	मुनिना (एक साधु द्वारा)	मुनिभ्याम् (दो साधुओं द्वारा)	मुनिभिः (बहुत साधुओं द्वारा)
तुर्थी	मुनये (एक साधु के लिए)	मुनिभ्याम् (दो साधुओं के लिए)	मुनिभ्यः (बहुत साधुओं के लिए)
ञ्चमी	मुनेः (एक साधु से)	मुनिभ्याम् (दो साधुओं से)	मुनिभ्यः (बहुत साधुओं से)
ष्ठी	मुनेः (एक साधु का)	मुन्योः (दो साधुओं का)	मुनीनाम् (बहुत साधुओं का)

सप्तमी	मुनौ	मुन्योः	मुनिषु
	(एक साधु में)	(दो साधुओं में)	(बहुत साधुओं में)
सम्बोधन	[हे] मुने	[हे] मुनी	[हे] मुनयः
	[हे] साधु	[हे] दो साधुओ	[हे] बहुत साधुअ

इसी प्रकार सभी इकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप चलेंगे।

कुछ पुँल्लिग इकारान्त शब्द औ. अर्थ

अग्निः = आग	नृपतिः = राजा	गिरिः = पहाड़
पाणिः = हाथ	पतिः = स्वामी	हरिः = विष्णु
ऋषिः = साधु	उदधि = समुद्र	मणिः = रत्न
विधिः = भाग्य	निधिः = खज़ाना	असिः = तलवार
अतिथिः = मेहमान	रश्मिः = किरण	तिथि = दिन
अरिः = शत्रु	कविः = कवि	व्याधिः = बीमारी

नोट—पुँल्लिङ्ग में सब इकारान्त शब्दों के ऐसे ही रूप होते हैं। परन्तु सखि और पति शब्दों के रूपों में कुछ भेद हैं, जिन के रूप नीचे बताये जाते हैं।

इकारान्त 'सखि' शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
	(एक मित्र)	(दो मित्र)	(बहुत मित्र)
द्वितीया	सखायाम्	सखायौ	सखीन्

तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पञ्चमी	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
षष्ठी	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सम्बोधन	[हे]सखे	[हे]सखायौ	[हे]सखायः
	[हे]मित्र	[हे]दो मित्रो	[हे]बहुत मित्रो

इकारान्त 'पति' शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्
तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पञ्चमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सम्बोधन	[हे] पते	[हे] पती	[हे] पतयः

स्मर्तव्य—यदि पति शब्द समास के अन्त में आए, जैसे 'भूपति' 'नृपति' इत्यादि शब्दों में हैं, तो इसके रूप मुनि की तरह ही होंगे।

इकारान्त नपुँसक लिग 'वारि' शब्द के रूप

प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	बारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	(हे) वारि ! (हे वारे)	(हे) वारिणो !	(हे) वारीणि

इसी तरह नपुँसक लिङ्ग में इकारान्त शब्दों के होते हैं।

कुछ इकारान्त शब्द और अर्थ

अव्याधि=स्वस्थ, सुरभि=सुगन्धिवाला, अनादि=आदि ही

परन्तु दधि (दही) अक्षि (आंख), अस्थि (हड्डी) इन के में कुछ भेद हैं।

इकारान्त नपुंसक लिंग 'दधि' शब्द के रूप

प्रथमा	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वितीया	दधि	दधिनो	दधीनि

तृतीया	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
चतुर्थी	दध्ने	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
पञ्चमी	दध्नः	दधिभ्याम	दधिभ्यः
षष्ठी	दध्नः	दध्नोः	दध्नाम्
सप्तमी	दध्नि, दधनि	दध्नोः	दधिषु
सम्बोधन	हे दधे, हे दधि !	हे दधिनी !!	हे दधीनि !!!

इसी तरह अस्थि और अक्षि शब्दों के रूप जानने चाहिएं। जैसे—अक्षि-तृतीया=अक्ष्णा, चतुर्थी=अक्ष्णे इत्यादि।

अभ्यास

(१) इन शब्दों की विभक्तियां, वचन और अर्थ बताइये—

अग्नये, नृपते, गिरी, हरये, पाणी, पतिभ्यः, ऋषिभिः, वारिणे, विध्योः, दध्नाम्, अतिथीन्, अक्ष्णा, अरिभ्याम्, उदधीनाम्, निधिषु, अस्थीनि, रश्मी, कवयः, संख्या, पत्युः।

(२) इन शब्दों के रूप लिखिये—

अतिथि—५मी १ वं०, असि—२ या बहु०, यति—६ष्ठी बहु०, निधि—७मी द्विवचन, रश्मि—५मी १ व०, विधि—६ष्ठी १ व०, पाणि—७मी बहु० और ३या १व०।

(३) शुद्ध कीजिए—

अतिथ्ये नमः, अरिणां गृहम्, मम अक्षणौ, यतिस्य कुटीरम्, द्वे अस्थीनि, अग्नीभिः दग्धम्।

(४) संस्कृत में अनुवाद कीजिये—

राजा के नौकर, ऋषियों के आश्रमों में, जल के स्वाद में, कवियों के वचनों को, दही के पात्र में, मित्रों के लिए दूध।

उकारान्त पुंल्लिग 'गुरु' शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गुरुः	गुरू	गुरवः
द्वितीया	गुरुम्	गुरू	गुरून्
तृतीया	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
चतुर्थी	गुरवे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
पञ्चमी	गुरोः	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
षष्ठी	गुरोः	गुर्वोः	गुरूणाम्
सप्तमी	गुरौ	गुर्वोः	गुरुषु
सम्बोधन	(हे) गुरो !	(हे) गुरू !!	(हे) गुरवः !!!

इसी तरह उकारान्त पुंल्लिग प्रभु, भानु, शिशु, वायु, शम्भु, रिपु, मनु, रघु, बाहु आदि शब्दों के रूप बनेंगे ।

उकारान्त 'वस्तु' शब्द नपुंसकलिंग के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वस्तु	वस्तुनी	वस्तूनि
द्वितीया	वस्तु	वस्तुनी	वस्तूनि
तृतीया	वस्तुना	वस्तुभ्याम्	वस्तुभिः
चतुर्थी	वस्तुने	वस्तुभ्याम्	वस्तुभ्यः
पञ्चमी	वस्तुनः	वस्तुभ्याम्	वस्तुभ्यः
षष्ठी	वस्तुनः	बस्तुनोः	वस्तूनाम्
सप्तमी	वस्तुनि	वस्तुनोः	वस्तुषु

म्बोधन हे वस्तु, हे वस्तो ! हे वस्तुनी !! हे वस्तूनि !!!

वस्तु शब्द के रूपों को देख कर निश्चय हो जायेगा कि इस के रूपों और वारि शब्द के रूपों में कोई भी अन्तर नहीं है। केवल उ और इ का ही दोनों में भेद हैं।

कुछ उकारान्त नपुंसक लिंग शब्द और उनके अर्थ—

मधु=शहद, वस्तु=चीज़, अश्रु=आंसू, जानु=घुटना, तालु=तालू

अभ्यास

(१) रूप बताइए—

गुरु–६ष्ठी एकवचन, प्रभु–४र्थी १ व०, वायु–५मी १ व०, ानु–३या बहु व०, रिपु–२या द्विव०, बाहु–७मी द्विव०, साधु–२या हुव०, वस्तु–४र्थी १व०, मधु–७मी १व०, अश्रु–६ष्ठी द्विव०, ालु–७मी १ व०।

(२) इन के अर्थ बताइये और विभक्ति तथा वचन भी बताइए :—

शिशुभिः, वाय्वोः, साधोः, शम्भौ, मनुना, रघुः, भानवः, शिशुभ्याम्, बाहूनाम्, भानवे, रिपोः, वस्तूनि, अश्रुणः, वसुनोः, मधूनाम्, तालुने, जानुनी।

———

ऋकारान्त शब्द

ऋकारान्त शब्दों के प्रथमा विभक्ति के एक वचन में 'ऋ' के स्थान में 'आ' आ जाता है और उसके परे कोई विभक्ति नहीं रहती। जैसे—दाता, पिता, माता।

ऋकारान्त शब्दों में प्रथमा विभक्ति के द्विवचन, बहुवचन और द्वितीया के एकवचन, द्विवचन इन चारों स्थानों में ऋ को आर् हो जाता है, परन्तु कुछ शब्दों में ऋ को अर् होता है। वे शब्द थोड़े से ही हैं। जैसे—पितृ, मातृ, भ्रातृ, देवृ, जामातृ, दुहितृ। बाकी ऋकारान्त शब्दों को ऊपर कहे गए स्थानों में आर् ही होगा।

ऋकारान्त पुंल्लिग 'दातृ' शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	दाता	दातारौ	दातारः
२या	दातारम्	दातारौ	दातॄन्
३या	दात्रा	दातृभ्याम्	दातृभिः
४र्थी	दात्रे	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
५मी	दातुः	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
६ष्ठी	दातुः	दात्रोः	दतॄणाम्
७मी	दातरि	दात्रोः	दातृषु
सम्बोधन	हे दातः !	हे दातारौ !!	हे दातारः !!!

नीचे लिखे शब्दों के रूप इसी तरह होंगे—

नेतृ (नेता) कर्तृ (करने वाला) गन्तृ (जाने वाला) हन्तृ (मारने वाला) धातृ (पालने वाला) श्रोतृ (सुनने वाला) वक्तृ (बोलने वाला) होतृ (हवन करने वाला) नप्तृ (पोता)।

'पितृ' (पिता) शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्वबचन	बहुवचन
१मा	पिता	पितरौ	पितरः
२या	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
३या	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
४र्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
५मी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
६ष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
७मी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः !	हे पितरो !!	हे पितरः !!!

इसी तरह मातृ (माई) भ्रातृ (भाई) जामातृ (जँवाई) देवृ (देवर) नृ (मनुष्य) दुहितृ (बेटी) शब्दों के रूप पितृ शब्द के समान ही चलेंगे। 'मातृ' का द्वितीया बहुबचन में 'मातॄः' बनेगा, 'मातॄन्' नहीं। इसी तरह दुहितृ का रूप दुहितॄः

स्मर्तव्य—स्त्रीलिंग में सभी ऋकारान्त शब्दों के आगे ई

आ जाता है और ऋ को र् हो जाता है। जैसे—दातृ दात्री, धातृ का धात्री, नेतृ का नेत्री आदि—ऋकारान्त शब्दों के स्त्रीलिंग के रूप ईकारान्त नदी आदि की तरह चलेंगे।

ऋकारान्त नपुंसकलिंग 'दातृ' शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	दातृ	दातृणी	दातृणि
२या	दातृ	दातृणी	दातृणि
३या	दातृणा	दातृभ्याम्	दातृभिः
४थी	दातृणे	,,	दातृभ्यः
५मी	दातृणः	,,	,,
६ष्ठी	दातृणः	दातृणोः	दातृणाम्
७मी	दातृणि	,,	दातृषु
सम्बोधन	हे दातृ, हे दातः !	हे दातृणी !!	हे दातृणि !!!

ओकारान्त पुंल्लिग 'गो' शब्द के रूप (बैल या गाय)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	गौः	गावौ	गावः
२या	गाम्	गावौ	गाः
३या	गवा	गोभ्याम्	गोभिः

४र्थी	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
५मी	गोः	„	„
६ष्ठी	गोः	गवोः	गवाम्
७मी	गवि	„	गोषु
सम्बोधन	हे गौः	हे गावौ	हे गावः

स्मर्तव्य—गो शब्द के स्त्रीलिंग में भी इसी तरह रूप रहेंगे।

अकारान्त, ईकारान्त, ऊकारान्त, पुंल्लिग शब्दों के रूप अनावश्यक और कठिन होने के कारण नहीं लिखे गये हैं।

अभ्यास

(१) इन शब्दों की विभक्तियां, वचन तथा अर्थ बताइये—दातरि, पित्रोः, भ्रातॄन्, जामातरम्, पित्रे, नेतॄणाम्, दातृ, भ्रातुः, कर्ता, हन्तृभ्यः, श्रोत्रोः, होतरि, वक्तुः, नप्तुः दातृणोः, गवाम्, गाः, गवा।

(२) रूप बताइये :—

पितृ—चतुर्थी बहु व०, हन्तृ—३या द्विव०, गन्तृ—५मी द्विवचन, नेतृ—३या १ व०, जामातृ—५मी १ व०, धातृ—६ष्ठी १ व०, नृ—१मा १ व०, देवृ—१मा बहुव०, दातृ—नपुंस० २या बहुव०, गो—५मी १व०।

(३) शुद्ध कीजिये—

पितृणा, भ्रातरोः, हन्तरी, गवाभ्याम्, श्रोतृणे।

(४) संस्कृत में अनुवाद कीजियेः—

पिता के आदेश से, पति के दो भाइयों में, हवन करने वाला,

गो के बछड़ों को। मारने वालों के द्वारा। दो भाइयों का परस्पर विरोध। दाता के लिए दान।

स्त्रीलिंग शब्दों के रूप

स्त्रीलिंग के शब्द भी स्वरान्त और व्यञ्जनान्त, दोनों तरह के होते हैं। उन में से व्यञ्जनान्तों में पुंल्लिग के शब्दों से प्रायः कुछ अन्तर नहीं आता। स्वरान्त, स्त्रीलिंग शब्दों के रूप नीचे दिये जाते हैं—

स्मर्तव्य—ह्रस्व अकारान्त स्त्रीलिङ्ग कोई शब्द नहीं होता।

आकारन्त स्त्रीलिंग 'बाला' (लड़की) शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	बाला	बाले	बाला:
२या	बालाम्	बाले	बालाः
३या	बालया	बालाभ्याम्	बालाभि:
४र्थी	बालायै	,,	बालाभ्य:
५मी	बालाया:	,,	,,
६ठी	बालाया:	बालयो:	बालानाम्
७मी	बालायम्	बालयो:	बालासु
सम्बोधन	हे बाले !	हे बाले !!	हे बाला: !!!

इसी तरह के कुछ आकारन्त स्त्रीलिंग नीचे लिखे शब्दों के रूप होंगे

...द अर्थ	शब्द अर्थ	शब्द अर्थ
...=एक नदी	लता=बेल	आज्ञा=हुक्म
...स्ता=जेहलम नदी	रेखा=लकीर	क्रीड़ा=खेल
...भागा=चनाब नदी	कथा=कहानी	निशा=रात
...शाला=स्कूल	विद्या=इलम	सभा=सभा
...ा=मकान	पूजा=पूजा	

अभ्यास

) विद्यया सुखम्। चन्द्रभागायाः जलं शीतलम्। वितस्तयां कमलानि। गुरोः आज्ञा। निशासु कथा भवन्ति। सभायै पाठशालायाम् अवकाशः।

ऊपर लिखे वाक्यों का अर्थ लिखिये :—

रेखाः, क्रीड़ायाः, कथया, शालायाः, निशानाम्, विद्यां, सभाम्, वितस्तायै।

ऊपर लिखे रूप किस किस विभक्ति के और किस किस वचन के हैं ?

) शुद्ध कीजिए :—

आज्ञास्य, चिन्तेन, लतेभ्यः, पाठशालैः, गङ्गान्, पूजेषू।

(४) संकृत में अनुवाद कीजिए :—

वितस्ता का जल ठण्डा है। आर्य गङ्गा में नहाते हैं। चिन्ता से मनुष्य कमज़ोर हो जाता है। मनोहर सभाओं में जाता है।

इकारान्त 'मति' (बुद्धि) शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	मतिः	मती	मतयः
२ या	मतिम्	,,	मती
३ या	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
४ र्थी	मत्यै-मतये	,,	मतिभ्यः
५ मी	मत्याः-मतेः	,,	,,
६ ष्ठी	,, ,,	मत्योः	मतीनाम्
७ मी	मत्याम्-मतौ	,,	मतिषु
सम्बोधन	हे मते !	हे मती !!	हे मतयः !

इसी प्रकार नीचे लिखे शब्दों के रूप होंगे

शब्द अर्थ	शब्द अर्थ	शब्द अर्थ
नीतिः=नीति	वृत्तिः=जीविका	सम्पत्तिः=धन
गतिः=चलना, चाल	कीर्तिः=यश	आपत्तिः=दुःख, आ

ईकारान्त 'नदी' शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	नदी	नद्यौ	नद्य:
२ या	नदीम्	,,	नदी:
३ या	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभि:
४ र्थी	नद्यै	,,	नदीभ्य:
५ मी	नद्या:	,,	,,
६ ष्ठी	नद्या:	नद्यो:	नदीनाम्
७ मी	नद्याम्	नद्यो:	नदीषु
सम्बोधन	हे नदी !	हे नद्यौ !!	हे नद्य: !!!

लक्ष्मी शब्द के भी रूप इसी तरह रहेंगे, केवल प्रथमा के क वचन के अन्त में विसर्ग रहेगा-लक्ष्मी:। इस प्रकार ईकारान्त ीलिंग पुत्री, नारी, जननी, दासी, गौरी, सखी, पुरी, देवी, त्री, राज्ञी आदि शब्दों के रूप नदी शब्द की भांति होंगे। परन्तु कारान्तों में स्त्री शब्द के रूप इस से भिन्न ढंग से होंगे।

ईकारान्त 'स्त्री' शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रिय:
२ या	स्त्रियम्,स्त्रीम्	,,	स्त्रिय:-स्त्री:
३ या	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभि:

४ थी	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्य:
५ मी	स्त्रिया:	,,	,,
६ ष्ठी	,,	स्त्रियो:	स्त्रीणाम्
७ मी	स्त्रीयाम्	,,	स्त्रीषु
सम्बोधन	हे स्त्री !	हे स्त्रियौ !!	हे स्त्रिय !!

अभ्यास

(१) अनुवाद कीजिए :—

धनिक की पुत्रियां। देवी का वर। दासी का कपड़ा। स्‍ से बात-चीत। जननी का प्यार। नगरी का सुकाल। ल का मान। विद्या से यश।

(२) शुद्ध कीजिए :—

नारिसु गुणाः वर्तन्ते। गौरीयै पुष्पाणि। सख्यः वस्त्र राज्ञिना फलानि दत्तानि। पुरीयां धनिकः सन्ति।

उकारान्त 'धेनु' शब्द के रूप

	धेनुः	धेनू	धेनवः
	धेनुम्	,,	धेनूः
	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनभिः
	धेन्वै, धेनवे	,,	धेनुभ्यः
	धेन्वा-धेनोः	,,	,,
	,, ,,	धेन्वोः	धेनूनाम्
	धेन्वाम्-धेनौ	,,	धेनुषु
धन	हे धेनो !	हे धेनू !!	हे धेनवः !!!

ऊकारान्त 'वधू' शब्द के रूप

क्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	वधूः	वध्वौ	वध्वः
	वधूम्	,,	वधूः
	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
	वध्वै	,,	वधूभ्यः
	वध्वाः	,,	,,
	,,	वध्वोः	वधूनाम्
	वध्वाम्	,,	वधूषु
धन	हे वधु !	हे वध्वौ !!	हे वध्वः !!!

इसी प्रकार से श्वश्रू:, चमू (सेना) वामोरू—(सुन्दर वाली) आदि शब्दों के रूप बनेंगे।

ऋकारान्त शब्दों में मातृ शब्द पुँल्लिङ्ग के रू शब्द के समान होंगे। केवल द्वितीया के बहुवचन में 'मातृः' बने

ऋकारान्त 'स्वसृ' शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
२ या	स्वसारम्	,,	स्वसृः
३ या	स्वस्रा	स्वसृभ्याम्	स्वसृभिः
४ थीं	स्वस्रे	,,	स्वसृभ्यः
५ मी	स्वसुः	,,	,,
६ ष्ठी	,,	स्वस्रोः	स्वसृणाम्
७ मी	स्वसरि	,,	स्वसृषु
सम्बोधन	हे स्वसः !	हे स्वसारौ !!	हे स्वसारः

अभ्यास

(१) अनुवाद कीजिए :—

गौ का दूध उत्तम होता है। बहिन की किताब पर लिखता है। माता की पूजा। पिता से डर। गुरू की आ रहना। बुद्धि में भ्रम। यश के लिए।

(२) अर्थ बताइए:—

मुनीनां शिशव: सुन्दराः। वधूभि: सह श्वश्रूः याति। बालानां पाठशाला: सन्ति। बालायै पुस्तकं ददाति। विद्यया :ः भवति।

) शुद्ध कीजिए--

रज्जुना, स्वसृन्, मातारौ, वधून्, धेन्वे, बालिकाय, ्, कन्यान्, पाठशालेषु, नद्ये।

द्वितीय खण्ड

तृतीय अध्याय

व्यञ्जनान्त शब्द प्रकरण

जिन के अन्त में क् च् त् आदि व्यञ्जन हों, वे व्यञ्जनान्त होते हैं। इनके बहुत से भेद हैं। कुछ मुख्य मुख्य के रूप और अर्थ यहां दिये जाते हैं।

चवर्गान्त शब्दों में 'पयोमुच्' (बादल) शब्द पुँल्लि के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	पयोमुक्-ग्	पयोमुचौ	पयोमुचः
२या	पयोमुचम्	,,	,,
३या	पयोमुचा	पयोमुग्भ्याम्	पयोमुग्भिः
४र्थी	पयोमुचे	,,	पयोमुग्भ्यः
५मी	पयोमुचः	,,	,,
६ष्ठी	,,	पयोमुचोः	पयोमुचाम्
७मी	पयोमुचि	,,	पयोमुक्षु
सम्बोधन	हे पयोमुक्-ग् !	हे पयोमुचौ !!	हे पयोमुचः !

इसी तरह **'वणिज्'** (बनिया) **'भिषज्'** (हकीम) जकारान्त शब्दों के रूप भी होते हैं। जैसे—

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	वणिक्-ग्	वणिजौ	वणिजः
२या	वणिजम्	,,	,,
३या	वणिजा	वणिग्भ्याम्	वणिग्भिः
४र्थी	वणिजे	,,	वणिग्भ्यः
५मी	वणिजः	,,	,,
६ष्ठी	,,	वणिजोः	वणिजां
७मी	वणिजि	,,	वणिक्षु
सम्बोधन	हे वणिक्-ग्	हे वणिजौ !!	हे वणिजः !!

'भिषज्' (हकीम) शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	भिषक्-ग्	भिषजौ	भिषजः
२या	भिषजम्	,,	,,
३या	भिषजा	भिषग्भ्याम्	भिषग्भिः
४र्थी	भिषजे	,,	भिषग्भ्यः
५मी	भिषजः	,,	,,
६ष्ठी	,,	भिषजोः	भिषजाम्
७मी	भिषजि	,,	भिषक्षुः
सम्बोधन	हे भिषक्-ग् !	हे भिषजौ !!	हे भिषजः !!!

स्मर्तव्य—इन ऊपर लिखे व्यञ्जनान्त शब्दों के रूपों को देख कर यह सिद्धान्त जाना जा सकता है कि—

(१) व्यञ्जनान्त शब्दों के आगे प्रथमा विभक्ति के एक वचन में विभक्ति प्रायः नहीं रहती। (२) व्यञ्जनादि (भ्याम् भिस्, भ्यस्) विभक्ति परे होने पर अन्तिम वर्ण को उसके वर्ग का सदा तीसरा अक्षर ही हो जायेगा।

नकारान्त पुँल्लिग 'राजन्' (राजा) शब्द के रूप

स्मर्तव्य— नकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों में प्रथमा विभक्ति के एकवचन में और भ्याम्, भिस्, सु इन व्यञ्जनादि विभक्तियों में न् उड़ जाता है और प्रथमा के तीन तथा द्वितीया के दो, कुल मिला कर पांच वचनों में न् से पूर्व 'अ' को दीर्घ 'आ' हो जाता है।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	राजा	राजानौ	राजानः
२ या	राजानम्	,,	राज्ञः
३ या	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
४ र्थी	राज्ञे	,,	राजभ्यः
५ मी	राज्ञः	,,	,,
६ ष्ठी	,,	राज्ञोः	राज्ञाम्
७ मी	राज्ञि, राजनि	,,	राजसु
सम्बोधन	हे राजन्!	हे राजानौ!!	हे राजानः!!!

राजन् शब्द में द्वितीया बहुवचन से लेकर सभी स्वरादि विभक्तियों में न् से पूर्व अ भी उड़ गया है परन्तु यदि 'अ' से पूर्व कोई संयुक्त अक्षर हो तो वह नहीं उड़ता। जैसे— महात्मन्, शर्मन्, वर्त्मन् शब्दों में।

'महात्मन्' शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	महात्मा	महात्मानौ	महात्मानः
२ या	महात्मानम्	,,	महात्मनः
३ या	महात्मना	महात्मभ्याम्	महात्मभिः
४ थीं	महात्मने	,,	महात्मभ्यः
५ मी	महात्मनः	,,	,,
६ ष्ठी	,,	महात्मनोः	महात्मनाम्
७ मी	महात्मनि	,,	महात्मसु
सम्बोधन	हे महात्मन् !	हे महात्मानौ !!	हे महात्मानः !!!

नकारांत 'गुणिन्' (गुणवाला) शब्द (पुंल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	गुणी	गुणिनौ	गुणिनः
२या	गुणिनम्	,,	,,
३या	गुणिना	गुणिभ्याम्	गुणिभिः
४थीं	गुणिने	,,	गुणिभ्यः
५मी	गुणिनः	,,	,,

६ष्ठी	गुणिनः	गुणिनोः	गुणिनाम्
७मी	गुणिनि	,,	गुणिषु
सम्बोधन	हे गुणिन् !	हे गुणिनौ !!	हे गुणिनः !!!

इसी तरह दण्डिन्, वाग्मिन्, यशस्विन्, धनिन् आदि के रूप होंगे।

'महत्' (बड़ा) शब्द (पुंल्लिङ्ग)

(१) ऐसे शब्दों में प्रथमा एकवचन में त् से पहले अ को आ हो जाता है, नया न् आ के बाद आ जाता है और त् उड़ जाता है।

(२) आगे प्रथमा के द्विवचन, बहुवचन में और द्वितीया के एकवचन, द्विवचन में भी आ हो जाता है। नया न् भी आ जाता है, परन्तु त् नहीं उड़ता वह भी रहता है।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	महान्	महान्तौ	महान्तः
२या	महान्तम्	,,	महतः
३या	महता	महद्भ्याम्	महद्भिः
४र्थी	महते	,,	महद्भ्यः
५मी	महतः	,,	,,
६ष्ठी	,,	महतोः	महताम्
७मी	महति	,,	महत्सु
सम्बोधन	हे महन् !	हे महान्तौ !!	हे महान्तः !!!

पुंल्लिङ्ग 'धीमत्' (बुद्धिमान्) शब्द

इस में त् के पहले अ को केवल प्रथमा एक वचन में ही आ होता है, बाकी बातें महत् के समान होंगी।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	धीमान्	धीमन्तौ	धीमन्तः
२ या	धीमन्तम्	"	धीमतः
३ या	धीमता	धीमद्भ्याम्	धीमद्भिः
४ थीं	धीमते	"	धीमद्भ्यः
५ मी	धीमतः	"	"
६ ठी	"	धीमतोः	धीमताम्
७ मी	धीमति	"	धीमत्सु
सम्बोधन	हे धीमन् !	हे धीमन्तौ !!	हे धीमन्तः !!!

इसी प्रकार बुद्धिमत्, धनवत्, श्रीमत्, भगवत् के रूप होंगे।

गच्छत्, पिवत्, कुर्वत्, पश्यत् आदि शब्दों के रूप भी धीमत् के समान ही होंगे, परन्तु इन में प्रथमा विभक्ति के एकवचन में भी त् से पूर्व अ को आ नहीं होगा, जैसे—

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः
२ या	गच्छन्तम्	,,	गच्छतः
३ या	गच्छता	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भिः
४ र्थी	गच्छते	,,	गच्छद्भ्यः
५ मी	गच्छतः	,,	,,
६ ष्ठी	गच्छतः	गच्छतोः	गच्छताम्
७ मी	गच्छति	गच्छतोः	गच्छत्सु
सम्बोधन	हे गच्छन् !	हे गच्छन्तौ !!	हे गच्छन्तः !!!

अभ्यास

(१) संस्कृत बनाइये:—

दो महात्मा, गुणियों को, बादलों ने, धनियों ने, हकीमों का, राजा के लिए, बादल से, हकीम में, महात्मा के लिए, गुणी का, राजा को, बड़े के लिये, बुद्धिमान् में।

विभक्तियां, वचन और अर्थ बताइए :—

महताम्, यशस्विभिः, धनिनाम्, राज्ञे, महात्मानम्, गुणिनः, राजानौ, महति, भिषजा, पयोमुग्भ्याम्, वणिजः, वर्त्मना, शर्मणे, दण्डिनम्, वाग्मिना।

(३) शुद्ध कीजिये—

पयोमुचान्, महात्माय, गुणियोः, हे धीमान्, महानस्य, वाग्मीनाम्।

सकारान्त पुंल्लिङ्ग 'चन्द्रमस्' (चन्द्रमा)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	चन्द्रमा	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
२ या	चन्द्रमसम्	,,	चन्द्रमसः
३ या	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः
४ र्थी	चन्द्रमसे	,,	चन्द्रमोभ्यः
५ मी	चन्द्रमसः	,,	,,
६ ष्ठी	,,	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
७ मी	चन्द्रमसि	,,	चन्द्रमस्सु
सम्बोधन	हे चन्द्रमः !	हे चन्द्रमसौ !!	हे चन्द्रमसः !!!

पुंल्लिग 'विद्वस्' शब्द (विद्वान्)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया	विद्वांसम्	,,	विदुषः
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
चतुर्थी	विदुषे	,,	विद्वद्भ्यः
पञ्चमी	विदुषः	,,	,,
षष्ठी	,,	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	,,	विद्वत्सु
सम्बोधन	हे विद्वन् !	हे विद्वांसौ !!	हे विद्वांसः !!!

'युवन्' शब्द (पुँल्लिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	युवा	युवानौ	युवानः
२ या	युवानम्	"	यूनः
३ या	यूना	युवभ्याम्	युवभिः
४ थीं	यूने	"	युवभ्यः
५ मी	यूनः	"	"
६ ष्ठी	यूनः	यूनोः	यूनाम्
७ मी	यूनि	यूनोः	युवसु
सम्बोधन	हे युवन्	हे युवानौ	हे युवानः

इसी प्रकार श्वन् और मघवन् के रूप बनेंगे।

'पथिन्' शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः
२ या	पन्थानम्	पन्थानौ	पथः
३ या	पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः
४ थीं	पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
५ मी	पथः	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
६ ष्ठी	पथः	पथोः	पथाम्
७ मी	पथि	पथोः	पथिषु
सम्बोधन	हे पन्थाः	हे पन्थानौ	हे पन्थानः

स्त्रीलिंग 'वाच्' (वाणी) शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	वाक्-वाग्	वाचौ	वाचः
२या	वाचम्	,,	,,
३या	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
४र्थी	वाचे	,,	वाग्भ्यः
५मी	वाचः	,,	,,
६ष्ठी	,,	वाचोः	वाचाम्
७मी	वाचि	,,	वाक्षु
सम्बोधन	हे वाक्-वाग्	हे वाचौ	हे वाचः

इसी प्रकार 'स्रज्' (माला) शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	स्रक्-ग्	स्रजौ	स्रजः
२या	स्रजम्	,,	,,
३या	स्रजा	स्रग्भ्याम्	स्रग्भिः
४र्थी	स्रजे	,,	स्रग्भ्यः
५मी	स्रजः	,,	,,
६ष्ठी	,,	स्रजोः	स्रजाम्
७मी	स्रजि	,,	स्रक्षु
सम्बोधन	हे स्रक्-ग्	हे स्रजौ	हे स्रजः

'सरित्'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	सरित्.द्	सरितौ	सरितः
२या	सरितम्	,,	,,
३या	सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः
४र्थी	सरिते	,,	सरिद्भ्यः
५मी	सरितः	,,	,,
६ष्ठी	सरितः	सरितोः	सरिताम्
७मी	सरिति	,,	सरित्सु
सम्बोधन	हे सरित्	हे सरितौ	हे सरितः

स्त्रीलिङ्ग 'दिश्' (दिशा) शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	दिक्.ग्	दिशौ	दिशः
२या	दिशम्	,,	,,
३या	दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः
४र्थी	दिशे	,,	दिग्भ्यः
५मी	दिशः	,,	,,
६ष्ठी	,,	दिशोः	दिशाम्
७मी	दिशि	,,	दिक्षु
सम्बोधन	हे दिक्-ग्	हे दिशौ	हे दिशः

नपुंसकलिङ्ग 'नामन्' शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	नाम	नामनी	नामानि
२या	;,	,,	,,
३या	नाम्ना	नामभ्याम	नामभिः
४र्थी	नाम्ने	,,	नामभ्यः
५मी	नाम्नः	,,	,,
६ष्ठी	,,	नाम्नोः	नाम्नाम्
७मी	नाम्नि, नामनि	,,	नामसु
सम्बोधन	हे नाम	हे नामनी	हे नामानि

नपुंसकलिङ्ग 'कर्मन्' (काम) शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	कर्म	कर्मणी	कर्माणि
२या	,,	,,	,,
३या	कर्मणा	कर्मभ्याम्	कर्मभिः
४र्थी	कर्मणे	,,	कर्मभ्यः
५मी	कर्मणः	,,	,,
६ष्ठी	,,	कर्मणोः	कर्मणाम्
७मी	कर्मणि	,,	कर्मसु
सम्बोधन	हे कर्म	हे कर्मणी	हे कर्माणि

'मनस्' (मन) शब्द के रूप (नपुंसक लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	मनः	मनसी	मनांसि
२या	,,	,,	,,
३या	मनसा	मनोभ्याम्	मनोभिः
४र्थी	मनसे	,,	मनोभ्यः
५मी	मनसः	,,	,,
६ष्ठी	,,	मनसोः	मनसाम्
७मी	मनसि	,,	मनःसु
सम्बोधन	हे मनः	हे मनसी	हे मनांसि

इसी प्रकार नपुंसक लिङ्ग सकारान्त पयस् (दूध या जल); यशस् (यश), तमस् (अंधेरा) आदि के रूप होंगे।

अभ्यास

(१) **रूप बताइए**—चन्द्रस्—३या बहुव०; विद्वस्—२या बहुव०; युवन्—७मी १ व०; पथिन्—१मा १ व०; वाच्—३या द्विव०; स्रज्—७मी बहुव०; सरित्—३या १ व०; दिश्—५मी १ व०; नामन्—६ष्ठी १ व०; कर्मन्—३या द्विव०; मनस्—२या बहुव०; विद्वस्—३या १ व०; मनस्—३या द्वि व०।

(२) **संस्कृत बनाइये**—विद्वान् ने; चन्द्रमाओं से; जवानों का; रास्ते में, वाणी से; दो मालाओं के लिए; दो दिशाओं का; नाम में; कामों का; मन का।

(३) **शुद्ध कीजिए** :—विद्वानेषु; चन्द्रमाभिः नामयोः कर्मस्यः युवानेन, पथस्य, सरितायाम्।

द्वितीय खण्ड

चतुर्थ अध्याय

सर्वनाम

१. पटेलः चतुरः, राजनीतिज्ञः, तेन समः अपरः कोऽपि न; तस्य दीर्घमायुः स्यात् ।

२. पटेलः चतुरो राजनीतिज्ञः; पटेलेन समः अपरः कोऽपि न; पटेलस्य दीर्घमायुः स्यात् ।

ऊपर दो प्रकार के वाक्य-समूह दिए गये हैं। इन दोनों का आशय एक ही है, 'पटेल' चतुर राजनीति के पण्डित हैं, उनके बराबर दूसरा कोई नहीं है, उनको दीर्घायु हो ।

एक अर्थ होने वाले होने पर भी उन में से पहला वाक्य सुन्दर है और दूसरा असुन्दर कहा जाता है । क्योंकि पहले वाक्य-समूह में 'पटेल' शब्द एक ही बार आया है । दुबारा तिवारा जब उसकी आवश्यकता हुई है तो उसे न बोल कर उसकी जगह 'तेन' और 'तस्य' कहा गया है ।

दूसरे वाक्य-समूह में बार २ पटेल शब्द आता है, अतः दूसरा वाक्य-समूह पुनरुक्ति दोष के कारण असुन्दर है । इस प्रकार यह बात सुन्दर रचना के लिए आवश्यक हे कि संज्ञा शब्दों

की पुनरुक्ति न की जाय । अपितु जब कभी दुबारा तिबारा उन को बालने की आवश्यकता हो तो उन के स्थान में कोई दूसरे शब्द जो ठीक बैठते हों, बोले जायें ।

बस उन्हीं को—'जो संज्ञा, शब्दों की पुनरुक्ति से बचने के लिये संज्ञाओं के स्थान में बोले जायें— **'सर्वनाम'** कहते हैं ।

यह शब्द तीनों लिङ्गों में आते हैं, अतः मुख्य २ सर्वनामों के तीनों लिङ्गों के रूप नीचे दिये जाते हैं । कई विभक्तियों वा वचनों में साधारण संज्ञाओं के रूपों से इनके रूपों में बहुत अन्तर हो जाता है ।

पुंल्लिङ्ग 'सर्व' सब शब्द

विभक्ति	कारक	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	कर्ता	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
२ या	कर्म	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
३ या	करण	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
४ थीं	सम्प्रदान	सर्वस्मै	,,	सर्वेभ्यः
५ मी	अपादान	सर्वस्मात्-द्	,,	,,
६ ष्ठी	सम्बन्ध	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
७ मी	अधिकरण	सर्वस्मिन्	,,	सर्वेषु

स्मर्तव्य—१. सर्वनाम के रूपों में—प्रथमा के बहुवचन में, चतुर्थी, पञ्चमी, सप्तमी के एक वचनों में और षष्ठी के बहुवचन में ही साधारण शब्दों से फर्क

होता है।

२. सर्वनामों का प्रायः सम्बोधन नहीं होता।

स्त्रीलिंग 'सर्व' शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
२ या	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
३ या	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
४ थी	सर्वस्यै	,,	सर्वाभ्यः
५ मी	सर्वस्याः	,,	,,
६ ष्ठी	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
७ मी	सर्वस्याम्	,,	सर्वासु

नपुंसकलिंग 'सर्व' शब्द के रूप

१ मा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
२ या	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

नपुंसक लिङ्ग में बाकी विभक्तियों में पुँल्लिङ्ग के समान ही रूप होते हैं।

विश्व, कतर, कतम, अन्य, अन्यतर, इतर, पूर्व, पर, दक्षिण, उत्तर, अपर, अधर और एक इन सर्वनामों का भी सर्व शब्द के समान रूप-समूह होगा।

विशेष—कतर, कतम, अन्य, अन्यतर, इतर इन शब्दों के नपुंसक लिंग के प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के

एक वचन में म् की जगह त् आ जाता है। जैसे :— कतरत्, कतमत्, अन्यतरत्, इतरत्।

व्यञ्जनान्त सर्वनाम

स्मर्त्तव्य— १. व्यञ्जनान्त सर्वनामों का अन्तिम व्यञ्जन (नपुंसकलिङ्ग प्रथमा, द्वितीया के एक वचन को छोड़ कर) उड़ जाता है।

२. इदम् शब्द का अन्तिम व्यञ्जन 'म' किसी भी लिङ्ग में नहीं उड़ता।

३. तद्, एतद् के 'त्' को प्रथमा के एकवचन में 'स्' हो जाता है।

तद् 'वह' पुंल्लिग (निर्देश-बोधक) तद् 'वह' स्त्रीलिंग

सः	तौ	ते	प्रथमा	सा	ते	ताः
तम्	तौ	तान्	२ या	ताम्	ते	ताः
तेन्	ताभ्याम्	तैः	३ या	तया	ताभ्याम्	ताभिः
तस्मै	,,	तेभ्यः	४ र्थी	तस्यै	,,	ताभ्यः
तस्मात्	,,	,,	५ मी	तस्याः	,,	,,
तस्य	तयोः	तेषाम्	६ ष्ठी	,,	तयोः	तासाम्
तस्मिन्	तयोः	तेषु	७ मी	तस्यां	,,	तासु

नपुंसकलिंग 'तद' (वह) शब्द

१ मा	तत्-द्	ते	तानि
२ या	तत्-द्	ते	तानि

शेष पुलिङ्ग के समान होंगे।

इसी तरह यद्, एतद् शब्दों के रूप चलेंगे। जैसे—

'यद्' (जो) शब्द के रूप

पुल्लिङ्ग	यः	यौ	ये
स्त्रीलिङ्ग	या	ये	याः
नपुंसकलिङ्ग	यत्-द्	ये	यानि

'एतद्' (यह) शब्द के रूप

पुंल्लिङ्ग	एषः	एतौ	एते
स्त्रीलिङ्ग	एषा	एते	एताः
नपुंसकलिङ्ग	एतत्-द्	एते	एतानि

सर्वनाम 'इदम्' (यह) शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	अयम्	इमौ	इमे
२ या	इमम्	इमौ	इमान्
३ या	अनेन	आभ्याम्	एभिः
४ थीं	अस्मै	,,	एभ्यः
५ मी	अस्मात्	,,	,,

६ ष्ठी	अस्य	अनयोः	एषाम्
७ मी	अस्मिन्	अनयोः	एषु

'इदम्'–स्त्रीलिंग **'इदम्'–नपुंसकलिंग**

इयम्	इमे	इमाः	प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
इमाम्	इमे	इमाः	२ या	इदम्	इमे	इमानि
अनया	आभ्याम्	आभिः	३ या			
अस्यै	,,	आभ्यः	४ थी			
अस्याः	,,	,,	५ मी			
,,	अनयोः	आसाम्	६ ष्ठी			
अस्याम्	अनयोः	आसु	७ मी			

नपुंसकलिङ्ग में—शेष रूप पुंलिङ्ग के समान ही होंगे।

'किम' (कौन) शब्द प्रश्न बोधक।

स्मर्तव्य—नपुंसकलिङ्ग प्रथमा के एक वचन को छोड़ कर अन्यत्र सभी जगह किम् को 'क' हो जाता है और सर्व शब्द के समान ही रूप होंगे। जैसे—

पुंल्लिग किम् शब्द **स्त्रीलिंग किम् शब्द**

कः	कौ	के	प्रथमा	का	के	काः
कम्	कौ	कान्	२ या	काम्	के	काः

आगे सर्व शब्द पुंलिङ्ग के समान रूप

आगे सर्व शब्द स्त्रीलिङ्ग के समान रूप

'किम्' शब्द नपुंसकलिंग

किम्	के	कानि	१ मा	शेष पुंल्लिङ्ग की तरह
किम्	के	कानि	२ या	

'अदस्' (वह) शब्द पुंल्लिग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	असौ	अमू	अमी
२या	अमुम्	अमू	अमून्
३या	अमुना	अमूभ्याम्	अमोभिः
४र्थी	अमुष्मै	,,	अमीभ्यः
५मी	अमुष्मात्	,,	,,
६ष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम
७मी	अमुष्मिन्	,,	अमोषु

'अदस्' (वह) स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	असौ	अमू	अमूः
२या	अमूम्	,,	,,
३या	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
४र्थी	अमुष्यै	,,	अमूभ्यः
५मी	अमुष्याः	,,	,,
६ष्ठी	,,	अमुयोः	अमूषाम्
७मी	अमुष्याम्	,,	अमूषु

नपुंसकलिंग 'अदस्' (वह) शब्द

१ मा अदः अमू अमूनि }
२ या अदः अमू अमूनि } आगे पुंलिङ्ग के समान ही रूप होंगे।

'युष्मद्' (तू) शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
२या	त्वाम् (त्वा)	युवाम् (वाम्)	युष्मान् (वः)
३या	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
४र्थी	तुभ्यम् (ते)	युवाभ्याम् (वाम्)	युष्मभ्यम् (वः)
५मी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
६ष्ठी	तव (ते)	युवयोः (वाम्)	युष्माकम् (वः)
७मी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

'अस्मद' (मैं) शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	अहम्	आवाम्	वयम्
२या	माम्	,,	अस्मान्
३या	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
४र्थी	मह्यम्	,,	अस्मभ्यम्
५मी	मत्	,,	अस्मत्
६ष्ठी	मम	अवयोः	अस्माकम्
७मी	मयि	,,	अस्मासु

स्मर्तव्य—१ युष्मद्, अस्मद् शब्दों के तीनों लिङ्गों में एक

समान रूप होंगे।

२. ब्रैकट ( ) के अन्दर लिखे रूप वाक्य आदि में और च, वा के साथ नहीं आते। जैसे—मे पुस्तकम्, ते मे च पुस्तकम् अशुद्ध है।

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद कीजिये :—

सब में गुण हैं। हम में दोष बहुत हैं। जो हरि को भजता है, वह मजा पाता है। तुम दोनों ने क्या देखा? इन में देवता रहते हैं।

२. हिन्दी में अर्थ लिखिए :—

युष्माभिः किं पठितम्? अस्माकं गृहे पशवः सन्ति।
तस्मै मुद्रां देहि। सर्वस्मै मधुरं रोचते। अनया साधु
उक्तम्। युष्मासु धैर्य्यम्। कस्मात् भयं करोषि?

३. नीचे लिखे रूप किस २ शब्द के किस २ विभक्ति में और वचन में हैं?

युवयोः, एते, आवाभ्याम्, अनयोः, अमुष्यै, तस्याः मया, अमूनि, यस्याम्, कस्मिन्।

३. शुद्ध कीजिये—

तवस्य, सर्वाणाम्, मे पुस्तकम्, इदमेन्, अदस्मात्, एषाम्।

विशेषण शब्द

श्वेतं वस्त्रम् (सफेद कपड़ा), चतुरो दासः (चालाक नौकर), मूर्खो नरः (मूर्ख आदमी), इन वाक्यों में श्वेतं, चतुरः, मूर्खः, ये पद क्रम से कपड़े का रंग, नौकर का गुण और मनुष्य का दोष प्रकट करते हैं। इस प्रकार जो शब्द किसी पदार्थ के गुण, दोष, रंग, संख्या और परिमाण (तोल) आदि को प्रकट करें, उन्हे **विशेषण** कहते हैं। जिस पदार्थ के गुण दोष आदि बतलाये जायें, उसे **विशेष्य** कहते हैं।

स्मर्तव्य—विशेष्य का जो लिङ्ग, वचन और विभक्ति या कारक होगा, विशेषण में भी वह लिंग-वचन और विभक्ति या कारक आयेगा।

ये विशेषण **चार** प्रकार के होते हैं। जैसे :—१ गुणवाचक २ संख्या-बोधक, ३ परिमाण बोधक, ४ निर्देशक

१. गुण-बोधक विशेषण—जो किसी का गुण दोष बतलायें जैसा—नीलः, सुन्दरी, चतुरः, मूढ़ः आदि।

२. संख्या-बोधक विशेषण—जो गिनती को प्रकट करें :— द्वौ नरौ में 'द्वौ', तिस्रः कन्यकाः में 'तिस्रः'।

संख्या-बोधक विशेषणों में से कुछ शब्द तीनों लिंगों में चलेंगे। इनका विशेष विवरण सर्वनाम प्रकरण के अनन्तर किया जायगा)

३. **परिमाण-बोधक विशेषण**—जो नाप, तोल, लम्बाई, चौड़ाई बतलाये। जैसे द्रोणो (सेर भर) व्रीहिः (धान)।

४. **निर्देशक विशेषण**--जो किसी पदार्थ की ओर संकेत करें। जैसे—अयम् (यह), सः (वह), भवान् (आप)। निर्देशक विशेषण भी प्रायः सर्वनाम शब्द ही हैं, अतः इन को सार्वनामिक विशेषण भी कहते हैं (सर्वनामों का वर्णन किया जा चुका है)।

तुलना 'तारतम्य' बोधक विशेषण

छात्रयो· पटुतरः (दो विद्यार्थियों में से चतुर),

नराणां आढ्यतमः (सब मनुष्यों में धनी)

इस प्रकार दो में से किसी एक में विशेष गुण दोष की अधिकता करने के लिए, अथवा बहुतों में से किसी एक में किसी गुण दोष की अधिकता बतलाने के लिये तुलना की जाती है। अतः तुलना की तीन अवस्थायें मानी जाती हैं।

१ मूलावस्था, २ उत्तरावस्था, ३ उत्तमावस्था

१. मूलावस्था में गुण-दोष वाचक शब्द अपने सामान्य रूप में ही रहता है। जैसे—पटुः, आढ्यः, लघु, महान, दीर्घः आदि।

२. उत्तरावस्था में जब दो में से एक में अधिकता बतानी हो तो गुण दोष-बाचक शब्द के आगे संस्कृत में 'तर'

लगा दिया जाता है। जैसे—पटुतरः, महत्तरः, आढ्यतर
पवित्रतरः आदि।
यह 'तर' दो में एक की विशेषता प्रकट करने के लि
आता है।

३. उत्तमावस्था से जब बहुत या सब में से किसी एक
अधिकता बतानी हो तब गुण-दोष वाचक शब्द के आ
'तम' लगाते हैं। जैसे—पटुतमः, महत्तमः, आढ्यतम
पवित्रतमः इत्यादि।
ये 'तर' 'तम' गुण-बोधक और परिमाण-बोधक शब्द
से ही आते हैं। संख्या-बोधक तथा निर्देश-बोधक शब्द
से नहीं।

संख्या-वाचक विशेषण

एक, दो, तीन, चार आदि संख्या वाचक शब्द तीन
लिंगों में आते हैं। अतः इन के तीनों लिंगों के रूप बताए
जाते हैं।

'एक' शब्द, पुंल्लिग (सर्वनाम) यह प्रायः एक
वचन में ही रहता है।

१ मा–एकः, २ या–एकम्, ३ या–एकेन, ४ र्थी–एकस्मै,
५ मी–एकस्मात्-द्, ६ ष्ठी–एकस्य, ७ मी–एकस्मिन्।

'एक' शब्द स्त्रीलिंग सर्वनाम

१ मा–एका २ या–एकाम्, ३ या–एकया, ४ र्थी–एकस्यै

५ मी–एकस्याः, ६ ष्ठी–एकस्याः, ७ मी–एकस्याम् ।

नपुंसकलिंग 'एक' शब्द सर्वनाम

१ मा-एकम्, २ या-एकम्, आगे पुल्लिग के समान ।
द्वि शब्द पुंल्लिग 'सर्वनाम' यह द्विवचन में ही रहता है ।
१ मा-द्वौ, २ या-द्वौ, ३ या-द्वाभ्याम्, ४ र्थी-द्वाभ्याम्
५ मी-द्वाभ्याम् ६ ष्ठी-द्वयोः, ७ मी-द्वयोः ।

'द्वि शब्द' स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग

१ मा द्वे, २ या-द्वे शेष पुंल्लिग के समान ।

'त्रि' (तीन) शब्द पुल्लिग

यह बहुवचन में ही रहता है ।
इसके आगे आने वाले चतुर, पञ्चन् आदि सभी शब्द केवल बहुवचन में ही रहेंगे ।

१ मा-त्रयः, २ या-त्रीन्, ३ या-त्रिभिः, ४ र्थी-त्रिभ्यः,
५ मी-त्रिभ्य, ६ ष्ठी-त्रयाणाम्, ७ मी-त्रिषु ।

'त्रि' शब्द स्त्रीलिंग

स्त्रीलिंग में त्रि शब्द के स्थान में 'तिसृ' हो जाता है और रूप इस प्रकार होंगे ।

१ मा-तिस्रः, २ या-तिस्रः, ३ या-तिसृभिः,
४ थीं-तिसृभ्यः, ५ मी-तिसृभ्यः, ६ ष्ठी-तिसृणां,
७ मी-तिसृषु ।

'त्रि' शब्द नपुंसकलिंग

१ मा-त्रीणि, २ या-त्रीणि, आगे पुंलिंग के समान ।

'चतुर' शब्द पुल्लिंग

१ मा—चत्वारः, २ या—चतुरः, ३ या—चतुर्भिः,
४ थीं—चतुर्भ्यः, ५ मी—चतुर्भ्यः ६ ष्ठी—चतुर्णाम्,
७ मी—चतुर्षु ।

'चतुर' शब्द स्त्रीलिंग

स्त्रीलिंग में चतुर शब्द 'चतसृ' हो जाता है और रूप इस तरह होंगे ।

१ मा—चतस्रः, २ या—चतस्रः, ३ या—चतसृभिः,
४ थीं—चतसृभ्यः, ५ मी—चतसृभ्यः, ६ ष्ठी—चतसृणाम्
७ मी—चतसृषु ।

'चतुर' शब्द नपुंसकलिंग

१ मा—चत्वारि, २ या—चत्वारि, शेष पुंल्लिग के समान ।

'पञ्चन' (पांच)

१ मा—पञ्च २ या—पञ्च, ३ या—पञ्चभिः,

४ र्थी—पञ्चभ्यः,   ५ मी—पञ्चभ्यः,   ६ ष्ठी—पञ्चानाम्
७ मी—पञ्चसु ।

'षट्' (छः)

१ मा-षड्-ट,   २ या-षड्-ट,   ३ या-षड्भिः,   ४ र्थी-षड्भ्य ,
५ मी-षड्भ्यः,   ६ ष्ठी-षण्णाम्,   ७ मी-षट्सु ।

'सप्तन्' (सात)

१ मा-सप्त,   २ या-सप्त,   ३ या-सप्तभिः
४ र्थी-सप्तभ्यः,   ५ मी-सप्तभ्यः,   ६ ष्ठी-सप्तानाम्
७ मी-सप्तसु ।

'अष्ट्' (आठ)

१ मा-अष्टौ,   २ या-अष्टौ,   ३ या-अष्टभिः,   अष्टाभिः,
४ र्थी-अष्टाभ्यः, अष्टभ्यः,   ५ मी-अष्टभ्यः,   अष्टाभ्यः,
६ ष्ठी-अष्टानाम्,   ७ मी-अष्टसु, अष्टासु ।

इसके आगे के नवन्, दशन् वगैरह सप्तन् के समान ।

एक से लेकर सौ तक संख्या

स्मर्तव्य—इन्हीं संख्यावाचक शब्दों से पहला, दूसरा, तीसरा, पहली, दूसरी, तीसरी आदि पूर्णार्थक शब्द भी तीनों लिङ्गों में बनते हैं, जो संख्या के साथ साथ ही लिखे जा रहे हैं ।

संख्या

१ एकः
२ द्वौ (पुं०)
  द्वे (स्त्री०)
  द्वे (नपुं०)
३ त्रयः (पुं०)
  तिस्रः (स्त्री०)
  त्रीणि (नपुं०)
४ चत्वारः (पुं०)
  चतस्रः (स्त्री०)
  चत्वारि (नपुं०)

संख्या	पूर्णार्थक पुं०	पूर्णार्थक स्त्री०	पूर्णार्थक नपुं०
१	प्रथमः	प्रथमा	प्रथमम्
२	द्वितीयः	द्वितीया	द्वितीयम्
३	तृतीयः	तृतीया	तृतीयम्
४	चतुर्थः	चतुर्थी	चतुर्थम्
५	पञ्चमः	पञ्चमी	पञ्चमम्
६ षट-ड्	षष्ठः	षष्ठी	षष्ठम्
७ सप्त	सप्तमः	सप्तमी	सप्तमम्
८ अष्टौ	अष्टमः	अष्टमी	अष्टमम्
९ नव	नवमः	नवमी	नवमम्

१० दश	दशम:	दशमी	दशमम्
११ एकादश	एकादश:	एकादशी	एकादशम्
१२ द्वादश	द्वादश:	द्वादशी	द्वादशम्
१३ त्रयोदश	त्रयोदश:	त्रयोदशी	त्रयोदशम्
१४ चतुर्दश	चतुर्दश:	चतुर्दशी	चतुर्दशम्
१५ पञ्चदश	पञ्चदश:	पञ्चदशी	पञ्चदशम्
१६ षोडश	षोडश:	षोडशी	षोडशम्
१७ सप्तदश	सप्तदश:	सप्तदशी	सप्तदशम्
१८ अष्टादश	अष्टादश:	अष्टादशी	अष्टादशम्
१९ एकोनविंशतिः	एकोनविंश:	एकोनविंशी	एकोनविंशम्
	एकोनविंशतितम:	एकोनविंशतितमा	एकोनविंशतितमम्
२० विंशतिः	विंश:	विंशी	विंशम्
	विंशतितम:	(०तमा)	(०तमम्)
२१ एकविंशतिः	एकविंश:	(०विंशी)	(विंशम्)
	एकविंशतितम:	(०तमा)	(०तमम्)
२२ द्वाविंशति	द्वाविंश:	(०विंशी)	(०विंशम्)
	द्वाविंशतितम:	(०तमा)	(०तमम्)
२३ त्रयोविंशतिः	त्रयोविंश:	(०विंशी)	(०तमम्)
२४ चतुर्विंशतिः	चतुर्विंश:	(०विंशी:)	(०विंशम्)
	चतुर्विंशतितम:	(०तमा)	(०तमम्)

२५ पञ्चविंशतिः	पञ्चविंशः	(०विंशी)	(०विंशम्)
	पञ्चविंशतितमः	(०तमा)	(०तमम्)
२६ षड्विंशतिः	षड्विंशः	(०विंशी)	(०विंशम्)
	षड्विंशतितमः	(०तमा)	(०तमम्)
२७ सप्तविंशतिः	सप्तविंशः	(०विंशी)	(०विंशम्)
	सप्तविंशतितमः	(०तमा)	(०तमम्)
२८ अष्टाविंशतिः	अष्टाविंशः	(०विंशी)	(०विंशम्)
	अष्टाविंशतितमः	(०तमा)	(०तमम्)
२९ एकोनत्रिंशत्	एकोनत्रिंशः	(०त्रिंशी)	(०त्रिंशम्)
	एकोनत्रिंशत्तमः	(०त्तमा)	(०त्तमम्)
३० त्रिंशत्	त्रिंशः	त्रिंशी	त्रिंशम्
	त्रिंशत्तमः	त्रिंशत्तमा	त्रिंशत्तमम्
३१ एकत्रिंकत्	एकत्रिंशः	(०त्रिंशी)	(०त्रिंशम्)
	एकत्रिंशत्तमः	(०त्तमा)	(०त्तमम्)
३२ द्वात्रिंशत्	द्वात्रिंशः	द्वात्रिंशी	द्वात्रिंशम्
	द्वात्रिंशत्तमः	(०त्तमा)	(०त्तमम्)
३३ त्रयस्त्रिंशत्	त्रयस्त्रिंशः	(०त्रिंशी)	(०त्रिंशम्)
	त्रयस्त्रिंशत्तमः	(०त्तमा)	(०त्तमम्)
३४ चतुस्त्रिंशत्	चतुस्त्रिंशत्तमः	चतुस्त्रिंशः	(०शत्तमः)
चतुस्त्रिंशी	(०शत्तमा)	चतुस्त्रिंशम्	(०शत्तमम्)

३५ पञ्चत्रिंशत् पञ्चत्रिंशः (शत्तमः)
पञ्चत्रिंशी (शत्तमा) पञ्चत्रिंशम् (शत्तमम्)

३६ षट्त्रिंशत् षड्त्रिंशः (शत्तमः) षट् त्रिंशी (शत्तमा)।
षट्त्रिंशम् (शत्तमम्)

३७ सप्तत्रिंशत् सप्तत्रिंशः शत्तमः सप्तत्रिंशी 'शत्तमा'
सप्तत्रिंशं 'शत्तमम्'

३८ अष्टत्रिंशत् अष्टत्रिंशः (,,) अष्टात्रिंशी 'शत्तमम्'
अष्टात्रिंशम् 'शत्तमा'

३९ एकोनचत्वारिंशत् एकोनचत्वारिंशः (,,) एकोनचत्वारिंशी
एकोनचत्वारिंशम्
,, एकोनचत्वारिंशत्तमः एकोनचत्वारिंशत्तमा
एकोनचत्वारिंशत्तम

४० चत्वारिंशत् चत्वारिंशः (शत्तमः) चत्वारिंशी (शत्तमा)
चत्वारिंशम् शत्तमम्)

४१ एकचत्वारिंशत्...शः त्तमः...शी त्तमा शं...त्तमम्
४२ द्विचत्वारिंशत् ...शः त्तमः...शी त्तमा...शं..त्तमम्
द्वाचत्वारिंशत् .. शः त्तमः शी त्तमा.. शं त्तमम्
४३ त्रिचत्वारिंशत्...शः त्तमः शी त्तमा...शं.. त्तमम्
त्रयश्चत्वारिंशत्...शः त्तमः.. शी त्तमा...शं .. त्तमम्
४४ चतुश्चत्वारिंशत्...शः त्तमः...शी त्तमा...शं....त्तमम्

४५ पञ्चचत्वारिंशत् शः त्तमः...शी त्तमा शं ..त्तमम्

४६ षटचत्वारिंशत्.. शः त्तमः...शी त्तमा शं त्तमम्

४७ सप्तचत्वारिंशत् शः त्तमः.. शी त्तमा.. श त्तमम्

४८ अष्टचत्वारिंशत् शः त्तमः शी त्तमा...शं . त्तमम्

अष्टचत्वारिंशत्.. शः त्तमः...शो त्तमा .. शं... त्तमम्

४९ एकोनपञ्चाशत्

एकोनपञ्चाशत्तमः शत्तमा शत्तमम्

५० पञ्चाशत् पञ्चाशत्तमः पञ्चाशमा पञ्चाशत्तमम्

इसके आगे पूर्णार्थंक बनाने के लिये संख्या के बाद केवल पुंल्लिग में तमः, स्त्रीलिंग में 'तमा' नपुंसकलिंग में 'तमम्' ही लगाया जायेगा। आगे केवल संख्या ही लिखी है।

५१ एकपञ्चाशत् ५२ द्विपञ्चाशत् ५३ त्रिपञ्चाशत्

द्वापञ्चाशत् त्रयपञ्चाशत्

५४ चतुष्पञ्चाशत्

५५ पञ्च-पञ्चाशत् ५६ षट् पञ्चाशत् ५७ सप्तपञ्चाशत्

५८ अष्टपञ्चाशत्

५९ एकोनषष्टिः ६० षष्टिः ६१ एकषष्टिः ६२ द्विषष्टिः द्वाषष्टिः ६३ त्रिषष्टिः (त्रयः षष्टिः) ६४ चतुःषष्टि ६५ पञ्चषष्टिः ६६ षट्षष्टिः ६७ सप्तषष्टिः ६८ अष्ट (अष्टा) षष्टिः ६९ एकोनसप्ततिः ७० सप्ततिः ७१ एक सप्ततिः ७२ द्विसप्ततिः द्वासप्ततिः ७३ त्रिसप्ततिः, त्रयः सप्तति ७४ चतुः सप्ततिः ७५ पञ्चसप्ततिः ७६ षट्सप्ततिः

७७ सप्त सप्ततिः ७८ अष्टसप्ततिः, अष्टासप्ततिः ७६ एकोनशीतिः ८० अशीतिः ८१ एकाशीतिः ८२ द्वयशीतिः ८३ त्र्यशीतिः ८४ चतुरशीतिः ८५ पञ्चाशीतिः ८६ षडशीतिः ८७ सप्ताशीतिः ८८ अष्ट शीतिः ८६ एकोननवतिः ६० नवतिः ६१ एकनवतिः ६२ द्वि (द्वा) नवतिः ६३ त्रिनवतिः ६४ चतुर्नवतिः ६५ पञ्चनवतिः ६६ षण्णवतिः ६७ सप्तनवतिः ६८ अष्ट (ष्टा) नवतिः ६६ एकोनशतम् १०० शतम् ।

सौ से ऊपर की कुछ संख्याएं—

एक शतम्=१०० एक सौ, द्वि शतम्=दो सौ, त्रिशतम्=तीन सौ सहस्रम्=हज़ार, अयुतम्=दस हजार, लक्षम्=लाख, नियुतम्=दस लाख, कोटिः=करोड़ ।

अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

त्रिंशोऽध्यायः । एकोनपञ्चाशत्तमा पुरी । अयुतं मनुष्याः । एकनवतिः फलानि । द्वयशीतिः वस्त्राणि । तिस्रः कोटीः ।

२, संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

पचासवां अध्याय । बीसवीं सदी । पैंसठ राजदूत । अठत्तर पुस्तकें । सत्तासी नगरियां । दो हज़ार सिपाही ।

३. इन संख्याओं को संस्कृत में बताइए :—

२४, २६, ३८, ५१. ६५, ८६, ८६, ६३ ।

अव्यय

व्यय का अर्थ है—विकार, अव्यय का अर्थ है– विकार-रहित। इस प्रकार जिन शब्दों में कभी कोई विकार नहीं होता, वे **अव्यय** कहलाते हैं।

इस के **चार** मुख्य भेद हैं :—

१ उपसर्ग २ निपात ३ साधारण अव्यय ४ क्रिया विशेषण अव्यय।

१. **उपसर्ग**—उप का अर्थ है पास—सर्ग का अथ है—बनाना या बदलना। इस प्रकार जो अव्यय किसी धातु के पास रह कर उसके असली अर्थ को बदल दें, उन्हें उपसर्ग कहते हैं। उदाहरणत.—हृ धातु से हार बनता है, जिसका अर्थ ले जाना होता है, परन्तु अलग अलग उपसर्ग लगाने से इस का अर्थ बिलकुल बदल जाता है। जैसे—प्रहार= मारना, आहार=खाना, संहार समाप्त करना, बिहार= घूमना, परिहार=छोड़ना। इसी प्रकार और धातुओं के साथ जुड़ कर भी उपसर्ग उन धातुओं के अर्थ को बदल देते हैं। से– गच्छति=जाता है, आगच्छति=आता है। ये उपसर्ग २२ हैं–

प्र-परा—अप—सम्—अनु—अव—निस्— निर्— दुस्— दुर् वि—आङ्—नि—अधि—अपि—अति— सु— उत— अभि— प्रति—परि—उप।

इन उपसर्गों का धातुओं के साथ प्रयोग होने से धातुओं के

अर्थ में बहुत ही परिवर्तन हो जाता है, जो धातुओं के वर्णन के प्रसङ्ग में किया जायगा।

स्मरणीय—कभी कहीं कहीं उपसर्ग से धातु का अर्थ नहीं भी बदलता। जैसे—आगच्छति=आता है, अध्यागच्छति= आता है। यहां अधि निरर्थक उपसर्ग है।

२. **निपात**—जिन अव्ययों का प्रसंग के अनुसार अर्थ बदलता रहे अर्थात् एक ही अव्यय के जगह जगह कई अर्थ हो जायें, उन्हें निपात कहते हैं। जैसे—'इति' अव्यय समाप्ति के अर्थ में होता है, परन्तु "इत्याह" इस वाक्य में वह पीछे कहो कही गई बात का बोधक हो जाता है। इत्याह=यह कहा।

इसी प्रकार च का भी समुच्चय कभी विकल्प अर्थ हो जाता है।

निपात असंख्य हैं जिन में से कुछ ये हैं—च, वा, हा, एवं, नूनम्, किल, अहो।

३. **साधारण अव्यय**—उपसर्ग और निपातों के अतिरिक्त ऐसे ही कुछ और शब्द जो सदा सब जगह एक रूप हों, वे साधारण अव्यय कहलाते हैं। साधारण अव्यय बहुत से हैं, जिन में से मुख्य मुख्य ये हैं :—

अतः=इस लिये	इति=समाप्ति	बहुधा=बहुत बार
अद्य=आज	इव=समान	कदा=कब
अत्र=यहां	एव=ही	चेत्=अगर

अथ=प्रारम्भ	एवम्=इस तरह (यों)	खलु=अवश्य
अथवा=या	उच्चैः=ऊंचा	तूष्णीम्=चुपचाप
अधः=नीचे	नीचैः=नीचे	अलम्=बस
अधुना=अब	शनैः=धीरे	नूनम्=अवश्य
अपि=भी	मिथः=आपस में	पुरः=आगे
इतः=इधर से	मुहुः=बार २	पुनः=फिर, दोबारा
प्रायः=अक्सर	प्रातःसवेरे	भूयः=फिर, दोबारा
सकृत्=एकबार	सायम्=सांझ में	दिवा=दिन में

श्वः=कल (आने वाला)—ह्यः=कल (पिछला दिन)
सततम्=लगातार ।

४. **क्रिया-विशेषण अव्यय**—जो अव्यय क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं, उन्हें क्रियाविशेषण अव्यय कहते हैं। जैसे—शनैः गच्छति (धीरे से जाता है)। अशु वदति—जल्दी से बोलता है। उच्चैर्गायति=ऊंचे गाता है इत्यादि।

अभ्यास

१. अव्यय के कितने भेद हैं? प्रत्येक भेद का स्पष्टीकरण कीजिए।

२. कुछ वाक्य ऐसे बनाइए जिन में नीचे लिखे अव्ययों का उपयोग किया गया हो—

च, वा, अहो, नूनम् एवम् अधः, इतः, चेत्, मिथः, भयः, शनैः ।

तृतीय खण्ड

प्रथम अध्याय

गण प्रकरण

तिङन्त

शब्द परिचय में लिखा जा चुका है कि संस्कृत भाषा के शब्द **दो** तरह के हैं, १. सुबन्त, २. तिङन्त । उनमें अब तिङन्त का वर्णन किया जाता है। तिङन्त शब्द धातुओं से बनते हैं।

धातु—शब्दों की उस मूल प्रकृति को कहते हैं, जिस के परे कुछ प्रत्यय जोड़ने से क्रिया शब्द या नाम शब्द बन जाते हैं।

क्रिया

'गांधी बदति' गांधी जी कहते हैं. इस वाक्य में गांधी जी कहने का काम कर रहे हैं। यहां 'बदति' क्रिया है । क्रिया उसे कहते है जिस से कुछ करना या होना पाया जाये। ये क्रियायें धातुओं से बनती हैं। धातु **दो** तरह के हैं । कुछ **परस्मैपदी** कुछ **आत्मनेपदी** ।

जिन धातुओं के बाद 'ति, तः, अन्ति' आदि प्रत्यय लगते हैं, वे **'परस्मैपदी'** कहलाते हैं, और जिन के परे 'ते, आते, अन्ते' आदि प्रत्यय आयें, उन्हें, **'आत्मनेपदी'** कहते हैं। कुछ धातु ऐसे

भी होते हैं जिन के परे दोनों ही प्रकार के प्रत्यय आते हैं। उनको **उभयपदी** धातु कहते हैं।

ये प्रत्यय परस्मैपद के ९ और आत्मनेपद के भी ९. कुल मिला कर १८ हैं, इन्हीं को **'तिङ्'** कहते हैं और जिन के आगे ये आयें उन शब्दों को **तिङन्त'** कहते हैं।

परस्मैपद के ९ प्रत्ययों तथा आत्मनेपद के ९ प्रत्ययों के तीन तीन वर्ग हैं जिन्हें क्रम से १ प्रथम पुरुष, २ मध्यम पुरुष और ३ उत्तम पुरुष कहते हैं। हर एक पुरुष में तीन तीन प्रत्यय हैं जो क्रम से एकवचन, द्विवचन, बहुवचन कहे जाते हैं। नीचे परस्मैपद और आत्मनेपद के मूल प्रत्यय अलग अलग दिये जाते हैं—

परस्मैपद के प्रत्यय

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र पु०	ति	तः	अन्ति
म. पु०	सि	थः	थ
उ. पु०	मि	वः	मः

आत्मनेपद के प्रत्यय

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र. पु०	ते	आते	अन्ते
म. पु०	से	आये	ध्वे
उ. पु०	ए	वहे	महे

पुरुष व्यवस्था

१. क्रिया करने वाला कर्त्ता यदि स्वयं कह रहा है कि मैं कह रहा हूं, तो उस में **उत्तमपुरुष** ही आता है और कर्त्ता सदा अस्मद शब्द ही रहेगा। अर्थात् यदि कर्ता का बोध अस्मद्

शब्द से हो तो क्रियापद में उत्तम पुरुष के प्रत्यय लगते हैं।

२ या कहने वाले के सामने कोई दूसरा क्रिया करने वाला हो जिस को कहने वाला निर्देश करे 'तू' कर रहा है तो उसमें **मध्यमपुरुष** ही आयेगा और कर्त्ता सदा युष्मद् शब्द ही रहता है। अर्थात् यदि कर्त्ता का उल्लेख युष्मद् शब्द से हो तो क्रियापद में मध्यमपुरुष के प्रत्यय लगते हैं।

३. यदि कहने वाले अथवा निर्देश किये जाने वाले, दोनों कर्त्ताओं से अलग कोई कर्त्ता हो तो उस सदा **प्रथम पुरुष** होगा। युष्मद् और अस्मद् के बिना और जो भी शब्द कर्त्ता हो, वहां सदा प्रथमपुरुष ही आयेगा।

वचन

एक कर्त्ता हो तो **एकवचन** दो कर्त्ता हों तो **द्विवचन** और बहुत से कर्त्ता हों तो **बहुवचन** होता है।

काल या लकार

हर एक क्रिया का किसी न किसी काल से सम्बन्ध होता है। कोई क्रिया वर्त्तमान समय में हो रही है, कोई हो चुकी होगी या होने वाली होगी। जो समय इस वक्त सामने है इसे **'वर्तमान काल'** कहते हैं। जो बीत चुका है, उसे भूतकाल कहते हैं और जो आने वाला है, उसे **'भविष्यत काल'** कहते हैं। भिन्न भिन्न कालों में धातुओं के अलग अलग प्रकार

के रूप चलेंगे और हर एक काल में अलग अलग प्रत्यय आयेंगे इन प्रत्ययों को ही **'लकार'** कहते हैं। यह मुख्य रूप में **पांच** हैं।

१· **लट्**=वर्त्तमान काल, २. **लोट्**=आज्ञा, ३. **विधि लिङ्**=सम्भावना, निमन्त्रण आदि, ४. **लङ्**=भूतकाल ५. **लृट्**=भविष्यत काल

लकार स्वयं बोलने या सुनने में नहीं आता, उसकी जगह सदा परस्मैपद या आत्मनेपद का कोई न कोई प्रत्यय आ जाता है।

हर एक लकार के भिन्न २ प्रत्यय हैं। जो प्रत्यय परस्मैपद और आत्मनेपद के पहले लिखे गये हैं. वे मूल प्रत्यय हैं। हर एक लकार में इन्हीं में कुछ २ परिवर्तन हो जाता है, जो उन २ लकारों के वर्णन के समय बतलाया जायेगा।

गण व्यवस्था

प्रायः धातुओं से परे सीधे ति, तः, अन्ति आदि प्रत्यय नहीं आते। धातु और ति. तः अन्ति आदि के बीच में कुछ और भी अक्षर आ जाते है। जैसे 'पठति' इसमें पठ और ति के मध्य 'अ' पठ्+अ+ति=पठति। धातु और प्रत्ययों के बीच जो अक्षर आते हैं, उन्हें 'विकरण' कहते हैं। जिन जिन धातुओं से एक ही प्रकार का विकरण आता है, उन्हीं उन्हीं धातुजों का एक एक वर्ग बना दिया गया है जिसे गण कहते हैं। गण की पहली धातु के नाम पर ही उस का नाम रख

दिया गया है। जैसे—भ्वादिगण, अदादिगण। ये सब गण कुल १० हैं। कुछ यहां दिये गये हैं। सब में अलग अलग विकरण आते हैं। पहला गण भ्वादिगण है। इसमें 'अ' विकरण आता है। प्रायः इसी गण की क्रियायें अधिकतर प्रयोग में आती हैं। नीचे भ्वादिगण की पठ् धातु के अलग अलग लकारों के अलग अलग प्रत्यय और अलग अलग रूप लिखे जाते हैं।

भ्वादिगण—परस्मैपद पठ् (पढ़ना) धातु के रूप

वर्तमान काल लट् लकार के प्रत्यय

पुरुष—	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ति	तः	अन्ति
मध्यम पुरुष	सि	थः	थ
उत्तम पुरुष	मि	वः	मः

धातु—पठ्—विकरण—अ, प्रत्यय—ति, पठ्+अ+ति=पठति। इसी तरह लट् लकार के बाकी रूप भी बनेंगे।

पठ् (पढ़ना) लट् लकार

प्रथम पुरुष—	(सः)	पठति
(तौ) पठतः	(ते)	पठन्ति
मध्यम पुरुष—	(त्वं)	पठसि
(युवां) पठथः	(यूयं)	पठथ
उत्तम पुरुष—	(अहं)	पठामि
(आवां) पठावः	(वयं)	पठामः

स्मर्तव्य—मि, वः, मः, परे आने पर ह्रस्व अ को दीर्घ आ हो जाता है। जैसे—पठामि, पठावः, पठामः।

लोट् लकार (आज्ञा) के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	तु	ताम्	अन्तु
मध्यम पु०	हि (अथवा-कुछ नहीं)	तम	त
उत्तम पु०	आनि	आव	आम

पठ् धातु लोट् के रूप

प्र० पु०	पठतु	पठताम्	पठन्तु
म० पु०	पठ	पठतम्	पठत
उ० पु०	पठानि	पठाव	पठाम

लिङ् लकार (विधि, निमन्त्रण आदि) के प्रत्यय

प्र० पु०	एत्	एताम्	एयुः
म० पु०	एः	एतम्	एत
उ० पु०	एयम्	एव	एम

'पठ' लिङ् लकार के रूप

प्र० पु०	पठेत्-द्	पठेताम्	पठेयुः
म० पु०	पठेः	पठेतम्	पठेत
उ० पु०	पठेयम्	पठेव	पठेम

लङ् लकार (भूत काल) के प्रत्यय

प्र० पु०	त्	ताम्	अन्
म० पु०	:	तम्	न
उ० पु०	म्	व	म

'पठ्' लङ् लकार के रूप

स्मर्तव्य—लङ् लकार में व्यञ्जनादि धातु से पूर्व 'अ' आता है और स्वरादि धातु के पूर्व 'आ' हो जाता है तथा 'अ' को धातु के स्वर के साथ वृद्धि सन्धि हो जाती है।

प्र० पु०	अपठत्-द्	अपठताम्	अपठन्
म० पु०	अपठः	अपठतम्	अपठत
उ० पु०	अपठम्	अपठाव	अपठाम

लृट् लकार भविष्यत् काल के प्रत्यय

स्मर्तव्य—ये प्रत्यय दो प्रकार के हैं :—

प्र० पु०	इष्यति	स्यति,	इष्यतः
	स्यतः,	इष्यन्ति	स्यन्ति ।
म० पु०	इष्यसि	स्यसि,	इष्यथः
	स्यथः,	इष्यथ	स्यथ ।
उ० पु०	इष्यामि	स्यामि,	इष्यावः
	स्यावः,	इष्यामः	स्यामः ।

कई धातुओं से परे इ वाले प्रत्यय आते हैं, कइयों से इ रहित और कइयों से दोनों तरह के : पठ् धातु से इ वाले ही आते हैं ।

'पठ्' लृट् लकार के रूप

प्र० पु०	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
म० पु०	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उ० पु०	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

स्मर्तव्य— १. लृट लकार में जिन धातुओं से परे 'इष्यति' आदि इ वाले प्रत्यय आयेंगे, उन धातुओं को सेट् धातु कहेंगे। जिन के परे 'स्यति' आदि प्रत्यय आयेंगे उन्हें अनिट् धातु कहेंगे। जैसे—दास्यति—देगा।

२. लृट् लकार में किसी भी गण में विकरण नहीं आता है। भ्वादि गण के दूसरे परस्मैपदी धातुओं के रूप भी पठ् के समान ही होंगे। कुछ के रूप उधाहरण के तौर पर थोड़े से यहां दिये जाते हैं—

धातु	अर्थ	लट्	लोट्
गम् (गच्छ)	जाना	गच्छति	गच्छतु
हस्	हंसना	हसति	हसतु
रक्ष्	रक्षा करना	रक्षति	रक्षतु
वद्	बोलना	वदति	वदपु
स्था (तिष्ठ्)	ठहरना	तिष्ठति	तिष्ठतु

धातु	अर्थ	लट्	लोट्
क्रीड्	खेलना	क्रीडति	क्रीडतु
नम्	झुकना	नमति	नमतु
दृश् (पश्य्)	देखना	पश्यति	पश्यतु
स्मृ (स्मर)	याद करना	स्मरति	स्मरतु
पा (पिव्)	पीना	पिवति	पिवतु
त्यज्	छोड़ना	त्यजति	त्यजतु
खाद्	खाना	खादति	खादतु
वाञ्छ्	चाहना	वाञ्छति	वाञ्छतु
बस्	रहना	बसति	बसतु
चर्	घूमना (खाना)	चरति	चरतु
पत्	गिरना	पतति	पततु
बुध् (वोध)	जानना	बोधति	बोधतु
भू (भव्)	होना	भवति	भवतु

नोट :—	विधिलिङ्	लङ्	लृट्
ऊपर दिये धातुओं के क्रमानुसार लिङ् लङ् और लृट में रूप	गच्छेत्-द्	अगच्छत्-द्	गमिष्यति
	हसेत्-द्	अहसत्-द्	हसिष्यति
	रक्षेत्-द्	अरक्षत्-द्	रक्षिष्यति
	वदेत्-द्	अवदत्-द्	वदिष्यति
	तिष्ठेत्	अतिष्ठत्-द्	स्थास्यति

विधिलिङ्	लङ्	लृट्
क्रीडेत्-द्	अक्रीडत्-द्	क्रीडिष्यति
नमेत्-द्	अनमत्-द्	नस्यति
पश्येत्-द्	अपश्यत्-द्	द्रक्ष्यति
स्मरेत्-द्	अस्मरत्-द्	स्मरिष्यति
जयेत्-द्	अजयत्-द्	जेष्यति
पिवेत्-द्	अपिवत्-द्	पास्यति
त्यजेत्-द्	अत्यजत्-द्	त्यक्ष्यति
खादेत्-द्	अखादत्-द्	खादिष्यति
वाञ्छेत्-द्	अवाञ्छत्-द्	वाञ्छिष्यति
बसेत्-द्	अबसत्-द्	वत्स्यति
चरेत्-द्	अचरत्-द्	चरिष्यनि
पतेत्-द्	अपतत्-द्	पतिष्यति
बोधेत्-द्	अबोधत्-द्	बोधिष्यति
भवेत्-द्	अभवत्-द्	भबिष्यति

श्रु (शृणु) धातु (सुनना)

इस में ति, सि, परे होने पर, उ को ओ गुण हो जाता है। अन्ति आदि स्वरादि प्रत्यय परे आने पर 'उ' को 'व्' अर्थात् यण्सन्धि हो जाती है। इस धातु में भ्वादिगण का होने पर भी 'अ' विकरण नहीं आता।

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति

मध्यम पुरुष	शृणोषि	शृणुथः	शृणथ
उत्तम पुरुष	शृणोमि	'शृणुवः' शृण्वः	शृणुमः शृण्मः

स्मर्तव्य—व, म परे होने पर पक्ष में उ का लोप भी हो जाता है।

लोट् (आज्ञा)

प्र० पु०	शृणोतु	शृणुताम्	शृण्वन्तु
म० पु०	शृणु	शृणुतम्	शृणत
उ० पु०	शृण्वानि	शृण्वाव	शृण्वाम

लङ् (भूतकाल)

प्र० पु०	अशृणोत्-द्	अशृणुताम्	अशृण्वन्
म० पु०	अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत
उ० पु०	अशृणुव	अशृणुव (अशृण्व)	अशृणुम (अशृण्म)

विधिलिङ् (विधि निमन्त्रणादि)

प्र० पु०	शृणुयात्-द्	शृणुयाताम्	शृणुयुः
म० पु०	शृणयाः	शृणयाताम्	शृणयात
उ० पु०	शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम

स्मर्तव्य—विधिलिङ् में इस धातु में एत्, एताम्, एयुः आदि प्रत्ययों के बजाय, यात्, याताम्, युः, आदि प्रत्यय आते हैं।

लृट् (भविष्यत् काल)

प्र० पु०	श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति
म० पु०	श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ
उ० पु०	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः

स्मर्तव्य—लृट् लकार में शृणु के स्थान मूल रूप श्रु ही रहेगा और उस के 'उ' को सभी प्रत्ययों में 'ओ' गुण हो जाता है।

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

तू जानता था। मैं गांव को गया। मुनि से सीखना चाहता है। ज्ञान से धन अधम है। वृक्ष से पत्ता गिरेगा। मैं रोटी खाऊंगा। तुम दो देख रहे थे। हम सब स्कूल जायेंगे। मनुष्य सब प्राणियों में श्रेष्ठ है। स्वतन्त्रता की रक्षा करो। क्या तुमने सुना ?

२. हिन्दी में अर्थ लिखिए :—

शूराः रणे रिपुं जयन्ति। भारतीयाः स्वधर्मं रक्षिष्यन्ति। यूयं वेदान् पठत। वयं शास्त्राणि रक्षेम। बुधाः ज्ञानरसं पिबन्तु। अवगुणान् त्यजत। भरतः सदा शत्रून् अजयत्। किम् अहं शृणयाम् ?

आत्मनेपद के प्रत्यय

जिस तरह परस्मैपद में हर एक लकार के अलग अलग प्रत्यय हैं, उसी तरह आत्मनेपद में भी हर एक लकार के अलग २ प्रत्यय हैं, जो क्रमशः नीचे लिखे जाते हैं—

आत्मनेपद के लट् लकार के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	ते	एते	अन्ते
मध्यम पुरुष	से	एथे	ध्वे
उत्तम पुरुष	ए	वहे	महे

आत्मनेपदी लभ् (पाना) धातु के वर्तमान काल लट् के रूप

प्र० पु०	लभते	लभेते	लभन्ते
म० पु०	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उ० पु०	लभे	लाभवहे	लाभमहे

आत्मनेपद लोट् लकार के प्रत्यय

प्र० पु०	ताम्	एताम्	अन्ताम्
म० पु०	स्व	एथाम्	ध्वम्
उ० पु०	ए	आवहै	आमहै

लभ धातु लोट् (आज्ञा) के रूप

प्र० पु०	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
म० पु०	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उ० पु०	लभे	लभावहै	लभामहै

आत्मनेपद लङ् (भूतकाल) के प्रत्यय

प्र० पु०	त	एताम्	अन्त
म० पु०	थाः	एथाम्	ध्वम्
उ० पु०	ए	वहि	महि

लभ् धातु लङ् (भूतकाल) के रूप

प्र० पु०	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
म० पु०	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उ० पु०	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

आत्मनेपद लिङ् के प्रत्यय

प्र० पु०	एत	एयाताम्	एरन्
म० पु०	एथाः	एयाथाम्	एध्वम्
उ० पु०	एय	एवहि	एमहि

लभ् धातु लिङ् (विधि, निमन्त्रण आदि) के रूप

प्र० पु०	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
म० पु०	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उ० पु०	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

आत्मनेपद लृट् लकार के प्रत्यय

प्र० पु०	इष्यते (स्यते)	इष्येते (स्येते)	इष्यन्ते (स्यन्ते)
म० पु०	इष्यसे (स्यसे)	इष्येथे (स्येथे)	इष्यध्वे (स्यध्वे)
उ० पु०	इष्ये (स्ये)	इष्यावहे (स्यावहे)	इष्यामहे(स्यामहे)

स्मर्तव्य—कई धातुओं से इ वाले प्रत्यय लगेंगे, कई से इ रहित, कई में दोनों तरह के।

लभ् धातु लृट् लकार (भविष्यत्) के रूप

प्र० पु०	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
म० पु०	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उ० पु०	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

लभ् धातु के समान ही बाकी अ विकरण वाले आत्मनेपदी धातुओं के रूप होंगे। उदाहरण के तौर पर कुछ के रूप दिये जाते हैं:—

धातु	अर्थ	लट्	लोट्
वृध (वर्ध)	बढ़ना	वर्धते	वर्धताम्
वृत् (वर्त)	रहना	वर्तते	वर्तताम्
ईक्ष्	देखना	ईक्षते	ईक्षताम्
सह्	सहना	सहते	सहताम्
मोद	प्रसन्न होना	मोदते	मोदताम्

लिङ्	लङ्	लट्
वर्धेत	अवर्धत	वर्धिष्यते
वर्तेत	अवर्तत	वर्तिष्यते
ईक्षेत	ऐक्षत	ईक्षिष्यते
सहेत	असहत	सहिष्यते
मोदेत	अमोदत	मोदिष्यते

उभयपद

जैसा कि पीछे कहा है कि कई धातुओं में परस्मैपद और आत्मनेपद दोनों के प्रत्यय आ जाते हैं, ऐसे धातुओं को उभयपदी कहते हैं।

उदाहरण के लिए कुछ रूप :—

याच्—मांगना	लट्	लोट्
परस्मैपद	याचति	याचतु
आत्मनेपद	याचते	याचताम
लिङ्	लङ्	लोट्
याचेत्-द्	अयाचत्-द्	याचिष्यति
याचत	अयाचत	याचिष्यते

नी (नय्) ले जाना	लट्	लोट्
परस्मैपद	नयति	नयतु
आत्मनेपद	नयते	नयताम्

हृ (हर) चुरा लेना

	लट्	लोट्
परस्मैपद	हरति	हरतु
आत्मनेपद	हरते	हरताम्

लिङ्	लङ्	लट्
नयेत्-द्	अनयत्-द्	नेष्यति
नयेत	अनयत	नेष्यते
हरेत्-द्	अहरत-द्	हरिष्यति
हरेत	अहरत	हरिष्यते

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

भारत सब देशों में श्रेष्ठ है। ज्ञान से आप यश पायेंगे। तुम सब सदा प्रसन्न रहो। किसी से मत मांग। हम सब ले जायेंगे। शूरवीर सब दुःख सह लेते हैं। सब को मित्र की नज़र से देखिए।

२. हिन्दी में अर्थ लिखिए :—

पापस्य मार्गं त्यजत। सर्वत्र ईश्वरम् ईक्षध्वम्। गुणिषु धैर्यं भवति। ईश्वरः अस्माकं विपदः हरिष्यते। परमात्मनः ज्ञानं याचेत्।

तुदादिगण विकरण (अ)

स्मर्तव्य—भ्वादिगण में भी विकरण 'अ' ही आता है और तुदादिगण में भी 'अ' आता है। दोनों में अन्तर यह है कि भ्वादिगण में धातु को गुण हो जाता है जैसे 'भू' को भो-भव् 'जि' को जे-'जय' 'मुद' को 'मोद' परन्तु तुदादिगण में धातु के इ, उ को गुण (ए ओ) नहीं होता।

तुदादिगण के कुछ धातुओं के रूप

परस्मैपद—सृज् (बनाना) अ विकरण-वर्तमान काल लट्

प्र० पु०	सृजति	सृजतः	सृजन्ति
म० पु०	सृजसि	सृजथः	सृजथ
उ० पु०	सृजामि	सृजावः	सृजामः

लोट् (आज्ञा) लकार

प्र० पु०	सृजतु	सृजताम्	सृजन्तु
म० पु०	सृज	सृजतम्	सृजत
उ० पु०	सृजानि	सृजाव	सृजाम

लिङ्, (विधि, निमन्त्रण आदि)

प्र० पु०	सृजेत्-द्	सृजेताम्	सृजेयुः

म० पु०	सृजेः	सृजेतम्	सृजेत
उ० पु०	सृजेयम्	सृजेव	सृजेम

लङ् (भूत काल)

प्र० पु०	असृजत्	असृजताम्	असृजन्
म० पु०	असृजः	असृजतम्	असृजत
उ० पु०	असृजम्	असृजाव	असृजाम

लृट् (भविष्यत् काल)

प्र० पु०	स्रक्ष्यति	स्रक्ष्यतः	स्रक्ष्यन्ति
म० पु०	स्रक्ष्यसि	स्रक्ष्यथः	स्रक्ष्यथ
उ० पु०	स्रक्ष्यामि	स्रक्ष्यावः	स्रक्ष्यामः

तुदादिगण के कुछ और धातुओं के रूप

धातु	अर्थ	लट्	लोट्
इष् (इच्छ)	चाहना	इच्छति	इच्छतु
प्रच्छ (पृच्छ)	पूछना	पृच्छति	पृच्छतु
स्पृश्	छूना	स्पृशति	स्पृशतु
क्षिप्	फेंकना	क्षिपति	क्षिपतु
विश्	घुसना	विशति	विशतु
मुच् (मुञ्च्)	छोड़ना	मुञ्चति	मुञ्चतु

लिङ्	लङ्	लोट्
इच्छेत्-द्	ऐच्छत-द	एषिष्यति
पृच्छेत-द	अपृच्छत-द्	प्रक्ष्यति
स्पृशेत-द	अस्पृशत-द्	स्प्रक्ष्यति
क्षिपेत-द	अक्षिपत्-द्	क्षेप्स्यति
विशेत-द	अविशत्-द्	वेक्ष्यति
मुञ्चेत्-द्	अमुञ्चत-द्	मोक्ष्यति

तुदादिगण अ विकरण आत्मनेपदी धातु

लज्ज्—लजाना । लज्जते, लज्जताम्, लज्जेत, अलज्जत, लज्जिष्यते ।

दिवादिगण (य विकरण)

दिवादिगण में 'य' विकरण आता है और जहां जहां 'य' आता है, गुण नहीं होता।

नृत् (नाचना)

	लट्	लोट्	लिङ्
प्र० पु०	नृत्यति	नृत्यतु	नृत्येत्-द्
म० पु०	नृत्यसि	नृत्य	नृत्येः
उ० पु०	नृत्यामि	नृत्यानि	नृत्येयम्

लङ् लृट

अनृत्यत्-द नर्तिष्यति, नर्तिष्यसि नर्तिष्यामि

दिवादिगण के कुछ और धातुओं के रूप

धातु	अर्थ	लट्	लोट्
नश्	नष्ट होना	नश्यति	नश्यतु
शुष्	सूखना	शुष्यति	शुष्यतु
तृप्	तृप्त होना	तृप्यति	तृप्यतु
सिव् (सीव)	सीना	सीव्यति	सीव्यतु
त्रस्	डरना	त्रस्यति	त्रस्यतु
सिध्	सिद्ध होना	सिध्यति	सिध्यतु
कुप्	क्रोध करना	कुप्यति	कुप्यतु

लृट्	लङ्	लिङ्
नश्येत्-द्	अनश्यत्-द्	नङ्क्ष्यति
शुष्येत्-द्	अशुष्यत्-द्	शोक्ष्यति
तृप्येत्-द्	अतृप्यत्-द्	तर्पिष्यति
सीव्येत्-द्	असीव्यत्-द्	सेविष्यति
त्रस्येत्-द्	अत्रस्यत्-द्	त्रसिष्यति
सिध्येत्-द्	असिध्यत्	सेत्स्यति
कुप्येत्-द्	अकुप्यत्-द्	कोपिष्यति

आत्मनेपदी 'जन' धातु (पैदा होना)

जन्—जा—पैदा होना

जायते, जायताम्, जायेत, अजायत जनिष्यते,

मन्—(मान्य)—मानना

मन्यते मन्यताम् मन्येत अमन्यत मंस्यते

अभ्यास

(१) संस्कृत में अनुवाद कीजिए ।—

ईश्वर ने संसार बनाया। माली माला बनायेगा। पाप को सदा छोड़ो। मोर वर्षा में नाचते है। गर्मी में पानी सूख जायेगा। हे ईश्वर, आप की कृपा से हमारे सब काम सिद्ध हों। पाठ याद न करने से गुरु जी नाराज़ होंगे।

(२) हिन्दी में अर्थ बताइए :—

आत्मानं विद्वांसं को न मन्यते। सर्वेषां सुखमिच्छत। युष्माकम् अरयः नङ्क्ष्यन्ति। अग्निः काष्ठैर्न तृप्यति।

(३) रूप लिखिए—

सीव्—लोट् मध्यम पुरुष द्विवचन, मन्य—लङ् मध्यम पु० एक व०, मुञ्च—लिङ् मध्यम पु० बहुवचन।

अदादिगण

इस गण में विकरण चिन्ह कोई नहीं रहता । सीधे धातु से परे परस्मैपद, आत्मनेपद के प्रत्यय आ जाते हैं।

अदादिगण परस्मैपद हन् (मारना) वर्तमान काल

लट् लकार—

प्र० पु०	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
म० पु०	हन्सि	हथः	हथ
उ० पु०	हन्मि	हन्वः	हन्मः

लोट् लकार (आज्ञा)

प्र० पु०	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु
म० पु०	जहि	हतम्	हतः
उ० पु०	हनानि	हनाव	हन।म

मिधिलिङ् (विधि, निमन्त्रण आदि)

प्र० पु०	हन्यात्-द	हन्याताम्	हन्युः
म० पु०	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
उ० प०	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

लङ् (भूतकाल)

प्र० पु०	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
म० पु०	अहन्	अहताम्	अहत
उ० पु०	अहनम्	अहन्व	अहन्म

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

प्र० पु०	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति
म० पु०	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ
उ० पु०	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

आत्मनेपदी 'शी' धातु के रूप

लट्	प्र० पु०	शेते	शयाते	शेरते
	म० पु०	शेषे	शयाते	शेध्वे
	उ० पु०	शये	शेवहे	शेमहे
लोट्	प्र० पु०	शेताम्	शेयाताम्	शेरताम्
	म० पु०	शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्
	उ० पु०	शयै	शयावहै	शयामहै
विधिलिङ्	प्र० पु०	शयीत	शयीयाताम	शयीरन्
	म० पु०	शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्
	उ० पु०	शयीय	शयीवहि	शयीमहि
लङ्	प्र० पु०	अशेत	अशयाताम्	अशेरत
	म० पु०	अशेथाः	अशयाथाम्	अशेध्वम्
	उ० पु०	अशयि	अशेवहि	अशेमहि

लृट्	प्र० पु०	शयिष्य	शयिष्येते	शयिष्यन्ते
	म० पु०	शयिष्यसे	शयिष्यथे	शयिष्यध्वे
	उ० पु०	शयिष्ये	शयिष्यावहे	शयिष्मामहे

इसी तरह अदादिगण के कुछ और धातुओं के रूप होंगे।

या (जाना)	लट्	लोट्	लिङ्	लङ्	लृट
	याति	यातु	यायात्-द्	आयात्-द्	यास्यति
पा (रक्षा करना)	पाति	पातु	पायात्-द्	अपतात्-द्	पास्यति

अदादि गण अस् (होना) धातु के रूप

लट्	प्र० पु०	अस्ति	स्तः	सन्ति
	म० पु०	असि	स्थः	स्थ
	उ० पु०	अस्मि	स्वः	स्मः
लोट्	प्र० पु०	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
	म० पु०	एधि	स्तम्	स्त
	उ० पु०	असानि	असाव	असाम
लिङ्	प्र० पु०	स्यात्-द्	स्याताम्	स्युः
	म० पु०	स्याः	स्यातम्	स्यात
	उ० पु०	स्याम्	स्याव	स्याम
लङ्	प्र० पु०	आसीत्-द्	आस्ताम्	आसन्
	म० पु०	आसीः	आस्तम्	आस्त
	उ० पु०	आसम्	आस्व	आस्म

लृट लकार (भविष्यत्)

स्मर्तव्य— लृट् लकार में अस् की जगह भव् हो जाता है, अतः लृट्
लकार में अस् भू के समान रूप होंगे जैसे—

प्र० पु०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म० पु०	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ० पु०	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

अभ्यास

(१) संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

भारतवर्ष बहुत वर्ष परतन्त्रता की नींद में सोया रहा कृष्ण मथुरा में कंस को मारता था। शेर हिरण को मारता है लड़के खाट पर सोते हैं। मैं शत्रु को मारूंगा। दो भाई जंगल गये। मेरे घर में घी नहीं है। मछली नदी में थी। तुम्हें दे कर मैं प्रसन्न होऊंगा।

(२) इन वाक्यों का हिन्दी में अर्थ लिखिए :—

त्वम् तदा कुत्र अशेथाः। ते अजान् घ्नन्ति। अहं कदा कञ्चित् न हन्याम् रात्रौ नग्नः न शयीत। त्वं दीर्घायुः स्याः अहं पाठशालायां न आसम्।

(३) इन के रूप बताइए—

अस-लोट् १ म० पु० बहु व०, और लृट् म० पु० द्वि० हन्-लट् १ म० पु० बहु व०। शीङ् लृट् १ म० पु० द्वि० और मध्यम पु० १ व०।

जुहोत्यादिगण

इस गण में भी अदादिगण की तरह कोई विकरण नहीं आता रन्तु लट्, लोट, विधिलिङ् और लङ् लकारों में धातु को द्वित्व जात है अर्थात् धातु की पुनरावृत्ति हो जाती है।

दा (देना) वर्तमान काल लट

ट्	प्र. पु.	दद:ति	दत्तः	ददति
	म. पु.	ददासि	दत्थः	दत्थ
	उ. पु.	ददामि	दद्वः	दद्मः
ट् (आज्ञा)	प्र. पु	ददातु	दत्ताम्	ददतु
	म. पु.	देहि	दत्तम्	दत्त
	उ. पु.	ददानि	ददाव	ददाम
धिलिङ्	प्र. पु.	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
	म. पु.	दद्याः	दद्याताम्	दद्यात्
	उ, पु.	दद्याम्	दद्याव	दद्याम
ङ् (भूतकाल)	प्र. पु.	अददात्-द्	अदत्ताम्	अददुः
	म. पु.	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
	उ. पु.	अददाम्	अदद्व	अदद्म
ट् (भविष्यत्)	प्र. पु.	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
	म. पु.	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ

उ. पु. दास्यामि दास्थावः दास्यामः

स्मर्तव्यः—दा धातु से आत्मनेपद के प्रत्यय भी आते हैं, क्योंकि यह उभयपदी हैं। परन्तु कठिन होने के कारण, वे यहां नहीं लिखे गये। इस गण के और धातु भी कठिन और अनावश्यक होने के कारण नहीं लिखे गये।

अभ्यास

(१) अनुवाद कीजिए —

गुरु शिष्य को विद्या देता था। मैं तुम को पुस्तक क्यों दूं? तू उसे क्या देगा? वह मेरा कपड़ा दे। हम उसे कुछ नहीं देंगे।

(२) हिन्दी में अर्थ बताइये :-

ईश्वरः भारताय कल्याणं दद्याद्। लाजपतरायः देशहिताय प्राणान् अददात्-द्। अहं क्षुधार्तेभ्यः भोजनं दास्यामि। वयं स्वदेशाय श्रद्धाञ्जलिं दद्मः।

(३) धातु के यह रूप बताइए-

लोट् उ० पु० द्विव०, विधिलिङ् मध्यम पु० एकव०, लङ् १ म० पु० द्विव०, लृट् १ म० पु० बहुव०।

तनादिगण

तनादिगण में 'उ' विकरण आता है। इस गण में एक ही प्रसिद्ध धातु है, उसके रूप आवश्यक होने के कारण यहां दिये जाते हैं।

तनादि 'कृ' धातु (करना) परस्मैपद वर्तमान काल

लट्

प्र० पु०	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
म० पु०	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उ० पु०	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लोट् 'आज्ञा'

प्र० पु०	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
म० पु०	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उ० पु०	करवाणि	करवाव	करवाम

विधिलिङ 'विधि, निमन्त्रण आदि'

प्र० पु०	कुर्यात्-द्	कुर्याताम्	कुर्युः
म० पु०	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उ० पु०	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

लङ् 'भूतकाल'

प्र० पु०	अकरोत्-द्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
म० पु०	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उ० पु०	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

लृट 'भविष्यत् काल'

प्र० पु०	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
म० पु०	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उ० पु०	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

स्मर्तव्यः--कृ धातु उभयपदी है, इस से आत्मनेपद के प्रत्यय भी आते हैं, परन्तु अनावश्यक होने के कारण वे यहां नहीं लिखे गए।

अभ्यास

(१) अनुवाद कीजिए—

गांधी ने भारत को स्वतन्त्र किया हम हम इसे प्रमाण करते हैं। मैं यहां क्या करूं? तुम दो वहां क्या करते थे? हम देश से प्रेम करेंगे।

(२) हिन्दी में अर्थ बताइएः—

यः विद्याध्ययनं न करोति स मन्दभाग्यो भवति। युवामत्र

किम् अकुरुतम्। स देशकल्याणाय प्रयत्नम् अकरोत्। अहम् अत्र किम करवाणि ?

(३) कृ धातु के रूप लिखिए: —

लङ् —उत्तम पु० बहुव०, लोट् - प्रथम पु० द्विव०, विधि-लिङ्—मध्यम पु० एक व०, लृट्—प्रथम पु० द्विव०।

चुरादिगण

'अय' विकरण

"मदन मोहनः कथां कथयति" (मदन मोहन कहानी कह रहा है) इस में 'कथयति' क्रिया, कथ+अय+ति=कथयति इस प्रकार बनी है। इस में धातु और प्रत्यय के बीच 'अय' विकरण आया है। इस तरह जहां 'अय' विकरण आता है, वे धातु प्रायः चुरादि के होते हैं। नीचे चुरादिगण के कुछ धातुओं के रूप दिये जाते हैं :—

कथ—(कहना) अय विकरण-वर्तमान काल लट्

प्र० पु०	कथयति	कथयतः	कथयन्ति
म० पु०	कथयसि	कथयथः	कथयथ
उ० पु०	कथयामि	कथयावः	कथयामः

लोट् (आज्ञा)

प्र० पु०	कथयतु	कथयताम्	कथयन्तु
म० पु०	कथय	कथयतम्	कथयत
उ० पु०	कथयानि	कथयाव	कथयाम

विधिलिङ् (विधि, निमन्त्रण आदि पर)

प्र० पु०	कथयेत्-द्	कथयेताम्	कथयेयुः
म० पु०	कथयेः	कथयेतम्	कथयेत
उ० पु०	कथयेयम्	कथयेव	कथयेम्

लृट् (भविष्यत् काल)

प्र० पु०	कथयिष्यति	कथयिष्यतः	कथयिष्यन्ति
म० पु०	कथयिष्यसि	कथयिष्यथः	कथयिष्यथ
उ० पु०	कथयिष्यामि	कथयिष्यावः	कथयिष्यामः

चुरादिगण के कुछ और धातु

धातु अर्थ	लट्	लोट्
रच्=बनाना	रचयति	रचयतु
पूज्=पूजा करना,	पूजयति	पूजयतु
गण्=गिनना,	गणयति	गणयतु
पीड्=पीड़ा देना,	पीडयति	पीडयतु
क्षाल्=धोना,	क्षालयति	क्षालयतु

तड् (ताड्)=पीटना,	ताडयति	ताडयतु
चुर् (चोर्)=चुराना,	चोरयति	चोरयति
प्री (प्रीण्)=खुश करना,	प्रीणयति	प्रीणयतु
भूष्=सजाना,	भूषयति	भूषयतु
घुष् (घोष)=घोषित करना,	घोषयति	घोषयतु
तुल् (तोल)=तोलना	तोलयति	तोलयतु

लिङ्	लङ्	लृट्
रचयेत्-द्	अरचयत्-द्	रचयिष्यति
गणयेत्-द्	अगणयत्-द्	गणयिष्यति
पीडयेत्-द्	अपोडयत्-द्	पीडयिष्यति
क्षालयेत्-द्	अक्षालयत्-द्	क्षालयिष्यति
ताडयेत्-द्	अताडयत्-द्	ताडयिष्यति
चोरयेत्-द्	अचोरयत्	चोरयिष्यति
प्रीणयेत्-द्	अप्रीणयत्-द्	प्रीणयिष्यति
भूषयेत्-द्	अभूषयत्-द्	भूषयिष्यति
घोषयेत्-द्	अघोषयत्-द्	घोषयिष्यति
तोलयेत्-द्	अतोलयत्-द्	तोलयिष्यति

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

हम सब तोलेंगे । राम ने ग्रन्थ बनाया। शत्रु निर्बल को पीड़ा देते हैं। भक्त ईश्वर की पूजा करें। तुम सौ तक गिनो।

२. हिन्दी में अर्थ लिखिए :—

यूयं मुद्राः गणयथ। स सुवर्णं तोलयिष्यति। नृपः नवीन् नियमान् घोषयतु। गुरुः छात्रान् मा ताडयेत्।

तृतीय खण्ड

द्वितीय अध्याय

उपसर्ग वश से धात्वर्थ परिवर्तन

१. विप्रः गां ददाति (ब्राह्मण गौ देता है)।

२. विप्रः गां आददाति (ब्राह्मण गौ लेता है)।

ऊपर के दोनों वाक्यों में क्रिया एक ही 'ददाति' है, जिस का अर्थ 'देता है'। पर दूसरे वाक्य में साथ 'आ' उपसर्ग लग जाने से उसका अर्थ 'देने' से 'लेने' हो गया है. अर्थात् बिल्कुल ही बदल गया है। इसी तरह उपसर्गों के साथ आने से और धातुओं के अर्थ भी बदल जाते हैं।

इस प्रकार के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं :—

उपसर्ग	धातु	अर्थ
प्र+	भवति	समर्थ होता है।
सम्+	भवति	सम्भव हो सकता है।
परा+	भवति	हराता है।
अनु+	भवति	अनुभव करता है।
अभि+	भवति	नीचा दिखाता है।
उद+	भवति	उठता जाता है (पैदा होता है)

उपसर्ग	धातु	अर्थ
आ +	गच्छति	आता है।
अधि +	गच्छति	पाता है।
अव +	गच्छति	जानता है।
निर् +	गच्छति	निकलता है।
प्रति +	गच्छति	उलटे चलता है।
सम् +	गच्छति	मिलता है।
अनु +	गच्छति	पीछे चलता है।
अधि +	रोहति	चढ़ता है।
आ +	दिशति	आज्ञा देता है।
निर् +	नयति	(निणयति) निश्चय करता है।
आ +	नयति	ले आता है।
अप +	नयति	हटाता है।
अनु +	नयति	मनाता है।
अनु +	वदति	नकल करता है।
अप् +	वदति	निन्दा करता है।
सम् +	वदति	समानता करता है।
परा +	जयते	हराता है।
उप +	वसति	फाका करता है।
वि +	रमति	हटता है, रुकता है।
अनु +	करोति	नकल करता है।
अनु +	नाति	अनुमति देता है।

अनु +	सरति	पीछे चलता है
वि +	स्मरति	भूलता है।
उत् +	सृजति	छोड़ता है।
सम् +	सृजति	मिलता है।
वि +	सृजति	विदा करता है।

अभ्यास

(१) संस्कृत में अनुवाद कीजिए।—

सरयू गंगा से मिलती है। पाप का फल हमेशा बुरा निकलता है। बुद्धिमान् अपनी अकल से बुरे का निश्चय करें। मनुष्य हमेशा अच्छे की नकल करे। मित्र मित्र को विदा करेगा। प्रेम अपराधों को भूल जाता है। भारतवर्ष सदा शत्रुओं को नीचा दिखाये।

(२) हिन्दी में अर्थ बताइए :—

शुभेच्छूनाम आदेशम् अनुसर। पापेभ्यो विरमत। सेवकाः प्रभुम् अनुगच्छेयुः। मुनयः श्रुतीनां तत्त्वम् अवगच्छन्ति। छात्राः गुरुपदेशं व्यस्मरन। साधवः एकादश्याम् उपवसन्ति। को विद्वांसं पराजेष्यते। गायको बीणामनुवदति।

णिजन्त प्रेरणार्थक क्रिया

१. छात्रः श्लोकं लिखति (विद्यार्थी श्लोक को लिखता है)

२. छात्रः श्लोकं लेखयति (विद्यार्थी श्लोक को लिखता है)

ऊपर के दो वाक्यों से स्पष्ट है कि कोई क्रिया स्वयं को जाती है और कोई किसो से करवाई जाती है। जब क्रिया किसी से करवाई जाती है, तब णिजन्त (प्ररणार्थक) क्रिया लगाई जाती है। किसी से काम करवाने को प्रेरणा कहा जाता है। इस क्रिया के रूपों में—साधारण क्रिया के रूपों से कुछ भेद होता है जो मुख्यतः इस प्रकार है—

१. हर धातु से परे अय् अवश्य लग जाता है।

२. सब धातुएं उभयपदो हो जाती हैं।

३. धातु के ह्रस्व स्वर अ, इ, उ, ऋ को क्रम से प्रायः अ, ए. ओ, आर. हो जाता है।

४. अकारान्त धातु से परे कहीं य आता है। इन के कुछ उदाहरण दिये जाते हैं।

नश् (नष्ट होना) नश्यति (नष्ट होता है) नाशयति (नष्ट करता या करवाता है)।

पठ् (पढ़ना) पठति (पढ़ता है) पाठयति (पढ़ाता है)।

स्था (तिष्ठ्) (ठहरना) तिष्ठति (ठहरता है) स्थापयति (ठहराता है)।

पा (पिब) (पोना) पिबति (पोता है) पाययति

(पिलाता है)।

दा (देना) ददाति देता है) दापयति (दिलाता या दिलवाता हैं)।

नी (नय्) (ले जाना) नयति (ले जाता है) नाययति (भिजवाता है)।

इसी तरह भू का भावयति, भिद् का भेदयति, नम् का नमयति, सिच् का सेचयति। इत्यादि, विशेष परिचय के लिये 'लिख' के लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लृट्, सभी लकारों के रूप लिखे जाते हैं। लट्–लेखयति, लोट्-लेखयतु, लङ्-अलेखयत्-द् विधिङ्-लेखयेत्-द्, लृट्-लेखयिष्यति।

सकर्मक—अकर्मक परिचय

काम करने को क्रिया कहते हैं और जो उस क्रिया को करे, वह कर्त्ता होता है। परन्तु क्रिया करने से कुछ फल या नतीजा भी निकलता है। जैसे पकाने से चावल नर्म हो जाते हैं। फाड़ने से लकड़ी के टुकड़े हो जाते हैं इत्यादि वह फल कभी क्रिया करने वाले (कर्त्ता) से अलग किसी दूसरी चीज़ में पैदा होता है। जैसे पकाने से गलना चावलों में, फाड़ने से टुकड़े होना लकड़ियों में। कभी वह फल क्रिया करने वाले (कर्त्ता) में ही रह जाता है, दूसरे में नहीं। जैसे—सोने में सब झंजटों से छूटना या आराम कर्त्ता में ही होता है। जिन क्रियाओं का फल कर्त्ता से भिन्न वस्तु में रहे, वे क्रियाएं सकर्मक

क्रियायें होती हैं और उन क्रियाओं का वाचक धातु सकर्मक कहा जाता है। यथा—पच्, गम्[1], मुच्, रक्ष्—नय् इत्यादि।

जिन क्रियाओं का फल कर्त्ता में रहे, वे क्रियाएं अकर्मक और उन क्रियाओं का वाचक धातु भी अकर्मक होगा। यथा—तिष्ठ्, भव, धाव्, आस, अम, लज्ज्, जीव्, इत्यादि।

वाच्य-परिवर्तन

कर्त्ता तो सभी धातुओं का होता ही है, इसलिए हर एक धातु से कर्त्ता अर्थ में ति, तः, अन्ति आदि प्रत्यय आते ही हैं। परन्तु यदि कोई धातु सकर्मक हो तो उससे कर्म में भी प्रत्यय आ सकते हैं। अगर धातु अकर्मक हो और उसके परे हम कर्त्ता में प्रत्यय न लाना चाहें तो क्योंकि उस धातु का कर्म तो कोई है ही नहीं, अतः कर्म में उस से प्रत्यय आ ही नहीं सकता। ऐसी दशा में उस (अकर्मक) धातु से भाव में ही प्रत्यय आ जाता है। जिस वस्तु में प्रत्यय आता है उसी की प्रधानता वाक्य में रहती है और क्रियापद, पुरुष और वचन उसी के अधीन होकर उसी के अनुसार लेता है।

जिस अर्थ में प्रत्यय आता है, उस अर्थ को **'वाच्य'** कहते हैं। वाच्य अर्थात् उस प्रत्यय का अर्थ।

यदि कर्त्ता में प्रत्यय हो तो **'कर्तृ वाच्य'** है अगर कर्म में हो तो **'कर्म वाच्य'** है तथा यदि भाव में प्रत्यय है तो **'भाव वाच्य'** है।

इस वाच्य को हम अपनो इच्छा के अनुसार बदल भो सकते हैं। सकर्मक धातु से हम कर्तृवाच्य में या कर्म वाच्य में दोनों में बारी से प्रत्यय ला सकते हैं। इसो तरह अकर्मक धातु से कर्तृवाच्य में या भाव वाच्य में दोनों में बारो से प्रत्यय ला सकते हैं। कर्तृवाच्य के रूप तो—पचति, पचतः, पचन्ति, भवति, पठति आदि पोछे बताये जा चुके हैं।

अब भाववाच्य का कर्मवाच्य के रूप बताये जाते हैं। इनके कुछ आवश्यक नियम यह हैं :—

जिस वाच्य में प्रत्यय होगा, उस में प्रथमा विभक्ति आयेगी, जैसे कि—पठति, पठतः पठन्ति। सभी में कर्तृवाच्य है, अतः कर्त्ता में प्रथमा आती है। नरः पठति, शुकौ पठतः पक्षिणः पठन्ति, इत्यादि। परन्तु—

१. कर्म-वाच्य में प्रत्यय कर्म में हो होगा, और कर्म में प्रथमा विभक्ति होगी।

२. जब कर्म में प्रत्यय होगा, तब कर्त्ता तृतीया विभक्ति होगी।

३. भाववाच्य में प्रत्यय भाव में ही होगा, और कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होगी।

४. जब कर्म-वाच्य या भाव-वाच्य में प्रत्यय हो तो सभी धातुओं से आत्मनेपद के प्रत्यय—ते, आते, अन्ते ही आयंगे।

५. लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् लकारों में धातु के परे और

प्रत्यय के पहिले (दोनों के बीच) 'य' जरूर लगाया जायेगा। पठ्यते, पठ्यताम्, पठ्येत।

६. कर्मवाच्य अथवा भाव-वाच्य मे किसी भी धातु से परे कोरे भी गण चिन्ह (विकरण) नहीं आता।

७. भाव-वाच्य में सदा प्रथम पुरुष और उसका भी एक वचन ही रहेगा। भूयते, आस्यते।

८. कर्म वाच्य में कर्म के अनुसार पुरुष और वचन होंगे :—

(क) यदि युष्मद् शब्द कर्म होगा तो मध्यम पुरुष होगा। मया त्वं कथ्यसे।

(ख) यदि अस्मद् शब्द कर्म होगा तो उत्तम पुरुष होगा। त्वया अहं कथ्ये।

(ग) यदि युष्मद् और अस्मद् से भिन्न कोई भी शब्द कर्म होगा तो प्रथम पुरुष होगा। मया—(त्वया-तेन) देवदत्तः कथ्यते।

९. इसी तरह यदि कर्म एक होगा तो कर्मवाच्य क्रिया में एक वचन, यदि कर्म दो होंगे तो द्विवचन, यदि कर्म बहुत होंगे तो क्रिया में बहुवचन होगा।

इन नियमों को ध्यान में रखते हुए हर एक कर्तृवाच्य क्रिया को कर्मवाच्य या भाव-वाच्य में बदल सकते हैं। इसी को **'वाच्य-परिवर्तन'** कहते हैं। जैसे :—

कर्तृवाच्य में—देवदत्तः वेदं पठति ।

कर्मवाच्य में—देवदत्तेन वेदः पठ्यते ।

यदि धातु अकर्मक होगी तो उसके कर्तृवाच्य का भाववाच्य में परिवर्तन होगा । जैसे :—

कर्तृवाच्य में—देवदत्तः भवति ।

कर्मवाच्य में—देवदत्तेन भूयते ।

भाववाच्य में भू धातु के रूप :—

लट्—भूयते, लोट्—भूयताम्, लङ्—अभूयत, लिङ्—भूयेत, लट्—भविष्यति ।

कर्मवाच्य में गम् धातु के रूप :—

लट्—देवदत्तेन ग्रामः गम्यते, देवदत्तेन ग्रामौ गम्येते,
देवदत्तेन ग्रामाः गम्यन्ते । प्र० पु० ।

देवदत्तेन त्वं गम्यसे, देवदत्तेन युवां गम्येथे, देवदत्तेन यूयं गम्यध्वे । मध्य० पु० ।

देवदत्तेन अहं गम्ये, देवदत्तेन आवां गम्यावहे, देवदत्तेन वयं गम्यामहे । उ० पु० ।

इसी प्रकार बाकी लकारो में रूप होंगे, उन के एक २ रूप लिखे जाते हैं ।

लोट्—गम्यताम्, लङ्—अगम्यत, विधिलिङ्—गम्येत, लृट्—गंम्यते ।

कुछ और धातुओं के लट् लकार के रूप

धातु	कर्तृ वाच्य	कर्मवाच्य
हन्	हन्ति	हन्यते
क्रीड्	क्रीडति	क्रीड्यते (भा॰ वा॰)
वह्	वहति	उह्यते
हृ (हर्)	हरति	ह्रियते
स्वप्	स्वपिति	सुप्यते (भा॰ वा॰)
नी (निय्)	नयति	नीयते
निन्द्	निन्दति	निन्द्यते
वस्	वसति	उष्यते (भा॰ वा॰)
दा	ददाति	दीयते
स्मृ (स्मर)	स्मरति	स्मर्यते

चतुर्थ खण्ड

प्रथम अध्याय

समास

राजपुत्रः=राज्ञः पुत्रः (राजा का पुत्र)। शिवभक्तिः=शिवस्य भक्तिः (शिव जी की भक्ति)। भारतमाता=भारत एव माता (भारत रूपी मां)। इन तीनों शब्दों की बनावट पर ध्यान देने से जान पड़ेगा कि संक्षेप करने के लिए इन में दो दो शब्द आपस में सम्बन्ध दिखाए बिना इकट्ठे कर दिए गए हैं और फिर भी उनसे वह अर्थ ले लिया गया है जो मध्य में सम्बन्ध जोड़ने वाले शब्द मौजूद होने पर निकल सकता था। इसी तरीके से जो शब्दों को आपस में जोड़ लिया जाता है, वह बोल-चाल में समय बचाने के उद्देश्य से अर्थात् संक्षेप करने के लिए होता है। संक्षेप का ही दूसरा नाम समास है। इस लिए जहां कुछ शब्दों (दो या इस से अधिक) को संक्षेप करने के उद्देश्य से आपस में विभक्ति जोड़ रहित कर दिया जाता है, अर्थात् आपस का सम्बन्ध बताने वाले विभक्ति आदि चिन्हों को काट दिया जाता है, उस का नाम **'समास'** है।

उन्हीं जुड़े हुए शब्दों को अगर फिर विभक्ति आदि लगा कर पृथक् पृथक् कर दिया जाय तो इसे विग्रह कहते हैं।

समास के मुख्य छः प्रकार हैं :—

(१) अव्ययीभाव। (२) कर्मधारय। (३) द्विगु। (४) द्वन्द्व। (५) तत्पुरुष और (६) बहुव्रीहि।

(१) अव्ययीभाव

जिन में पहला शब्द अव्यय हो और अन्त के शब्द को नपुंसकलिंग प्रथमा विभक्ति एकवचन दे दिया जाय तथा क्रियाविशेषण के तौर पर उस समस्त शब्द का प्रयोग हो, इसे अव्ययींभाव समास कहते हैं।

उदाहरण—दिने दिने=प्रतिदिनम्। स्नेहेन सह=सस्नेहम्। शक्तिम् अनतिक्रम्य=यथाशक्ति। रथस्य पश्चद् =अनुरथम्। गङ्गाया. समीपे=उपगङ्गम्।

इसी के समान प्रत्यक्षम्, परोक्षम्, अनुसारम्, सतृणाम्, निरन्तरम् इत्यादि भी होते हैं।

स्मरणीय—इस समास में बने शब्द अव्यय के रूप में ही प्रयोग में आते हैं और उन्हें प्रायः नपुंसक लिंग १ मा विभक्ति एकवचन में ही रहना होता है।

(२) कर्मधारय

जब विशेष्य और विशेषण के रूप में आने वाले समान विभक्ति दो शब्द जुड़ते हैं, तो उस का नाम कर्मधारय समास होता है। कर्मधारय में जिन शब्दों का समास करना हो, वे दोनों यदि पुंल्लिग हों तो सुबिधा के लिए विग्रह में "चासौ'

जोड़ लेते हैं। जैसे—नीलः चासौ घटः=नीलघटः। ऐसे स्त्रीलिंग पदों में से 'च सा' तथा नपुंसक लिंग शब्दों में 'च तत्' जोड़ लेते हैं। जैसे—सुन्दरी च सा नारी=सुन्दरीनारी। नीलञ्च तदुत्पलम्=नीलोत्पलम्।

स्मरणीय—(१) इस समास में यदि दोनों शब्द स्त्रीलिंग हों तो जुड़ने पर विशेषण शब्द पुंलिंग कर दिया जाता है। जैसे—सुन्दरी च स नारी=सुन्दरनारी, ज्येष्ठा च सा कन्या=ज्येष्ठकन्या, शुकला च सा नवमी= शुकलनबमी।

(२) विशेष्य और विशेषणों के अतिरिक्त उपमान और उपमेय (अर्थात् जिस को उपमा दी जाती है और जिस से उपमा दी जाती है) उन दोनों का समास भी कर्मधारय ही कहलाता। इस में उपमा-वाचक शब्द भी काट दिया जाता है। जसे पुरुषः व्याघ्र इव=पुरुषव्याघ्रः। घन इव श्यामः= घनश्यामः। चन्द्र इव मुखम्=चन्द्रमुखम्।

(२) द्विगु

समान जाति के कुछ भिन्न पदार्थ जो कि एक नियत संख्या में समूह के अर्थ में हों तो उन्हें उसी संख्या-वाचक शब्द के साथ जोड़ कर शब्द बना दिया जाता है, इसे द्विगु समास कहते हैं जो कि उन पदार्थों का इकट्ठा होना प्रकट करता है,

न में विग्रह में 'समाहार'* शब्द प्रायः जोड़ दिया जाता है। से त्रयाणां लोकानां समाहारः=त्रिलोकी । सप्तानां पदानां माहारः=सप्तपदी, द्वयोः पुरुषयोः समाहारः=द्विपुरुषी, ष्ठानाम् अध्यायानां समाहारः=अष्ठाध्यायी, त्रयानां कटूनां, माहारः=त्रिकुटु, चतुर्णां बीजानां समाहारः=चतुर्बीजम् ।

रणीय—(१) इस समास के शब्द प्रायः स्त्रीलिंग में या नपुंसक लिंग में ही हुआ करते हैं।

(२) इस में शब्दों को विभक्तियों के सिवाय उनके साथ आने वाले 'समाहारः' आदि शब्द भी काट दिये जाते हैं।

द्वन्द्व

सख्या का निर्देश किये बिना ही जब कुछ भिन्न पदार्थों इकट्ठे एक शब्द बना कर कहा हो। (जैसे हिन्दी में– हाथ र मुंह', के लिए 'हाथ मुंह' तथा कलम और दवात' के लिए लम दवात' कहा जाता है) यह द्वन्द्व समास कहलाता है, स के विग्रह में जितने शब्दों का समास हो, हर एक के साथ ' लगा दिया जाता है।

इनके तीन भेद हैं—(१) इतरेतर द्वन्द्व (२) समाहार द्वन्द्व और (३) एकशेष द्वन्द्व ।

---

*समाहार अर्थात् समूह ।

(१) जिस में इकट्ठे किये गये सभी शब्द समान महत्त्व रखते हों, उसे 'इतरेतर द्वन्द्व' कहा जाता है। जैसे—रामश्च लक्ष्मणश्च =रामलक्ष्मणौ, भीमश्च अर्जुनश्च=भीमार्जुनौ।

ये दो दो व्यक्ति हैं, इस लिये इनके अन्तिम शब्द को द्विवचन होता है, लेकिन जहां दो से अधिक संख्या को इकट्ठा किया जायेगा, वहां अन्त में बहुवचन होगा। जैसे रामश्च लक्ष्मणश्च भरतश्च शत्रुघ्नश्च=रामलक्ष्मणभरतशत्रुघ्नाः।

स्मरणीय—इस द्वन्द्व के अन्त में लिंग वही होता है जो अन्तिम शब्द का स्वाभाविक लिंग होता है और दो पदार्थों के समास में द्विवचन तथा बहुत पदार्थों के समास में बहुवचन होता है।

(२) समाहार द्वन्द्व उसे कहते हैं, जिस में जुदा जुदा शब्दों के बजाय उनके समूह का ही महत्त्व हो। जैसे—पाणी च पादौ च = पाणिपादम्, अहिश्च नकुलश्च=अहिनकुलम्।

स्मरणीय—इस समास में इकट्ठे किये शब्दों के लिंग, वचन चाहे कुछ भी हों, अन्त में सदा नपुंसक लिंग, एक वचन ही में रहते हैं।

(३) एकशेष द्वन्द्व वह है, जिस में दो शब्दों में से सिर्फ एक ही रह जाय और दूसरा काट दिया जाय। जैसे—माता च पिता च=पितरौ।

(५) तत्पुरुष

जहां पहिले शब्द में द्वितीया से सप्तमी तक कोई भी एक विभक्ति या केवल 'न' लगता हो और अन्तिम शब्द ही महत्त्व खता हो, उन शब्दों को इकट्ठे करने पर वह 'तत्पुरुष समास' हलाता है। यह समास अन्य समासों से अधिक प्रयोग में आता । इसके तीन मुख्य भेद हैं :—

१) विभक्ति तत्पुरुष, (२) नञ्तत्पुरुष,

३) उपपदतत्पुरुष ।

(१) **विभक्ति तत्पुरुष** में पहिला शब्द द्वितीया से सप्तमी क किसी एक विभक्ति के लिये होता है। जैसे :—

या तत्पुरुष	ग्रामं गतः=ग्रामगतः ।
	दुःखम् अतीतः=दुःखातीतः ।
या ,,	देशेन पूजितः=देशपूजितः ।
	सर्पेण दष्टः=सर्पदष्टः ।
र्थी ,,	होमाय सामग्री=होमसामग्री ।
मी ,,	दास्यात् मुक्तः=दास्यमुक्तः ।
	वृक्षात् पतिनःवृक्षपतितः ।
ष्ठी ,,	राष्ट्रस्य पतिः=राष्ट्रपतिः ।
	देशस्य भक्तः=देशभक्तः ।
मी ,,	व्याकरणे पण्डितः=व्याकरणपण्डितः ।
	वाचि चतुरः=वाकचतुरः ।

स्मरणीय—कई एक दशाओं में विभक्ति काटी नहीं जाती। जैसे—विश्वम्भरः, वाचस्पतिः, प्रियंवदा, इत्यादि।

(२) **नञ्तत्पुरुष**—इस में निषेध (Negative) अर्थ रखने वाला 'न' पूर्वपद होता है और उसका समास करने पर वह (अ) में परिवर्तित हो जाता है, जैसे—न साधु=असाधुः, न ब्राह्मणः= अब्राह्मणः, न शुचिः=अशुचिः। नञ्तत्पुरुष में यदि परे का पद स्वरादि हो तो बीच में एक और 'न' आ जाता है। जैसे—न एकः— =अनेकः, न अश्व=अनश्वः।

(३) **उपपदतत्पुरुष**—इस में विग्रह में अगले पद में जिस के साथ समास करना हो, उस के बजाय उसके अर्थ का बोधक क्रियापद बोलते हैं।

जैसे कुम्भं करोति=कुम्भकारः। द्वाभ्यां जायते=द्विजः, उष्णं भुक्ते=उष्णभोजी।

(६) बहुव्रीहि

जिस में इकट्ठे किये गये शब्दों का कोई महत्त्व न हो, बल्कि उन से बाहर के ही किसी अर्थ की प्रधानता हो, वह बहुव्रीहि समास कहलाता है। इस समास द्वारा बने हुए शब्द विशेषण के तौर पर ही प्रयुक्त होते हैं। विग्रह की हालत में इस में 'यस्य' 'येन' इत्यादि, यत् शब्द के रूप तथा 'स' इत्यादि तत् शब्द के रूप अवश्य रहते हैं। जैसे—महान् आत्मा यस्य सः= महात्मा। निर्गत भयं यस्मात् स.=निर्भयः, उत्कृष्टा बुद्धि यस्य

सः=उत्कृष्टबुद्धिः, नास्ति पुत्रो यस्य सः अपुत्रः।

स्मरणीय—(१) इस समास में विग्रह दशा में यदि इव शब्द आये वह भी उड़ जाता है जैसे चन्द्रस्य प्रभा इव प्रभा यस्याः सा=चन्द्रप्रभा।

(२) सह शब्द आने पर 'सह' का 'ह' कट जाता है। और बाकी 'स' आदि में लग जाता है जैसे—
पुत्रेण सह=सपुत्रः।

कई दशाओं में सुविधा के लिये अन्त में 'क' जोड़ दिया जाता है। जैसे—भर्त्रा सह=सभर्तृका, पत्न्या सह=सपत्नीकः।

अभ्यास

(१) इन शब्दों के विग्रह कीजिए और समासों के नाम भी बताइये।

अधिनगरम्, श्वेतपुष्पम्, पञ्चतंत्रम्, नकुलसहदेवौ, गङ्गाजलम्, लोकहितम्, युद्धवीरः, पीताम्बरः, अनधिकारी, सजला।

(२) इन के समास कीजिए :—

विघ्नानाम् शान्तिः, साधुश्चासौपुरुषः, त्रयाणां भुवनानां समाहारः, गङ्गा च यमुना च, चौराद् भयम्, प्राप्तः आनको येन, देशस्य नायकः, चक्रं पाणौ यस्य, गणैः सह।

चतुर्थ खण्ड

द्वितीय प्रकरण

कृदन्त प्रकरण

१. ईश्वरः संसारं करोति, २. ईश्वरः संसारस्य कर्त्ता अस्ति (ईश्वर जगत् को बनाता है) (ईश्वर जगत् का बनाने वाला है)।

इन दो वाक्यों में 'करोति' और 'कर्त्ता' ये दो शब्द एक ही 'कृ' धातु से बने हैं, परन्तु पहले वाक्य में 'करोति' पूर्ण (समाप्त) क्रिया है और दूसरे वाक्य में 'कर्त्ता' यह पद विशेषण हो गया है। 'करोति' तिङन्त है और 'कर्त्ता' कृदन्त। 'कर्त्ता' इस शब्द से 'स्' 'औ' 'अस्' इत्यादि विभक्तियां आ कर 'कर्त्ता' कर्त्तारौ, कर्त्तारः, इस तरह सुबन्त रूप बनने लग जाते हैं, 'करोति' इस से 'करोति, कुरुतः, कुर्बन्ति' इस प्रकार तिङन्त रूप चलते हैं, सुबन्त नहीं। अतः—

धातुओं से जिन प्रत्ययों के आने से बने शब्द विशेषण या असमाप्त क्रिया के वाचक हो जाते हैं, उन प्रत्ययों को 'कृत्प्रत्यय' कहते हैं और जिन शब्दों में प्रत्यय आये हों, उन शब्दों को **कृदन्त** शब्द कहते हैं।

कृत प्रत्यय बहुत से हैं उन में से कुछ मुख्य ये हैं :—
शतृ (अत्), शानच् (आन), तव्य, य, अनीय, क्त (त),

क्त्वा (त्वा), तुमन (तुम)।

शतृ (अत्) प्रत्यय परस्मैपदी धातुओं से और शानच (आन) आत्मनेपदी धातुओं से ही आते हैं। इन दोनों के आने पर धातु और प्रत्यय के मध्य में गण चिह्न (विकरण) भी आ जाता है। इनके कुछ रूप यह हैं :—

भू (भव्)+अ+अत्=भवत रूपः - भवान्, भवन्तौ, भवन्तः इत्यादि

पठ्+अ+अत्=पठत्, रूप :—पठन्, पठन्तौ, पठन्तः इत्यादि।

गम् (गच्छ)+अ+अत्=गच्छत्, रूप :—गच्छन्, गच्छन्तौ, गच्छन्तः इत्यादि

स्मृ (स्मर)+अ+अत्=स्मरत्, रूप :—स्वरन्, स्मरन्तौ, स्मरन्तः इत्यादि

कथ्+अ+अय+अत्=अथयत्, रूप :—कथयन्, कथयन्तौ, कथयन्तः इत्यादि

शानच् के रूप

पच्+अ+आन=पचमान, रूप :—पचमानः, पचमानौ, पचमाना। इत्यादि।

लभ्+अ+आन=लभमान, रूप :— लभमानः लभमानौ, लभमानः इत्यादि।

स्मर्तव्य—शानच् आने पर अकार या अकारान्त विकरण और आन के मध्य में और म् आ जाता है जैसे 'लभमान' इस में।

विधिकृदन्त

तव्य, य और अनीयर्

ये तीनों प्रत्यय विधिलिङ्ग के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं

और तीनों का प्रायः 'चाहिए' अर्थ हो जाता है और तव्य से पहिले कई धातुओं में 'इ' भी लग जाती है। तीनों के रूप—

पठ्+इ+तव्य=पठितव्य	रूप :—	पठितव्यः	(पुं)	पठितव्यम्	(नपुं)
पठ्+य=पाठ्य	,,	पाठ्यः	,,	पाठ्यम्	,,
पठ्+अनीय्=पठनीय	,,	पठनीयः	,,	पठनीयम्	,,

इसी प्रकार—गन्तव्य, गमनीय, गम्य, वदितव्य, वदनीय, वाद्य, पक्तव्य, पाच्य, पचनीय, आदि रूप होंगे। स्त्रीलिङ्ग में एक और अ अन्त पर जोड़ा जाता है और पठितव्या, पठनीया, पाठ्या आदि रूप बन जाते हैं।

उदाहरण

१. रामेण पाठः पठितव्यः (राम को पाठ पढ़ना चाहिए)

२. देवदत्तेन दिल्लीं प्रति गन्तव्यम् (देवदत्त को दिल्ली जाना चाहिए)

या

देवदत्तेन दिल्ली गन्तव्या

इन के रूप द्वितीया आदि विभक्तियों में नहीं होते केवल प्रथमा में होते हैं।

क्त प्रत्यय

'क्त' का 'त' बनता है, इस का भूतकाल अर्थ होता है।

इस का प्रयोग क्रिया के तौर पर तथा विशेषण के तौर पर दोनों तरह से होता है। जैसे—

१. मोहनः गतः (मोहन गया) क्रिया के तौर पर।
२. गतं रामं प्रत्यावर्त्तय (गए हुए राम को लौटा लाओ)।

कुछ क्त प्रत्ययान्त रूप

भू+त=भूत, (रूप) भूतः (पुं०) भूता (स्त्री०) भूतम् (नपुं०)
गम्+त=गत, (रूप) गतः (पु०) गता (स्त्री०) गतम् (नपुं०)

इसी प्रकार ज्ञात, नीत, श्रुत, स्तुत, जित, पठित, कथित, कुपित, मृत, जीवित, हृत,, याचित, भक्षित, रक्षित, स्मृत, उक्त, इष्ट आदि क्तान्त शब्द हैं। इन के रूप सभी विभक्तियों में बनते हैं, इन का प्रयोग विशेषण के अनुरूप हो सकता है।

क्तवा और तुमुन् के रूप

१. श्री प्रकाशः पठित्वा सुप्तः। (श्री प्रकाश पढ़ कर सो गया)
२. विमला पठितुं गच्छति (विमला पढ़ने के लिए जाती है)

पहले वाक्य में 'पठित्वा' यह क्त्वा प्रत्ययान्त है। इस का अर्थ 'पढ़ कर' है, इस प्रकार क्त्वा प्रत्ययान्त शब्द पूर्व काल की क्रिया को कहते हैं।

दूसरे वाक्य में 'पठितुं' यह तुमुन् प्रत्यान्त है। इस का अर्थ पढ़ने के लिए है। यह आगे होने वाली (उत्तर कालिक) क्रिया को कहता है। अतः यदि पहले कोई एक क्रिया करके

दूसरी क्रिया करनी हो तो वहां पूर्व काल की क्रिया के वाचक धातु से क्त्वा प्रत्यय आता है और इस का अर्थ करके होता है।

यदि आगे करने वाली क्रिया के लिए पहले कोई क्रिया की जा रही हो तो उत्तर काल की क्रिया के वाच्य धातु से तुमुन् प्रत्यय आता है और इस का अर्थ 'के लिये' होता है। उदाहरण—

क्त्वा प्रत्ययान्त	तुमुन् प्रत्ययान्त
कृत्वा (करके)	कर्तुम् (करने के लिए)
भुक्त्वा (खा कर)	भोक्तुम (खाने के लिए)
पठित्वा (पढ़ कर)	पठितुम् (पढ़ने के लिए)
गत्वा (जा कर)	गन्तुम् (जाने के लिए)
हत्वा (मार कर)	हन्तुम् (मारने के लिये)
जित्वा (जीत कर)	जेतुम् (जीतने के लिये)

स्मर्तव्य—धातु के पूर्व उपसर्ग आ जाने पर क्त्वा को य हो जाता है। जैसे—

हन्+त्वा=हत्वा	नि+हन्+त्वा=निहत्य	(मार कर)
नम्+त्वा=नत्वा	प्र+नम्+त्वा=प्रणम्य	(प्रणाम करके)
गम्+त्वा=गत्वा	आ+गम्+त्वा=आगत्य	(आ कर)
पठ्+त्वा=पठित्वा	प्र+पठ्+त्वा=प्रपठ्य	(पढ़ करके)

अभ्यास

(१) इन शब्दों के अर्थ बताइए :—

भोक्तुम, प्रणम्य, दृष्टः, गन्तव्यम्, पठित्वा, मृतः, लब्ध्वा,

भक्षयितुम् चोरयितुम्, प्राप्तुम, लभमानः, दत्वा, गमनीयम्, वमानः, ददत, गतः पठित्वा, हन्तुम् पश्यन्, सुप्तः, नयत्, त्वा, आगत्य।

(२) शुद्ध कीजिए :—

पठमानः, लभन्, नयितुम, लभित्वा, भुज्य, ताडमानः, यन्।

(३) रूप बताइये :—

गम्+तुमुन्, सेव+त्वा, विभज+य, एन्+क्त्, आ+ +य, त्यज+तुमुन्, पठ्+तव्य, शय्+अनीय, कृ+क्त।

तद्धित

जिस प्रकार भाषा में लखनऊ के रहने वाले को लखनवी, इलाहाबाद के रहने वाले को 'इलाहबादी' कहा जाता है और ये 'लखनवी' और 'इलाहाबादी' दोनों शब्द 'लखनऊ' और इलाहाबाद' से ही बन गए हैं। मूल शब्द 'लखनऊ' तथा 'इलाहाबाद' व्यक्ति वाचक संज्ञाय हैं, परन्तु इस से बने 'लखनवो' इलाहाबादी' शब्द व्यक्ति वाचक संज्ञा न रह कर विशेषण वाचक अर्थात् जो भी लखनऊ या इलाहाबाद में रहे, सभी के विशेषण बन गए हैं। इसो प्रकार संस्कृत भाषा में भो व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्दों से कई ऐसे विशेषण-वाचक शब्द बन जाते हैं; जो फिर किसी खास व्यक्ति का नाम न रह कर उस तरह की बहुत सी व्यक्तियों के विशेषण हो जाते हैं। ऐसे शब्दों को **'तद्धितान्त'** कहते हैं, तथा संज्ञा शब्दों को विशेषण शब्द बनाने के लिए संज्ञा शब्दों के बाद जो प्रत्यय आते हैं, उन प्रत्ययों को **'तद्धित प्रत्यय'** कहा जाता है। वे प्रत्यय भी तद्धित ही कहलाते हैं जिन से एक संज्ञा शब्द से दूसरा संज्ञा शब्द बनता है और जिन से विशेषण शब्द से भाववाचक संज्ञा शब्द बनता है, तथा जिन से क्रिया विशेषण शब्द बनता है। जैसे—

मूल शब्द	तद्धित प्रत्यय	तद्धित शब्द	अर्थ
धन	मत्	* धनवान्	धन वाला
बुद्धि	मत्	बुद्धिमान्	बुद्धिवाला
तेजस	विन्	तेजस्वी	तेज वाला
मेधा	विन्	मेधावी	बुद्धि वाला
मालव	ईय	मालवीयः	मालवे का रहने वाला
धन	इन्	धनी	धन वाला
धन	इक	धनिकः	धन वाला
काल	इक	† कालिकः	समय में होने वाला
मनस्	इक	मानसिक	मन सम्बन्धी
शरीर	अक	शारीरिकम्	शरीर सम्बन्धी
पुरस्	त्यक्	‡ पौरस्त्यम्	पूर्व का (की)
पश्चात्	त्यक्	पाश्चात्यम्	पश्चिम का (की)
वसिष्ठ	अण्	वासिष्ठः	वसिष्ठ के कुल का (की)

* ह्रस्व अकारान्त शब्दों से परे मत् के 'म' को 'व' हो जाता है।

† कालिक की बजाय कालीन शब्द संस्कृत में अशुद्ध हो जाता है।

‡ पुरस्त्य अशुद्ध है, पौरस्त्य ही ठीक है।

मूल शब्द	तद्धित प्रत्यय	तद्धित शब्द	अर्थ
वसुदेव	अण्	वासुदेवः	वासुदेव का लड़का (कृष्ण)
रघु	अण्	राघवः	रघु के कुल का (राम)
ग्राम	ईन	ग्रामीणः	गांव का (को)
कुल	ईन	कुलीनः	अच्छे कुल का (की)
सर्व	दा	सर्वदा	हमेशा
सर्व	त्र	सर्वत्र	सब जगह

इसी प्रकार—शैवः, पार्वती, कैकेयी, दशरथि, भागीरथी, लोमशः, कौरव्यः, पण्डितः, फलितः, प्रामाणिका, सौवर्णम्, माधुर्यम्, लाघवम्, लघुता, गरिमा, गौरवम्, गुरुत्वम्, आदि अनेक प्रकार के तद्धित प्रत्ययान्त शब्द हैं।

लिंग परिवर्तन

बाल: पठति (बालक पढ़ता है) बाला नृत्यति (लड़की नाचती है।) इन ऊपर लिखे दो वाक्यों में एक ही 'बाल' शब्द दो बार आया है। पहले वाक्य में वह पुंल्लिग में है और दूसरे वाक्य में वह स्त्री लिंग (लड़की) को कहता है। बाल शब्द को स्त्री लिंग करने के लिये उसके अन्त में ह्रस्व 'अ' की बजाय दीर्घ 'आ' लगा दिया गया है। इसी प्रकार श्रीमत् शब्द का पुंल्लिग में श्रीमान् बनता है और स्त्रीलिंग में उस में 'ई' लगाने से श्रीमती हो जाता है। इस तरह बहुत से शब्दों को पुंल्लिग से स्त्रीलिंग बनाने के लिए कहीं २ 'अ' कहीं २ (ई) कहीं २ 'ण' और कहीं 'ति' आदि लगता है। नीचे कुछ पुंल्लिग स्त्रीलिंग में परिवर्तित शब्दों का परिचय कराया जाता है।

ंल्लिग	स्त्रीलिंग	अर्थ
ूक:	मूषिका	चुहिया
श्व:	अश्वा	घोड़ी
चक:	पाचिका	पकाने वाली
ज:	अजा	बकरी
लक:	बालिका	लड़की
र:	गौरी	गोरे रंग की

पुंल्लिग	स्त्रीलिंग	अर्थ
विद्वान्	विदुषी	पण्डिता (स्त्री)
श्रीमान्	श्रीमती	अच्छी (स्त्री)
कुमारः	कुमारी	कुंवारी
जरन्	जरती	बुढ़िया
पतिः	पत्नी	भार्या
मानुषः	मानुषी	मनुष्य स्त्री
स्वामी	स्वामिनी	मालकिन
राजा	राज्ञी	रानी
आचार्य	अचार्या	गुरु की स्त्री
मातुलः	मातुलानी	मामी
क्षत्रियः	क्षत्रियाणी	क्षत्रिय की स्त्री
श्वशुरः	श्वश्रूः	सास
युवा	युवती	जवान स्त्री
धनवान्	धनवती	धनी स्त्री
शूद्रः	शूद्रा	शूद्र स्त्री
ब्राह्मणः	ब्राह्मणी	ब्राह्मण स्त्री
तरुणः	तरुणी	जवान स्त्री
आचार्यः	आचार्या	पढ़ाने वाली
कामुकः	कामुकी	चाहने वाली
मनोहरः	मनोहरा	मन को लुभाने वाली

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

पण्डित स्त्री के लिये, रानी से, जवान औरत को, कुमारी (कन्या) ने, सास का धन, वृद्धा और बुढ़िया, घोड़ी के लिये घास।

(२) स्त्रीलिंग में बदल दीजिए :—

बालकः, मनुष्यः, आचार्यः, शूद्रः, धनवान्, विद्वान्, पतिः, मातुलः, राजा, पाचकः, युवा, कामुकः।

कारक

प्रायः प्रत्येक वाक्य में कोई न कोई 'क्रिया' शब्द पाया ही जाता है और वाक्य में आये हुए दूसरे (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि) शब्दों के साथ कोई न कोई सम्बन्ध अवश्य रहता है । इस सम्बन्ध को व्याकरण की भाषा में **'कारक'** कहते हैं और इसे 'विभक्तियों द्वारा प्रकट किया जाता है। विभक्तियां तो **आठ** हैं, पर कारक **सात** ही हैं। क्योंकि सम्बोधन' में क्रिया का सम्बन्ध नहीं रहता ।

यहां पर इन सात कारकों के कुछ विशेष 'प्रयोगों के रूप' ही दिये जायेंगे ताकि शुद्ध अनुवाद करने में सहायता हो सके। उदाहरण के लिये एक वाक्य लीजिए—'वह (मित्र के) साथ खेलता है'। इस का अनुवाद (मित्रस्य) सह क्रीडति' नहीं होगा' '(मित्रेण) सह क्रीडति' होगा । इस प्रकार—

१. **कर्त्ता** कारक—'करने वाले' को जतलाता है और 'प्रथमा विभक्ति' में आता है। जैसे—'बालः पठति' में (वालः) शब्द का ।

२. **कर्म**—(क) क्रिया-व्यापार का फल जतलाता है और प्रायः 'द्वितीया' विभक्ति में आता है । जैसे—'बालः (पुस्तकम्) पठति' में 'पुस्तकम्' शब्द कर्म, परन्तु जब क्रिया कर्मवाच्य या भाववाच्य में आये, तो

'कर्म' प्रथमा विभक्ति में आता है जैसे – 'बालेन्' (कथा) श्रूयते में 'कथा' शब्द का ।

(ख) गति—अर्थ वाली धातुओं के साथ प्राप्त स्थान को जतलाने वाले शब्दों के लिए । जैसे—'छात्रः विद्यालयम् गच्छति' में विद्यालयम् शब्द का । ऐसे ही—'सेवकः गृहं प्रविशति' भिक्षुकः ग्राम प्राप्नोति', में भी ।

(ग) प्रच्छ, याच, ब्रू, नी, हृ, पच्, वह् आदि धातुओं के साथ दो-दो कर्म आते हैं । जैसे – पिता (मां प्रश्नं) पृच्छति, 'भिक्षुकः (प्रभुं धनं) याचते' । '(पुस्तकम् गृहम्) नय' '(कथां तं) ब्रूहि' सूदः (तण्डुलान् ओदनं) पचति, आदि में ।

(घ) प्रति, अन्तरेण, अभितः, परितः, सर्वतः, अन्तरा, धिक आदि के साथ ।

जैसे – 'स (नदीं) प्रति गतः' । 'मम (गृहम्) अभितः वृक्षाः तिष्ठन्ति' । (तं बालम् अन्तरेण पृच्छामि ।' धिक् (तं मूर्खम्)' में ।

३. **करण** :—कर्त्ता 'करण' के द्वारा क्रिया को सिद्ध करता है । अतः करण में तृतीया आती है । कर्मवाच्य या भाववाच्य में कर्ता के साथ भी 'तृतीया' ही विभक्ति आती है ।

इस के अतिरिक्त—

(क) सह, समम्, विना और इनके समान अर्थ वाले शब्दों के साथ। जैसे—'(मया) सह क्रीडति', '(तेन) साकं गच्छामि', (त्वया) विना' में।

(ख) सम, तुल्य, युक्त, हीन, शून्य और पूर्वम् के साथ। जैसे—(परोपकारेण) समो न धर्मः, स (केन) तुल्यः, '(सुखेन) शून्यम् गृहम्', '(धर्मेण) हीनः पुरुषः' '(मासेन) पुर्वम् कृतवान्' में।

(ग) क्री धातु के साथ। जैसे—(शतेन) क्रीता 'गौ' में।

(घ) कार्यम्, अर्थः, प्रयोजनम्, किम, अलम् और कृतम् के साथ। जैसे—'(अनेन) (पुस्तकेन) किं कार्यम्' '(मूर्खेण) (पुत्रेण) कोऽर्थः में और ऐसे ही—किम् (तेन) (मूर्खेण)' 'अलम् (तेन) (मूर्खेण)' कृतम् (तेन) (मूर्खेण)' में।

४. **सम्प्रदान**—जिस के लिए क्रिया की जाय, या जिसे कुछ दिया जाय, उस के लिये चतुर्थी विभक्ति आती है। जैसे—'स उद्यानं (फलेभ्यः) गच्छति', '(बालाय) पुस्तकं प्रयच्छति' में। इस के अतिरिक्त—

(क) नमः, स्वस्ति, स्वाहा और हितम् के साथ। जैसे—'(तस्मै) नमः', '(प्रजाभ्यः) स्वस्ति', 'अग्नये स्वाहा' '(लोकाय) हितम्' में।

(ख) रुच् धातु के साथ। जैसे—'(मह्यम्)' तद्

न रोचते' में।

(ग) क्रुध, ईर्ष्य आदि धातुओं के साथ। जैसे—'अध्यापकः (छात्राय) क्रुध्यति', 'दुष्टः (मित्राय) ईर्ष्यति' में।

(घ) घृ, कथ्, निविद, उप-दिश् आदि धातुओं के साथ जैसे—'(मह्यम्) पञ्च रूप्काणि धारयसि', सर्व वृत्तं (तस्मै) कथय' 'गुरुः (शिष्याय) धर्मम् उपदिशति', '(आचार्याय) निवेदय एतत्' में।

(ङ) अलम्, प्रभु, समर्थ, शक्ति आदि के साथ। जैसे—मोहनः (चौराय) अलम, प्रभुः समर्थः, शक्तः, या में।

५. **अपादान**—किसी स्थान, वस्तु या पुरुष से वियोग को जतलाने के लिए 'पंचमी' विभक्ति आती है। जैसे—'(वृक्षात) पत्रम् पतति', '(नगराद) आगच्छति, में। इसी तरह—

(क) पृथक, भिन्न, अतिरिक्त, बिना, पर, बहिः, आरभ्य, प्रभृति, आदि के साथ। जैसे—'सर्वेभ्यः पृथक्,' '(तस्माद्) भिन्नम्', '(कार्याद्) विना', '(परोपकारात्) तु परो न धर्मः', '(ग्रामद्) बहिः,' तद् दिनाद् आरभ्य' 'रविवारात् प्रभृति,' में।

(ख) तुलनात्मक विशेषण के साथ। जैसे—अयं बालः (तस्माद् बालात्) चतुरतरः'। इदं पुस्तकम्, (तस्मात्

पुस्तकाद् रोचकतरम्' में ।

(ग) जन्, भी, रक्ष्, वारय आदि धातुओं के साथ। जैसे—'(पंकात्) कमलं जायते,' '(बीजाद्) वृक्षः प्रोहति'. पुस्तकं (तैलाद्) रक्ष', (सर्पाद्) भीतः मनुष्यः' में।

६. **सम्बन्ध**—'षष्ठी' विभक्ति में आता है। जैसे—(छात्रस्य) पुस्तकम्' '(तव) पूज्यः' '(परस्य) उपदिशति', इसके अतिरिक्त—

(क) तुलना में 'उत्तम' के साथ में । जैसे—स (सर्वेषां) श्रेष्ठः, में।

७. **अधिकरण**—वह आधार जिस पर कर्त्ता कोई क्रिया करे, 'सप्तमी' विभक्ति में आता है । जैसे—'(गृहे) तिष्ठति', '(पीठे) उपविशति'। इसके अतिरिक्त—

(क) विश्वस, स्निह, व्यवहृ, आदि धातुओं के साथ। जैसे—'मम (त्वयि) न विश्वासः', 'माता (पुत्रे) स्निह्यति', 'सर्वेषु सादरम् व्यवहरामि'।

(ख) उत्तम, बोधक विशेषणों के साथ । जैसे– स सर्वेषु श्रेष्ठः, इदम् (तेषु) पुस्तकेषु सुन्दरतमम्'

(ग) प्रवीण, कुशल, चतुर, दक्ष आदि के साथ। जैसे— 'त्वं (संस्कृते) प्रवीणः' । 'तद् मित्रम् (संगीत-विद्यायां) शकुलम्,' 'स (गणिते) चतुरः' में।

इस प्रकार इन कारकों को समझ कर ही अनुवाद करने में हम कई भयंकर भूलों से बच सकते हैं।

अध्यापक को चाहिए कि विभक्तियों के प्रयोगों का अभ्यास विस्तारपूर्वक छात्रों को समझाए और अभ्यास करवाए। पुस्तक में यह विषय ज़रा संक्षेप से ही कहा गया है।

अभ्यास

१. शुद्ध कीजिए :—

पुत्रस्य सह पिता दिल्ली गच्छति । छात्रं पारितोषिकं देहि । नगरेण ग्रामः क्रोशे । खगेभ्यः वायसः धूर्तः धनस्य बिना न सुखम् । नगरस्य अहं निवसामि ।

२. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

गाय से दूध दोहता है। सोहन पैर से लंगड़ा है। प्रजाओं को स्वस्ति। इन्द्र को स्वाहा । स्त्री चोर से डरती है। यह ग्राम उस ग्राम से अधिक सुन्दर है। वर्णों में ब्राह्मण श्रेष्ठ होता है।

